CMYK

अधिकतम :23°C
न्यूनतम: 07°C
सेंसेक्स 75,311.06
निफ्टी 22,795.90
सोना 89,140
चांदी 100,500

खबरें छुपाता नहीं, छापता है

# शाह टाइम्स

हल्द्वानी, शनिवार 22 फरवरी 2025 हल्द्वानी संस्करण: वर्ष 22 अंक 184 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

www.shahtimesnews.com

विस्तृत खबरों के लिए QR कोड स्कैन करें। मुफ्त पढ़ें E-paper

shahtimes2015@gmail.com माघ फाल्गुन पक्ष 8 विक्रमी सम्वत् 2081 23 शाबान 1446 हिजरी नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित



## गुजराती काश पटेल बने अमेरिकी एजेंसी एफबीआई के डायरेक्टर

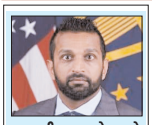

विस्तृत खबर देश-विदेश पर



## कोहली ने की कैच पकड़ने में अजहर के रिकॉर्ड की बराबरी

विस्तृत खबर खेल टाइम्स पर

### उत्तराखंड में नया भू-कानून बजट सत्र में हुआ पारित

# नया भू-कानून राज्य में भू सुधार के लिए प्रयास : धामी

शाह टाइम्स ब्यूरो



**देहरादून।** उत्तराखंड विधानसभा के बजट सत्र में शुक्रवार को नया भू-कानून बिल पास कर दिया गया है।

नए भू-कानून पर चर्चा के दौरान शुक्रवार को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सदन को संबोधित किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों और डेमोग्राफिक स्थिति, अवैध कब्जों और भू माफियाओं पर अंकुश की आवश्यकता को देखते हुए सशक्त भू कानून लाया जा रहा है। राज्य में लाए जा रहे नए भू कानून को लेकर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा है कि ये भू कानून एक प्रकार से भू सुधार है और भू प्रबंधन है। ये कोई अंत नहीं है, बल्कि ये शुरुआत है। हम लोकतांत्रिक मूल्यों पर विश्वास रखने वाले लोग हैं। प्रदेश के बाहर के लोगों द्वारा विभिन्न उद्योगों के नाम पर और स्थानीय लोगों को रोजगार देने के नाम पर अन्य प्रयोजनों के लिए जमीन का उपयोग किया जा रहा था। अब सशक्त भू कानून के बाद ऐसे लोगों को सफलता नहीं मिल पाएगी। राज्य बनने के बाद औद्योगिक निवेश और विकास के लिए पैकेज भी दिया गया, जिसके तहत उद्योगों का विकास हुआ इसलिए हम ये भी चाहते हैं कि औद्योगिक विकास भी न रुके और साथ ही राज्य की भूमि का सदुपयोग भी हो। इसके लिए भू-कानून में भू प्रबंधन का ध्यान रखा गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में 3461.77 एकड़ वन भूमि को कब्जा हटाने का काम हुआ है। राज्य के -शेष पृष्ठ दो पर

- राज्य की भूमि को भू माफियाओं से बचाने और दुरुपयोग रोकने की कोशिश
- राज्य में अलग-अलग जिलों की परिस्थितियां भी भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं

# 2029 तक यूपी बनेगा एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था: सीएम योगी

शाह टाइम्स ब्यूरो

**लखनऊ।** मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दावा किया है कि वर्ष 2029 तक उत्तर प्रदेश एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के अपने लक्ष्य को हासिल कर लेगा।

श्री योगी ने विधानसभा के बजट सत्र के चौथे दिन राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान सपा सदस्य रागिनी सोनकर के एक सवाल के जवाब में कहा कि उत्तर प्रदेश देश की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में तेजी से अग्रसर है। उन्होंने कहा कि जब उनकी सरकार आई थी, तब राज्य की अर्थव्यवस्था 12 लाख करोड़ रुपये थी, जो इस वित्तीय वर्ष के अंत तक 27.5 लाख करोड़ रुपये हो जाएगी। प्रदेश सरकार 2029 तक उत्तर प्रदेश को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने विपक्ष पर तंज कसते हुए कहा कि जो लोग भारत को विकसित राष्ट्र नहीं मानते, वे उत्तर प्रदेश की आर्थिक वृद्धि पर भी सवाल उठाते हैं, भारत आज दुनिया की एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में आगे बढ़ रहा है।

- राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा के दौरान सपा सदस्य रागिनी के एक सवाल के जवाब में मुख्यमंत्री का दावा



## एक करोड़ की ड्रग्स के साथ लेडी डॉन जोया अरेस्ट

**नई दिल्ली।** दिल्ली पुलिस ने गैंगस्टर हाशिम बाबा की तीसरी पत्नी जोया खान को 270 ग्राम ड्रग्स के साथ गिरफ्तार किया, जिसकी कीमत अंतर्राष्ट्रीय बाजार में करीब एक करोड़ रुपये है। जोया को पुलिस ने 20 फरवरी को नॉर्थ ईस्ट दिल्ली के वेलकम इलाके से गिरफ्तार किया। जोया खान का नाम लंबे समय से पुलिस की निगरानी लिस्ट में था, लेकिन वह हर बार बच निकलती थी। 33 साल की जोया को अपने पति के गैंग को संभालने और कानून से बचने में माहिर माना जाता था। पुलिस को लंबे वक्त से शक था कि वह अपराधों में शामिल है, लेकिन पुख्ता सबूत न मिलने के कारण अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो पाई थी। इस बार दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया। हाशिम बाबा पर हत्या उगाही और हथियार तस्करी के दर्जनों मामले दर्ज हैं।

## नई दिल्ली स्टेशन पर भगदड़ के वीडियो हटाने के निर्देश

**नई दिल्ली।** नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर 15 फरवरी को हुई भगदड़ में 18 लोगों की मौत हो गई थी। मामले में अब तक जांच रिपोर्ट नहीं आई है, लेकिन रेलवे ने एक फरमान जरूर जारी किया है। एक रिपोर्ट के अनुसार रेल मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स को नोटिस जारी कर 288 वीडियोज लिंक हटाने का निर्देश दिया है। मंत्रालय ने 17 फरवरी को यह नोटिस भेजा था और एक्स को 36 घंटे में घटना से जुड़े सभी वीडियो लिंक हटाने का निर्देश दिया था।

## सोनिया गांधी को मिली अस्पताल से छुट्टी

**नई दिल्ली।** कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष तथा पार्टी की राज्यसभा सांसद सोनिया गांधी को एक दिन तक डॉक्टरों की देख रेख में रखने के बाद शुक्रवार को यहां गंगाराम अस्पताल से छुट्टी मिल गई। श्रीमती गांधी को गुरुवार सुबह पेट दर्द के बाद यहां सर गंगा राम अस्पताल से नियमित चेकिंग के लिए ले जाया गया, जहां पेट से जुड़ी समस्या के कारण उन्हें भर्ती कराया गया। सूत्रों के अनुसार श्रीमती गांधी की गुरुवार सुबह नियमित जांच की गई, लेकिन पेट में मामूली संक्रमण होने के कारण डॉक्टरों ने उन्हें अस्पताल में भर्ती कर दिया और शुक्रवार सुबह छुट्टी दे दी गई।

## सज्जन कुमार की सजा पर फैसला सुरक्षित

**नई दिल्ली।** दिल्ली में 1984 सिख विरोधी दंगा मामले में कोर्ट ने कांग्रेस के पूर्व सांसद सज्जन कुमार के खिलाफ सजा पर फैसला सुरक्षित रख लिया है। पीड़ित पक्ष ने सज्जन कुमार के लिए मौत की सजा की मांग की है। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने 12 फरवरी को सज्जन कुमार को दोषी ठहराया था। उन पर 1984 में दंगों के दौरान सरस्वती विहार में जसवंत सिंह और उसके बेटे तरुणदीप सिंह की हत्या का दोषी पाया।

# विकसित भारत के लिए सर्वश्रेष्ठ नेतृत्व जरूरी

### पीएम ने भारत मंडपम में 'सोल' लीडरशिप कॉन्क्लेव के पहले संस्करण का किया उद्घाटन

शाह टाइम्स ब्यूरो

**नई दिल्ली।** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि 21वीं सदी के 'विकसित भारत' के लिए देश के हर सेक्टर में, हर वर्टिकल में, जीवन के हर पहलू में दिन-रात काम करने के लिए उत्तम से उत्तम नेतृत्व की जरूरत है, जो वैश्विक सोच और स्थानीय विकास के विचार पर चले। पीएम मोदी ने शुक्रवार को यहां भारत मंडपम में स्कूल ऑफ अल्टीमेट लीडरशिप (सोल) लीडरशिप कॉन्क्लेव के पहले संस्करण का उद्घाटन किया। उनके साथ भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग तोबगे भी मौजूद थे।

> कहा राष्ट्र निर्माण के लिए नागरिकों का विकास जरूरी है, व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण

पीएम मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि कुछ आयोजन ऐसे होते हैं, तो हृदय के बहुत करीब होते हैं और आज का ये कार्यक्रम सोल लीडरशिप कॉन्क्लेव भी ऐसा ही आयोजन है। राष्ट्र निर्माण के लिए नागरिकों का विकास जरूरी है, व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण। उन्होंने कहा कि यदि जन से जगत तक किसी भी ऊंचाई को प्राप्त करना है, तो आरंभ जन से ही शुरू होता है। हर क्षेत्र में बेहतरीन लीडर्स का विकास बहुत जरूरी है और समय की मांग है। इसलिए सोल की स्थापना 'विकसित भारत' की विकास यात्रा में एक बहुत महत्वपूर्ण और बड़ा कदम है। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद भारत को गुलामी से बाहर निकालकर भारत को परिवर्तित करना चाहते थे और उनका विश्वास था कि अगर सौ लीडर उनके पास हों, तो वह भारत को आजादी ही नहीं, बल्कि दुनिया का नंबर वन देश बना सकते हैं। इसी मंत्र को लेकर हम सबको आगे बढ़ना है। आज हर भारतीय, 21वीं सदी के 'विकसित भारत' के लिए दिन-रात काम कर रहा है। ऐसे में 140 करोड़ के देश में भी हर सेक्टर में, हर वर्टिकल में, जीवन के हर पहलू में हमें उत्तम से उत्तम लीडरशिप की जरूरत है। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के लिए हमारी लड़ाई से बेहतर साझा उद्देश्य का कोई उदाहरण नहीं हो सकता, आज हमें स्वतंत्रता की भावना को पुनर्जीवित करना होगा और इससे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना होगा, यदि आप स्वयं को विकसित करते हैं, तो आप व्यक्तिगत सफलता का अनुभव कर सकते हैं। यदि आप एक टीम विकसित करते हैं, तो आपका संगठन विकास का अनुभव कर सकता है और यदि आप नेताओं को विकसित करते हैं, तो आपका संगठन बहुत तेजगति से प्रभावी विकास कर सकता है।



## भागलपुर से किसान सम्मान निधि का वितरण करेंगे मोदी

**नई दिल्ली।** केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शुक्रवार को कहा कि बिहार के भागलपुर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को किसान सम्मान निधि की 19वीं किस्त जारी कर 22000 करोड़ रुपये की राशि का वितरण करेंगे। श्री चौहान ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी देते हुए बताया कि भागलपुर में 24 फरवरी को देशव्यापी किसान सम्मान समारोह आयोजित होगा। प्रधानमंत्री मोदी मुख्य अतिथि होंगे। श्री चौहान ने कहा कि किसान सम्मान निधि की 19वीं किस्त में 22,000 करोड़ रुपये से अधिक राशि किसानों को सीधे उनके बैंक खाते में भेजी जाएगी।

# सुप्रीम कोर्ट ने अब्बास अंसारी मामले में आदेश वापस लिया

शाह टाइम्स ब्यूरो

**नई दिल्ली।** सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को अपना एक आदेश वापस ले लिया, जिसमें पुलिस से गैंगस्टर एक्ट के तहत एक मामले में विधायक अब्बास अंसारी के खिलाफ जांच 10 दिनों के भीतर पूरी करने को कहा गया था।

कोर्ट ने इसकी बजाय यह जानना चाहा कि क्या उनके खिलाफ कोई जांच लंबित है? जस्टिस सूर्यकांत और न्यायमूर्ति एन. कोटिश्वर सिंह की पीठ ने मामले की अगली सुनवाई 6 मार्च को तय की। आदेश वापस लेने का वाकया तब हुआ, जब अब्बास अंसारी की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने कहा कि जांच पूरी हो चुकी है और यूपी गैंगस्टर एक्ट के तहत दर्ज मामले में आरोपपत्र दाखिल किया जा चुका है। उन्होंने कहा कि राज्य ने मामले में गलत हलफनामा दाखिल किया है और अब्बास अंसारी के खिलाफ कुछ भी लंबित नहीं है। यूपी सरकार की ओर से पेश हुए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल केएम नटराज ने कहा कि उन्हें मामले पर और स्पष्टीकरण की जरूरत है। इससे पहले सुप्रीम कोर्ट ने उत्तर प्रदेश पुलिस को गैंगस्टर अधिनियम के तहत विधायक अब्बास अंसारी के खिलाफ एक मामले में 10 दिनों के अंदर जांच पूरी करने का निर्देश दिया था।

> पुलिस से पूछा- क्या उनके खिलाफ कोई जांच लंबित है



## छत्तीसगढ़ को सुप्रीम कोर्ट का नोटिस

**नई दिल्ली।** उच्चतम न्यायालय ने नागरिक पूर्ति निगम (एनएएन) घोटाले में पूर्व महाधिवक्ता सतीश चंद्र वर्मा की अग्रिम जमानत की मांग वाली उनकी याचिका पर शुक्रवार को छत्तीसगढ़ सरकार को नोटिस जारी किया। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने छत्तीसगढ़ सरकार के अधिवक्ता का यह बयान दर्ज किया कि अदालत के अगले आदेश तक उनके खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई नहीं की जाएगी।

# दिल्ली सीएम रेखा गुप्ता एक्शन मोड में, लिए 5 बड़े फैसले

**नई दिल्ली।** दिल्ली में मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के एक दिन बाद रेखा गुप्ता ने पूर्व सीएम आतिशी और उनके मंत्रियों के पर्सनल स्टाफ को हटा दिया है।

इसके अलावा आतिशी सरकार ने जिन अधिकारियों के कर्मचारियों को दूसरी जगह -शेष पृष्ठ दो पर

1. आतिशी व पूर्व मंत्रियों का पर्सनल स्टाफ हटाया
2. मोहल्ला क्लीनिकों की होगी जांच
3. दिल्ली में लागू होगी आयुष्मान भारत योजना
4. कैग की रिपोर्ट होगी पेश
5. महिलाओं के लिए फ्री बस सेवा जारी रहेगी

**अरविंदर लवली प्रोटेम स्पीकर होंगे**

# बिना वीजा के रह रहे दो बांग्लादेशी नागरिकों के खिलाफ हुई कार्रवाई

शाह टाइम्स ब्यूरो

**देहरादून।** उत्तराखंड विधानसभा में बजट सत्र के दौरान विधायक आदेश चौहान के एक सवाल के जवाब में सदन में गृह मंत्री की ओर से अवगत कराया गया कि हरिद्वार में समय-समय पर सत्यापन किया जा रहा है, जिसके तहत वर्ष 2024 में पश्चिम बंगाल के 159, असम के 317, उत्तर प्रदेश के 1735 व अन्य राज्यों के 1576 व्यक्तियों और वर्ष 2025 में वर्तमान तक पश्चिम बंगाल का एक, उत्तर प्रदेश के 558 व अन्य राज्यों के 205 व्यक्तियों का सत्यापन किया गया।

वहीं, वर्ष 2022 में 87017, वर्ष 2023 में 121461, वर्ष 2024 में 77106 व जनवरी 2025 से 13 फरवरी तक 11626 बाहरी व्यक्तियों का सत्यापन किया गया है। बाहरी व्यक्तियों के सत्यापन की कार्रवाई नियमित रूप से प्रचलित है। समस्त थाना प्रभारी व स्थानीय अभिसूचना ईकाई को बाहरी व्यक्तियों के विरुद्ध सत्यापन की कार्रवाई करते हुए संदिग्ध पाए जाने पर नियमानुसार विधिक कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। उत्तर प्रदेश एवं अन्य राज्यों की सूचना उपलब्ध नहीं है। इसके अलावा वर्ष 2023-24 में हरिद्वार में बिना पासपोर्ट/वीजा के रह रहे दो बांग्लादेशी नागरिकों के विरुद्ध नियमानुसार वैधानिक कार्रवाई कर जेल भेजा गया, जिनमें से एक बांग्लादेशी की सजा पूर्ण होने पर बांग्लादेश वापस भेजा गया।

- 11626 बाहरी व्यक्तियों का हुआ सत्यापन

## भारत-पाक सीजफायर बनाए रखने पर सहमत

**जम्मू।** भारत और पाकिस्तान ने शुक्रवार को जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले के चक्कन-दा-बाग क्रॉसिंग प्वाइंट पर आयोजित ब्रिगेडियर-स्तरीय फ्लैग मीटिंग में सीमा पर शांति के लिए नए सिरे से संघर्ष विराम समझौते का सम्मान करने पर सहमत हुए हैं।

आधिकारिक सूत्रों ने यहां बताया कि हाल ही में सीमा तनाव के मद्देनजर शुक्रवार सुबह भारत और पाकिस्तान के बीच ब्रिगेडियर- स्तरीय फ्लैग मीटिंग हुई। उन्होंने कहा कि बैठक बहुत सौहार्दपूर्ण माहौल में हुई और एक घंटे से अधिक समय तक चली। उन्होंने कहा कि दोनों पक्ष सीमा पर शांतिपूर्ण माहौल के लिए 25 फरवरी, 2021 को नए सिरे से किए गए संघर्ष विराम समझौते का सम्मान करने पर सहमत हुए हैं। इस वर्ष पाकिस्तान की ओर से संघर्ष विराम का कई बार उल्लंघन हुआ है।

حج عمرہ و زیارات
IATA
बिस्मिल्लाह टूर एण्ड ट्रैवल्स (दधेड़ू वाले)
CERTIFIED ISO 9001:2015 COMPANY
हज, उमराह, ज़ियारत
25 अप्रैल 2025 उमरा टूर RS. 75,000/- 20 दिन
फुल रमजान उमरा पैकेज RS.1,20,000/-
मक्का होटल : 650 मीटर जोरत मानसिया और हुसैन मोद्दा सीमीलर
मदीना होटल: 800 मीटर पी0सी0 अल मदीना और अल फिरदौस सीमीलर
डाइरेक्ट फ्लाइट
होटल में रहना, खाना व ज़ियारत
मज़ीद जानकारी व बुकिंग के लिए राब्ता करें।
हाजी आलम - 9756508234
एयर टिकट, टूरिस्ट एण्ड बिजनेस वीज़ा के लिए सम्पर्क करें।
मुजफ्फरनगर ऑफिस: निकट सरवट गेट चौराहा, लताफत अली खान मार्किट, रूड़की रोड, मुजफ्फरनगर 0131-2644200, 7017145399, 8534039577
दिल्ली ऑफिस: 1-एफ, बिल्डिंग सेकण्ड फ्लोर, भरत नगर, न्यू फ्रैन्डस कॉलोनी, नई दिल्ली-110025 011-41251668, 9821106157
E-mail:bismillah786@gmail.com
www.bismillahtourandtravel.com info@bismillahtourandtravels.com

# हमारे आंतरिक मामलों में विदेशी दखल चिंताजनक

शाह टाइम्स ब्यूरो

**नई दिल्ली।** अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारतीय चुनाव में अमेरिकी फंडिंग को लेकर बयान दिया है। इसे लेकर विदेश मंत्रालय ने जवाब दिया है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि हमें अमेरिकी प्रशासन द्वारा कुछ यूएस गतिविधियों और फंडिंग के बारे में जानकारी दी गई।

यह बेहद परेशान करने वाली है। भारत के आंतरिक मामलों में विदेशी दखल चिंताजनक है। उन्होंने कहा कि संबंधित विभाग और एजेंसियां इस मामले की जांच कर रही हैं। इस समय सार्वजनिक टिप्पणी करना जल्दबाजी होगी। अधिकारी इस पर गौर कर रहे हैं और उम्मीद है कि हम बाद में इस पर अपडेट दे पाएंगे। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा था कि हमें भारत में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए 2.1 करोड़ डालर देने की क्या जरूरत है? मुझे लगता है कि वे (बाइडन सरकार) चाहते थे कि चुनाव में किसी और को चुना जाए। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि इस बारे में कि क्या सार्क पर चर्चा हुई या नहीं। जब विदेश मंत्री ने मस्कट में बांग्लादेश के विदेश सलाहकार से मुलाकात की थी, तब यह मामला बांग्लादेश की ओर से विदेश मामलों की बैठक में उठाया गया था। दक्षिण एशिया में हर कोई जानता है कि कौन सा देश और कौन सी गतिविधियां सार्क को बाधित करने के लिए जिम्मेदार हैं। विदेश मंत्री ने कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि बांग्लादेश को आतंकवाद को सामान्य नहीं बनाना चाहिए।

- भारतीय चुनाव में यूएस फंडिंग वाले अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प के बयान पर बोला विदेश मंत्रालय

## चीन के साथ संबंधों में महत्वपूर्ण प्रगति: एस.जयशंकर



**जोहान्सबर्ग/नई दिल्ली।** विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने शुक्रवार को चीन के विदेश मंत्री वांग ई से मुलाकात करके सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति का प्रबंधन, कैलाश मानसरोवर यात्रा, उड़ान कनेक्टिविटी और यात्रा सुविधाओं के बारे में चर्चा की। विदेश मंत्रालय के अनुसार डा. जयशंकर ने जी-20 विदेश मंत्री बैठक से इतर हुई इस बैठक में अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि मुझे खुशी है कि हम शुक्रवार को जोहान्सबर्ग में जी-20 विदेश मंत्रियों की बैठक से इतर मिल सकते हैं। इस तरह की सभाओं ने हमारी बातचीत के लिए एक अवसर प्रदान किया है, तब भी जब हमारे संबंध एक कठिन चरण से गुजर रहे थे। हमें यह भी स्वीकार करना चाहिए कि ध्रुवीकृत वैश्विक स्थिति में, हमारे दोनों देशों ने एक संस्था के रूप में जी 20 को संरक्षित और संरक्षित करने के लिए कड़ी मेहनत की है।

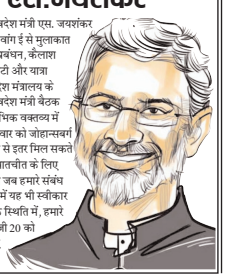

# आशा कार्यकर्ताओं का पारिश्रमिक विडंबना: न्यायमूर्ति रामसुब्रमण्यन

**नई दिल्ली, वार्ता**

- केन्द्र और राज्य सरकारों से समाधान निकालने को कहा

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति वी. रामसुब्रमण्यन ने आशा कार्यकर्ताओं के पारिश्रमिक में सुधार के मुद्दे को एक 'विडम्बना' बताते हुए कहा है कई बार जो सबसे अधिक योगदान करते हैं उन्हें सबसे कम मिलता है। उन्होंने केंद्र और राज्यों से इसका समाधान निकालने को कहा है।

न्यायमूर्ति रामसुब्रमण्यन शुक्रवार को यहां आशा कार्यकर्ताओं के विषय में आयोग द्वारा आयोजित कोर समूह की एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने आशा कार्यकर्ताओं की इस शिकायत का उल्लेख किया कि उनका पारिश्रमिक समाज में उनके योगदान के अनुपात में नहीं है। उन्होंने कहा कि विडंबना यह है कि कई बार जो सबसे अधिक योगदान देते हैं, उन्हें सबसे कम मिलता है, जो हाशिए पर पड़े लोगों की देखभाल करते हैं, वे खुद हाशिए पर चले जाते हैं। उन्होंने आशा कार्यकर्ताओं की कार्य स्थितियों और जीवन स्तर में सुधार के लिए ठोस नीति और कार्यान्वयन योग्य उपाय करने का भी आह्वान किया। आयोग के अध्यक्ष ने देश में स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में सुधार के लिए पिछले 20 वर्षों में आशा कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए उल्लेखनीय योगदान की सराहना की। इसका विषय था मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं (आशाओं) को सशक्त बनाना: सम्मान के साथ काम करने के अधिकार को सुरक्षित करना। उन्होंने जोर देकर कहा कि आशा कार्यकर्ताओं के योगदान से नवजात और शिशु मृत्यु दर में कमी लाने में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। न्यायमूर्ति रामसुब्रमण्यन ने आशा कार्यकर्ताओं की भूमिका की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने दिखाया है कि औपचारिक शिक्षा के बिना भी व्यक्तियों को कुशल श्रमिक बनने के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आज शिक्षित लोगों की संख्या बहुत है, लेकिन कुशल श्रमिकों की संख्या कम हो रही है। आशा योजना के माध्यम से इस अंतर को दूर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक स्वास्थ्य और न्यूनतम मजदूरी तय करना राज्य का विषय है।

## राजनीतिक मतभेद से ऊपर उठें और शिक्षा का राजनीतिकरण न करें स्टालिन: प्रधान

**नई दिल्ली।** केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन के रूख की आलोचना करते हुए उनसे शिक्षा का राजनीतिकरण न करने तथा छात्रों के हित में राजनीतिक मतभेदों से उपर उठकर निर्णय लेने को कहा है। प्रधान ने स्टालिन द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति का विरोध किए जाने पर शुक्रवार को एक पत्र लिखकर यह हिदायत दी। केन्द्रीय मंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर यह पत्र साझा करते हुए कहा कि किसी राज्य द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति को अदूरदर्शी दृष्टिकोण से देखना तथा राजनीतिक आख्यानों को बनाए रखने के लिए धमकियों का उपयोग करना अत्यधिक अनुचित है। सरकार विश्व स्तर पर शाश्वत तमिल संस्कृति और भाषा को बढ़ावा देने तथा लोकप्रिय बनाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। मैं विनम्रतापूर्वक अपील करता हूं कि शिक्षा का राजनीतिकरण न करें तथा हमारे छात्रों के सर्वोत्तम हित में राजनीतिक मतभेदों से उपर उठें। प्रधान ने पत्र में लिखा है कि यह जरूरी है कि राज्य सरकार राजनीति से ऊपर उठे और ऐसी नीतियों को प्राथमिकता दे, जो हमारे छात्रों को भविष्य के लिए ज्ञान, कौशल और अवसरों से सशक्त बनाएं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति केवल एक सुधार नहीं है, यह एक परिवर्तनकारी दृष्टि है, जो हमारी भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित और मजबूत करते हुए भारत की शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों तक बढ़ाने का प्रयास करती है।

# डोलाल्ड ट्रम्प ने भारत में अमेरिकी चुनावी फंडिंग को रिश्वतखोरी बताया

**न्यूयार्क, वार्ता**

- कहा- मैं परवाह क्यों करूं, हमारी अपनी बहुत परेशानियां, तीन दिन में जारी किया चौथा बयान

**अमेरिकी** राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने तीन दिन में चौथी बार भारत में अमेरिकी चुनावी फंडिंग पर सवाल उठाया। उन्होंने बाइडेन प्रशासन की तरफ से भारत को दी गई 182 करोड़ रुपए की फंडिंग को रिश्वतखोरी बताया। ट्रम्प ने कहा कि मैं हैरान हूं, इतना पैसा पाकर भारत क्या सोचता होगा। ये एक किक-बैक स्कीम है। जो लोग ये पैसा भारत को भेज रहे हैं, उसका कुछ हिस्सा लौटकर उन्हीं लोगों के पास आ रहा है।

ट्रम्प ने कहा कि मैं इसकी परवाह क्यों करूं, हमारी अपनी परेशानियां कम नहीं हैं। हमने ये सारी स्कीमें बंद कर दी हैं। अब हम सही रास्ते पर हैं। ट्रम्प रिपब्लिकन पार्टी के स्टेट गवर्नर्स की बैठक में शामिल हुए थे। ट्रम्प अमेरिकी शहर मियामी में सऊदी सरकार की फ्यूचर इंवेस्टमेंट इनिशिएटिव समिट में बोल रहे थे। इससे पहले ट्रम्प ने गुरुवार को पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडेन पर भारत के आम चुनाव में दखल देने का आरोप लगाया था। उन्होंने कहा कि बाइडेन का प्लान भारत में किसी अन्य नेता (नरेंद्र मोदी के अलावा) को चुनाव जिताने का था। उन्होंने कहा कि बाइडेन प्रशासन ने भारत में वोटर टर्नआउट बढ़ाने के लिए 182 करोड़ रुपए का फंड मुहैया कराया। ट्रम्प ने कहा कि ये बड़ा खुलासा है, हम इस बारे में भारत सरकार को बताएंगे। इस दौरान उन्होंने कहा कि यूनाइटेड स्टेट्स एजेंसी फार इंटरनेशनल डेवलपमेंट ने वोटर टर्नआउट बढ़ाने के नाम पर भारत को 182 करोड़ रुपये का फंड दिया। अमेरिकी चुनाव में रूस ने सिर्फ दो हजार डालर (1.73 लाख रुपये) का इंटरनेट विज्ञापन दिया तो मुद्दा बना था, जबकि अमेरिका भारत को बड़ी रकम दे रहा था।

## संक्षिप्त समाचार

### गुजराती पटेल यूएस एजेंसी एफबीआई के डायरेक्टर

**वॉशिंगटन।** भारतीय मूल के कश्यप काश पटेल, अमेरिकी जांच एजेंसी फेडरल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन (एफबीआई) के डायरेक्टर बन गए है। अमेरिकी संसद के ऊपरी सदन सीनेट ने उनकी नियुक्ति को मंजूरी दे दी है। गुरुवार को वोटिंग के दौरान उन्हें 51.49 के मामूली बहुमत से पद के लिए चुना गया। डेमोक्रेटिक पार्टी के सांसदों के अलावा पटेल के विरोध में दो रिपब्लिकन सांसद सुसान कॉलिन्स और लिसा मर्कोव्स्की दोमात्र ने भी वोट किया। विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी के सांसदों को इस बात का डर है कि काश पटेल पद संभालने के बाद डोनाल्ड ट्रम्प के आदेशों का पालन करेंगे और उनके विरोधियों को निशाना बनाएंगे। मंजूरी मिलने के बाद पटेल ने राष्ट्रपति ट्रम्प और अटॉर्नी जनरल पाम बॉन्डी को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद दिया।

### अमेरिका से निकाले गए 300 अप्रवासी पनामा में कैद

**पनामा।** अमेरिका ने 300 अवैध अप्रवासियों को डिपोर्ट करके पनामा भेजा है। यहां इन लोगों को एक होटल में हिरासत में रखा गया है। इन अप्रवासियों में भारत के अलावा नेपाल, श्रीलंका, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, वियतनाम और ईरान के लोग शामिल हैं। ये लोग अपने देश लौटने को तैयार नहीं हैं। होटल की खिड़कियों से ये लोग मदद की गुहार लगा रहे हैं। कुछ लोग कागजों पर 'हमारी मदद करें' और 'हमें बचाएं' लिखकर खिड़की से दिखा रहे हैं। अमेरिका अवैध अप्रवासियों को उनके देश डिपोर्ट करने के लिए पनामा को पड़ाव के तौर पर इस्तेमाल कर रहा है। इसके लिए पनामा के अलावा ग्वाटेमाला और कोस्टारिका के साथ भी करार किया है।

### वाराणसी में हाईवे पर हादसा, पांच लोगों की मौत

**वाराणसी।** मिर्जामुराद थाना क्षेत्र के रूपापुर (भेड़हरा) गांव के समीप नेशनल हाईवे पर शुक्रवार की सुबह खड़े एक ट्रक में महाकुंभ की तरफ जा रही क्रूजर ओवर टेक करने के दौरान हादसे का शिकार हो गई, जिसमें महिला समेत पांच लोगों की मौत हो गई। इस घटना में एक महिला का सिर धड़ से अलग हो गया था। इस बाबत 108 एंबुलेंस के प्रभारी कृष्ण देव ने बताया कि घटना की सूचना मिलने पर पांच एंबुलेंस मौके पर भेजी गई थी। क्रूजर में कर्नाटक के रहने वाले 11 लोग सवार थे। इसमें पांच लोग की मौत हुई है। मरने वालों में कर्नाटक के संतोष कुमार, सुनीता, गणेश, शिवकुमार सहित अन्य लोग हैं। कार में कुल 13 लोग सवार थे, जिसमें 7 श्रद्धालु गंभीर रूप से घायल हो गए।

### रेखा गुप्ता, प्रवेश ने की धनखड़ से शिष्टाचार भेंट

**नई दिल्ली।** दिल्ली की नवनियुक्त मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने शुकवार को उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से शिष्टाचार भेंट की। उप राष्ट्रपति सचिवालय ने यहां यह जानकारी दी। गुप्ता सुबह उपराष्ट्रपति निवास पहुंची और धनखड़ से मुलाकात की। उनके साथ दिल्ली के लोक निर्माण विकास, संसदीय मामले, सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण, जल और गुरुद्वारा चुनाव मंत्री प्रवेश साहिब सिंह भी थे। सचिवालय ने इस मुलाकात को शिष्टाचार भेंट बताया है।

# कांग्रेस संगठन को मजबूत करें कार्यकर्ता: राहुल

**रायबरेली, वार्ता**



- कांग्रेस नेता ने बीजेपी पर जमकर बोला हमला

कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को रायबरेली में युवाओं को संबोधित करते हुए बीजेपी पर जमकर हमला बोला और कहा कि अगर आप रोजगार चाहते हो, तो छोटे व्यापारियों को मजबूत करना होगा। जीएसटी सिस्टम को बदलना होगा, जितनी जीएसटी आप देते हैं उतनी अडाणी देते हैं। मोदी अमेरिका में जाकर कहते है कि मेरा पर्सनल मैटर है।

कांग्रेस नेता और लोकसभा सांसद राहुल गांधी दो दिवसीय रायबरेली के दौरे पर हैं। इस दौरान उन्होंने युवा संवाद के दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं से संगठन को मजबूत करने और 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों की तैयारी शुरू करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि उस बैंक का दरवाजा आपके लिए खोलना होगा, जो आज बड़े-बड़े लोगों के लिए हो। उन्होंने कहा कि यूपी सरकार फेल्योर सरकार है, काम करना आता नहीं, उल्टी सीधी बातें करते रहते हैं। दिल्ली की सरकार फेल सरकार है। इसको हटाइये और कांग्रेस की सरकार लाइए। उन्होंने कहा कि दो हिन्दुस्तान है-एक अडाणी, अंबानी और एक गरीबों का। आपने जो शादी देखी वो उनका नहीं, आपका पैसा है। दो हिंदुस्तान नहीं चाहिए, आपको डरना नहीं चाहिए, सवाल पूछना चाहिए। रोजगार कब पैदा होंगे, बेरोजगारी कब खत्म होगी।

इससे पहले राहुल गांधी ने शुक्रवार को पार्टी कार्यकर्ताओं से मुलाकता की। राहुल गांधी से पार्टी कार्यकर्ताओं की मुलाकात उनके संसदीय आवास भुएमऊ में हुई। उन्हें विभिन्न मुद्दों, खासकर दलितों से संबंधित मुद्दों से अवगत कराया गया। रायबरेली में कांग्रेस अनुसूचित जाति विंग के अध्यक्ष सुनील कुमार गौतम ने मुलाकात के बाद कहा कि समुदाय के 12 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने राहुल गांधी से उनके भुएमऊ आवास पर मुलाकात की। गौतम ने बताया कि उन लोगों ने अनुसूचित जाति समुदाय से संबंधित मुद्दों को लेकर बातचीत की।

## आरएसएस-भाजपा को विदेशी एजेंसियों से मिलती है गुप्त सहायता : कांग्रेस

# लोकतंत्र अस्थिर करने को ले रहे मदद

**नई दिल्ली, वार्ता**



- देश में संवैधानिक संस्थाओं को किया जा रहा ध्वस्त: पवन खेड़ा
- पीएम मोदी सुनते रहे ट्रम्प की धमकी

कांग्रेस पार्टी ने शुक्रवार को दावा किया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और भारतीय जनता पार्टी देश में लोकतंत्र को अस्थिर करने और संवैधानिक संस्थाओं को ध्वस्त करने के लिए विदेशी एजेंसियों से गुप्त सहायता ले रहे हैं और इसके सबूत उसके पास हैं।

पार्टी ने कहा है कि मोदी सरकार अमेरिका की सरकारी एजेंसी यूएसएड द्वारा भारत के चुनावों को प्रभावित करने के लिए धन देने के मामले को लेकर इस समय जो प्रचार कर रही है, वह वास्तव में असली मुद्दों को भटकाने की उसकी कोशिश है, क्योंकि खुद सत्ता पक्ष से जुड़े लोग प्रदेश की एजेंसियों से सहायता लेते रहे हैं। कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने यहां पार्टी मुख्यालय पर संवाददाता सम्मेलन में कहा कि कांग्रेस पहले ही भारत में यूएसएड फंडिंग पर श्वेतपत्र की मांग कर चुकी है, यह स्पष्ट कर दें कि हम वैश्विक भागीदारी विकास एजेंसियों, यूएसएड जैसी सहायता तंत्रों को बेईमान नहीं मानते। खेड़ा ने कहा कि भाजपा ही सबसे पहले 'डीप स्टेट' की कहानी शुरू की और यूएसएड को बदनाम करना शुरू किया था। उन्होंने कहा कि हालांकि हमारे पास पर्याप्त सबूत हैं कि आरएसएस-भाजपा भारतीय लोकतंत्र को अस्थिर करने और हमारे संविधान को ध्वस्त करने के लिए विदेशी एजेंसियों से गुप्त सहायता ले रही है। कांग्रेस प्रवक्ता ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पिछली अमेरिका यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अपने यहां आयातित सामानों पर 'जवाबी शुल्क' लगाने और ब्रिक्स समूह को खत्म करने की बात कर रहे थे, तो मोदी मुस्कुरा रहे थे। उन्होंने कहा कि इस तरह हमारे प्रधानमंत्री अमेरिकी राष्ट्रपति की धमकी सुनते रहे और चुपचाप स्वदेश वापस आ गए और अब मोदी सरकार कह रही है कि उसे अस्थिर करने के लिए अमेरिका से धन लिया गया है।

### मोदी की यात्रा के बाद भी नहीं रुक रहा अमेरिका में भारतीयों का अपमान: कांग्रेस

**नई दिल्ली।** कांग्रेस ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका यात्रा के बाद भी वहां भारतीयों का अपमान नहीं रुक रहा है और भारतीय नागरिकों को स्वदेश भेजने की बजाय लैटिन अमेरिकी देशों में भेजा जा रहा है। कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने कहा कि मोदी अमेरिका के नव नियुक्त राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को मित्र बताते हुए उनसे बातचीत कर स्वदेश आ गए हैं, लेकिन उनके लौटने के महज एक सप्ताह बाद वहां से भारतीय नागरिकों को वापस भेजने की बजाय लैटिन अमेरिकी देशों में भेजा जा रहा है।

### दिल्ली में कांग्रेस की बदौलत जीती भाजपा: मायावती



**लखनऊ।** कांग्रेस के वरिष्ठ सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के बयान पर पलटवार करते हुए बहुजन समाज पार्टी अध्यक्ष मायावती ने शुक्रवारको कहा कि बसपा पर उंगुली उठाने से पहले उन्हे अपने गिरेबान में झांक कर देख लेना चाहिए था। उन्होंने कहा कि दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस भाजपा की बी टीम बन कर चुनाव मैदान पर उतरी, जिसके कारण भाजपा को दिल्ली की सत्ता में आने का मौका मिला। इससे पहले रायबरेली के दौरे पर आए गांधी ने बसपा पर प्रहार करते हुए कहा था कि लोकसभा चुनाव में बसपा भाजपा की बी टीम बन कर चुनाव में उतरी।

उन्हें नहीं पता कि बसपा अध्यक्ष ने ऐसा क्यों किया। यदि बसपा अध्यक्ष मायावती ने कांग्रेस का साथ दिया होता, तो भाजपा केंद्र की सत्ता में नहीं आती। गांधी के बयान पर पलटवार करते हुए सुश्री मायावती ने एक्स पर सिलसिलेवार ट्वीट में कहा कि कांग्रेस ने दिल्ली विधानसभा आमचुनाव में इस बार बीजेपी की बी टीम बनकर चुनाव लड़ा, यह आम चर्चा है, जिसके कारण यहां बीजेपी सत्ता में आ गई है। वरना इस चुनाव में कांग्रेस का इतना बुरा हाल नहीं होता कि यह पार्टी अपने ज्यादातर उम्मीदवारों की जमानत भी न बचा पाए। अतः इस पार्टी के सर्वेसर्वा राहुल गांधी को किसी भी मामले में दूसरों पर व खासकर बीएसपी की प्रमुख पर उंगली उठाने से पहले अपने गिरेबान में भी जरूर झांक कर देखना चाहिए, तो यह बेहतर होगा। इनको यही सलाह। उन्होंने कहा कि दिल्ली में बनी नई भाजपा सरकार को यहां चुनाव में खासकर जनहित व विकास सम्बंधी किए गए अपने तमाम वादों को समय से पूरा करने की चुनौती है, वरना आगे चलकर इस पार्टी का भी हाल कहीं कांग्रेस जैसा बुरा ना हो जाए।

## अर्थ व्यापार

# बिकवाली के चलते चौथे दिन भी टूटा बाजार

**मुंबई, वार्ता**

अमेरिका की संभावित जवाबी टैरिफ और विदेशी निवेशकों की लगातार जारी बिकवाली को लेकर बढ़ती चिंताओं के कारण शुक्रवार को शेयर बाजार में चौथे दिन भी गिरावट का सिलसिला जारी रहा।

बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 424.90 अंक अर्थात 0.56 प्रतिशत का गोता लगाकर 75,311.06 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 117.25 अंक यानी 0.51 प्रतिशत कमजोर रहकर 22,795.90 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह बीएसई का मिडकैप 1.18 प्रतिशत लुढ़ककर 40,374.02 अंक और स्मॉलकैप 0.43 प्रतिशत उतरकर 45,856.00 अंक पर आ गया। इस दौरान बीएसई में कुल 4060 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2246 में बिकवाली जबकि 1701 में लिवाली हुई, वहीं 113 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह निफ्टी 37 कंपनियों में गिरावट, जबकि 13 में तेजी रही।

बीएसई में धातु की 1.23 प्रतिशत की तेजी को छोड़कर अन्य 20 समूहों में गिरावट का रुख रहा। इससे ऑटो 2.60, कमोडिटीज 0.01, सीडी 1.49, ऊर्जा 0.86, एफएमसीजी 0.51, वित्तीय सेवाएं 0.45, हेल्थकेयर 1.60, इंडस्ट्रियल्स 0.11, आईटी 0.71, दूरसंचार 1.19, यूटिलिटीज 0.21, बैंकिंग 0.82, कैपिटल गुड्स 0.06, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 0.87, तेल एवं गैस 1.42, पावर 0.31, रियल्टी 1.33, टेक 0.54, सर्विसेज 0.70 और फोकस्ड आईटी समूह के शेयर 0.84 प्रतिशत लुढ़क गया। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मिलाजुला रुख रहा। इस दौरान ब्रिटेन का एफटीएसई 0.04, जापान का निक्केई 0.26, हांगकांग का हैंगसेंग 3.99 और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.85 प्रतिशत चढ़ गया, जबकि जर्मनी के डैक्स में 0.06 प्रतिशत की गिरावट रही। शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स 123 अंक गिरकर 75,612.61 अंक पर खुला, लेकिन लिवाली होने से थोड़ी देर बाद ही 75,748.72 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। वहीं बिकवाली होने से यह लगातार गिरता हुआ दोपहर बाद 75,112.41 अंक के निचले स्तर तक लुढ़क गया।

अंत में पिछले दिवस के 75,735.96 अंक के मुकाबले 0.56 प्रतिशत की गिरावट लेकर 75,311.06 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह निफ्टी भी 56 अंक उतरकर 22,857.20 अंक पर खुला और सत्र के दौरान 22,921.00 अंक के उच्चतम जबकि 22,720.30 अंक के निचले स्तर पर रहा।

### विदेशी मुद्रा भंडार गिरकर 635.7 अरब डॉलर पर

**मुंबई।** विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति में भारी गिरावट से 14 फरवरी को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार तीन सप्ताह बाद 2.54 अरब डॉलर लुढ़ककर 635.7 अरब डॉलर पर आ गया। वहीं इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार लगातार तीसरे सप्ताह चढ़ता हुआ 7.7 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 638.3 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से शुक्रवार को जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार 14 फरवरी को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 4.52 अरब डॉलर की गिरावट लेकर 539.6 अरब डॉलर पर आ गई। वहीं इस अवधि में स्वर्ण भंडार 1.94 अरब डॉलर के इजाफे के साथ 74.2 अरब डॉलर हो गया। इसी तरह आलोच्य सप्ताह विशेष आहरण अधिकार 1.9 करोड़ डॉलर बढ़कर 17.9 अरब डॉलर हो गया।

# खाद्य तेलों में टिकाव, मसूर दाल महंगी

**नई दिल्ली, वार्ता**

विदेशी बाजारों के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर मांग सुस्त रहने से शुक्रवार को दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेलों में टिकाव रहा, जबकि मसूर दाल महंगी हो गई, वहीं अन्य जिंसों के भाव स्थिर रहे।

**तेल-तिलहन:** वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में मार्च का पाम ऑयल वायदा 33 रिंगिट उतरकर 4849 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। वहीं मार्च का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0.23 सेंट की गिरावट के साथ 47.03 सेंट प्रति पौंड बोला गया। इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में टिकाव रहा। सरसों तेल, मूंगफली तेल, सूरजमुखी तेल, सोया रिफाइंड, पाम ऑयल और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ। गुड़-चीनी: मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टिके रहे। दाल-दलहन: दाल-दलहन के बाजार में मसूर दाल में 50 रुपए प्रति क्विंटल की तेजी को छोड़कर अन्य दालों में टिकाव रहा। चना, दाल चना, मसूर दाल, और अरहर दाल के भाव पिछले दिवस के स्तर पर पड़े रहे। अनाज : अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान गेहूं और चावल के दाम पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टिके रहे। सरकारी वेबसाइट पर जारी खाद्यान्नों के थोक दाम इस प्रकार रहे:- दाल-दलहन: चना 6000-6100, दाल चना 7000-7100, मसूर काली 7350-7450, मूंग दाल 9400-9500, उड़द दाल 9000-9100, अरहर दाल 7750-7850 रुपए प्रति क्विंटल रहे।

अनाज : (भाव प्रति क्विंटल) गेहूं दड़ा 3100-3200 रुपए और चावल : 3150-3250 रुपए प्रति क्विंटल रहा। चीनी-गुड़: चीनी एस. 4280-4380, चीनी एम. 4300-4400, मिल डिलीवरी 3620-3720 और गुड़ 4250-4350 रुपए प्रति क्विंटल बोले गए। खाद्य तेल: सरसों तेल 15751 रुपए, मूंगफली तेल 18462 रुपए, सूरजमुखी तेल 16484 रुपए, सोया रिफाइंड 15457 रुपए, पाम ऑयल 13187 रुपए और वनस्पति तेल 16044 रुपए प्रति क्विंटल पर रहा है।

## प्रथम पृष्ठ के शेष...

**नया भू-कानून...**

इतिहास में पहली बार हुआ है कि वन भूमि पर इतना बड़ा कब्जे हटाने का अभियान चलाया है। सरकार ने पिछले दिनों अवैध कब्जे हटाने के अभियान में वन भूमि पर अवैध कब्जों को हटाने का काम किया था, जिससे इकोलॉजी और इकोनॉमी को संरक्षित करने का काम करेगा। देखा गया है कि तमाम लोगों ने जिस प्रयोजन के लिए जमीन खरीदी थी उसका उपयोग उस कार्यों के लिए नहीं किया गया है। राज्य में कृषि एवं औद्योगिक प्रयोजन के लिए भूमि क्रय की अनुमति 11 जनपदों में समाप्त कर दी गई है। केवल हरिद्वार और ऊधमसिंहनगर में कलेक्टर की बजाए सिर्फ राज्य सरकार के स्तर से ही निर्णय लिया जाएगा। और ये केवल किसी भी व्यक्ति के पक्ष में 12.5 एकड़ के लिए ही अनुमति दी जाएगी। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा है कि राज्य में आवासीय प्रयोजन के लिए 250 वर्ग मीटर के लिए भी शपथ पत्र देना होगा, शपथ पत्र गलत पाए जाने पर उसको सरकार में निहित कर दिया जाएगा। गौरतलब है कि राज्य में हरिद्वार और ऊधमसिंह नगर जनपद में औद्योगिक निवेश बड़ी मात्रा में है।

**दिल्ली सीएम....**

नियुक्त किया था उन्हें फौरन अपने मूल विभाग में रिपोर्ट करने को कहा गया है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता शुक्रवार दोपहर सचिवालय पहुंची और मंत्रियों-अफसरों के साथ मीटिंग की। इसमें दिल्ली जल बोर्ड, पीडब्ल्यूडी और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को खास तौर पर बुलाया गया था। मीटिंग में खराब सड़कों, पानी और मोहल्ला क्लिनिक को मॉडिफाई करने पर चर्चा हुई। शपथ लेने के बाद रेखा गुप्ता ने पहली कैबिनेट मीटिंग में दिल्ली में आयुष्मान योजना लागू करने पर मुहर लगाई।

उन्होंने कहा कि 24 फरवरी से विधानसभा का सत्र बुलाया जाएगा, जो 27 फरवरी तक चलेगा। इसमें स्पीकर और डिप्टी स्पीकर पर फैसला हो सकता है। नए विधायक भी इसी दिन शपथ लेंगे। विधानसभा अध्यक्ष पद के उम्मीदवार विजेंद्र गुप्ता ने शुक्रवार को कहा कि अरविंदर सिंह लवली प्रोटेम स्पीकर होंगे। उन्होंने बताया कि सत्र में 25 फरवरी को कैग की सभी 14 पेंडिंग रिपोर्ट पेश होंगी। रिपोर्ट में कहा गया है कि 'आप' सरकार की शराब नीति में गड़बड़ी से दिल्ली को 2026 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है।

### पाकिस्तान में मिनी-बस नाले में गिरी, आठ लोगों की मौत

**इस्लामाबाद।** पाकिस्तान के पूर्वी पंजाब प्रांत में शुक्रवार तड़के एक खुले नाले में मिनीबस के गिरने से कम से कम आठ लोगों की मौत हो गई ओर अन्य दो घायल हो गए। स्थानीय पुलिस ने यह जानकारी दी। पुलिस ने स्थानीय मीडिया को बताया कि यह दुर्घटना पूर्वी पंजाब प्रांत के कसूर जिले में उस समय हुई, जब मिनीबस एक संगीत समूह के सदस्यों को लेकर एक विवाह समारोह से लौट रही थी और अनियंत्रित होकर सड़क से लुढ़ककर नाले में गिर गई। दुर्घटना की सूचना मिलने पर बचाव टीमें और पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को नजदीकी अस्पताल में भेजा गया। आठ लोगों की मौके पर ही मौत हो गई थी, जबकि अन्य दो को चोटें आई हैं। बचाव अधिकारियों ने बताया कि प्रारंभिक रिपोर्ट से पता चला है कि वाहन चलाते समय चालक को अचानक से झपकी लग गई, जिसके कारण यह दुर्घटना हुई। पाक में सड़क दुर्घटनाएं एक चिंताजनक मुद्दा बन गई हैं, पिछले कुछ वर्षों में दुर्घटनाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। लापरवाही से वाहन चलाना, सड़कों की खराब स्थिति और अपर्याप्त वाहन रखरखाव उच्च दुर्घटना दर के प्राथमिक कारणों में से हैं।

शाह टाइम्स क्लासीफाईड्स Sale

काले इल्म व सिपली इल्म की काली तांत्रिक शक्तियों का चमत्कार सात घंटों में अपनी आंखों से देखें।
पंडित जी शर्मा
9634608433
जैसे:- नौकरी, व्यापार, कारोबार, पति-पत्नी में झगड़ा, लव मैरिज में अड़चन, शादी में रुकावट, प्यार में धोखा खाये प्रेमी व प्रेमिका एक बार अवश्य फोन करें। आपका बेटा-बेटी, पति-पत्नी किसी के वश में हो महावशीकरण करवाएं या तुड़वाएं, सौतन-दुश्मन को अपनी आंखों के सामने तड़पता देखें, घर में खून के छींटे या प्रेत आत्माओं का साया।
My Promise आपका प्यार टूटने नहीं दूंगा।
महावशीकरण व मुठकरनी के स्पेशलिस्ट
माताएं व बहनें घर बैठे गारंटीड समाधान करवाएं।
21 वर्षों से आपकी सेवा में
अजमेर शरीफ

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना खोई हुई मर्दाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें।
काजीजादा, अमरोहा-UP
हाशमी दवाखाना
9997161320, 8272800800

काम कोर्स उदास क्यों?
अधिक संतुष्टि, हैरतअंगेज पावर, शीघ्रपतन, नपुंसकता, बचपन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इन्टरनेशनल
08899787114
09808917010

Cipzer
— HEALTH WITH CARE —
हैल्थ प्लस सिरप
खून की कमी, भूख ना लगना, विटामिन व हार्मोन्स की कमी, शारीरिक दुर्बलता, गर्भवती महिला, दूध का कम बनना, लीवर व पेट की समस्याओं में उपयोगी
प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

वैधानिक सूचना
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार में प्रकाशित होने वाले सभी विज्ञापनों पर कार्यवाही करने से पहले पूरी जांच-पड़ताल कर लें तथा उचित सलाह ले लें। कोई भी अभिदाता जो इस अखबार में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संदर्भ में कोई राशि भेजता है, किसी चिकित्सीय सलाह पर कोई कार्यवाही या खर्च करता है या कोई वचन देता है, तो ऐसा वह स्वविवेक, बुद्धि तथा जोखिम पर करेंगे। कम्पनी, प्रकाशक या उसका कोई कर्मचारी विज्ञापनदाता या उसके किसी उत्पाद या सेवा हेतु किये गये किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन नहीं देते तथा ऐसे विज्ञापनों विश्वास करके किसी व्यक्ति को हुई क्षति, हानि परिणाम के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

## विस में सशक्त भू कानून पास होने पर भट्ट ने दी प्रदेश वासियों को बधाई

**देहरादून ।** भाजपा ने विधानसभा में सशक्त भू कानून पास होने पर समस्त प्रदेशवासियों को बधाई दी है।

प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने जनभावनाओं के अनुरूप राज्य की भू संपदा के संरक्षण वाले इस कानून के लिए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि लंबे समय से प्रदेश में लागू वर्तमान भू कानून में सुधार करते हुए अधिक कठोर बनाने की जरूरत महसूस की जा रही थी। भाजपा राज्य निर्माण से लेकर इस संवेदनशील मुद्दे पर बेहद गंभीर रही है। राज्य में विशेषकर पर्वतीय क्षेत्रों में सीमित भूमि होने से उन पर लगातार माफियाओं द्वारा अतिक्रमण करने की कोशिशें की जा रही हैं। इसे समझते हुए विधेयक लाने से पूर्व ही मुख्यमंत्री धामी के निर्देश पर प्रशासन द्वारा गलत मंशा से खरीदी जमीनों पर कठोर कार्यवाही की जा रही हैं।भट्ट ने कहा कि हम विश्वास पूर्वक कह सकते हैं कि अब इस कानून के धरातल पर उतरने से देवभूमि की पवित्र भूमि पर कोई गलत निगाह नहीं डाल सकता है।

# सदन में गूंजा भ्रष्टाचार का मुद्दा, विपक्ष ने उठाए सवाल

■ अवैध खनन, उद्यान विभाग घोटाला, सरकारी दफ्तरों में घूसखोरी सहित अनेक मुद्दों पर सदन में कांग्रेस विधायकों ने रखी अपनी बात, संसदीय कार्य मंत्री डॉ. प्रेमचंद अग्रवाल ने विपक्ष के सभी सवालों का जवाब दिया

**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**देहरादून।** उत्तराखंड विधानसभा सत्र के चौथे दिन शुक्रवार को भोजनावकाश के बाद शुरू हुई सदन की कार्रवाई के दौरान विपक्ष ने सदन में नियम 58 के तहत भ्रष्टाचार के मुद्दे पर सत्ता पक्ष को घेरा ।

नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने भ्रष्टाचार के मामले को लेकर खुलकर प्रदेश सरकार को घेरा। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि राज्य में हर जगह भ्रष्टाचार का बोल. बाला है। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में बाहर से विभागों में अधिकारी आयतित हो रहे हैं।

राज्य में अवैध खनन जोरों से चल रहा है। उन्होंने कहा कि उद्यान विभाग में बड़ा घोटाला हुआ। ये जांच में भी साबित हुआ है।नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि उद्यान विभाग घोटाले में तत्कालीन निदेशक की बड़ी भूमिका रही।जमरानी बांध परियोजना में नियमों की अनदेखी करते हुए ठेके आवंटित कर दिए गए। हरिद्वार में मेडिकल कॉलेज पीपीपी मोड पर दे दिया गया जिससे वहां सब कुछ महंगा हो गया।

उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार में भ्रष्टाचार की सारी सीमाएं लगा दी गई हैं। प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और हरिद्वार सांसद त्रिवेंद्र सिंह रावत खनन को लेकर आवाज उठा चुके हैं। उन्होंने उत्तराखंड सरकार को कटघरे में खड़ा करने का काम किया है। बिना कमीशन खोरी के भाजपा राज में कोई काम नहीं हो रहा है ।

आम आदमी से लेकर व्यापारी तक को इसका शिकार बनना पड़ रहा है। नेता प्रतिपक्ष ने बागेश्वर में खड़िया खनन को लेकर भी सदन में अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि कोर्ट कमिश्नर रिपोर्ट तक खा गया और कोर्ट कमिश्नर ने घूस लेने की को. शिश की। उन्होंने कहा कि देहरादून, हरिद्वार, उधम सिंह नगर और नैनीताल में खनन व्यवसाय माफिया चला रहे हैं। उन्होंने खनन करने में सरकारी एजेंसियों को भी निशाने पर लिया और कहा कि सरकारी एजेंटीयों ने अवैध खनन कराया है और वे इसमें



संलिप्त हैं। गढ़वाल मंडल विकास निगम और वन विभाग अवैध खनन रोकने में विफल साबित हुए हैं । उन्होंने कहा कि सरकार के इन काले कारनामों का हाई कोर्ट संज्ञान ले रहा है। तीन मामलों में सीबीआई जांच की संस्कृति कर दी है। सुप्रीम कोर्ट ने भी आदेश पारित किया कि सीबीआई जांच होनी चाहिए।

हिल स्टेशन मसूरी में पर्यटन विकास परिषद की 142 एकड़ जमीन को एक अधिकारी ने 1

करोड़ रुपये वार्षिक लीज पर किराया पर दे दिया। उन्होंने कहा कि सरकार व अधिकारियों को ये अधिकार किसने दिया। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि एशियन बैंक से 23 करोड़ रुपये लोन लेकर उसका समतल. ीकरण किया गया।

उसके बाद चहेतों को बांट दी गई। उपनेता प्रतिपक्ष भुवन कापड़ी ने भी सरकार को भ्रष्टाचार के मुद्दे पर घेरा। उन्होंने कहा कि नए भ्रष्टाचार के कीर्तिमान सरकार ने स्थापित किए हैं। बुलडोजर लेकर सरकार अवैध निर्माण के खिलाफ अभियान चला रही है, दूसरी तरफ अपने चहेतों को सस्ती दरों में जमीन आवंटन कर रही है। आउट सोर्स से बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार किया जा रहा है। जिसमें कंपनियां वेतन नहीं दे रही हैं। युवा इसके बाद सैलरी के लिए लिए भटक रहे हैं। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर कांग्रेस विधायक रवि बहादुर ने भी सदन में अपनी बात रखी। उन्होंने कहा हरिद्वार में बड़े पैमाने पर खनन माफिया के हौसले बुलंद है। ज्वालापुर विधानसभा में खनन से अभी तक कई मौतें हो चुकी हैं। अलग-अलग तरीके से रॉयल्टी जारी कर खनन की खुली छूट दी जा रही है।एक व्यक्ति को 20-20 टेंडर दिए जा रहे हैं, जिसके चलते काम समय पर पूरे नहीं हो पाते हैं। भ्रष्टाचार के मुद्दे पर कांग्रेस विधायक ममता राकेश ने कहा कि सरकारी विभागों में भ्रष्टाचार हरि है बिना पैसा दिए कोई काम नहीं हो रहा है । उन्होंने कहा कि पटवारी तक पैसे लिए बिना कोई काम नहीं कर रहे हैं। हरिद्वार में पिछले 25 सालों से चकबंदी चल रही है।

पटवारी अपना फोन बंद किए रहते हैं। अनुसूचित जाति की लड़कियों की शादी के लिए मिलने वाले 50000 के अनुदान के लिए 10000 तक मांगे जाते हैं। उत्तराखंड पावर कारपोरेशन में भी कम भ्रष्टाचार नहीं है गरीब किसानों से नलकूप कनेक्शन के नाम पर पैसा मांगा जा रहा है। सरकारी अस्पतालों में एक्सपायरी दवा जा रही है जो भ्रष्टाचार की ओर इशारा करती है।

गोपाल सिंह राणा ने भी दाखिल-खारिज में भाष्टाचार सवाल उठाए। वहीं, संसदीय कार्य मंत्री डॉ. प्रेमचंद अग्रवाल ने विपक्ष के सभी सवालों का जवाब देते हुए कहा कि भष्टाचार का आरोप लगाया पूरानी बात है। उन्होने विपक्ष के एक एक मुद्दे का जवाब दिया।

# राज्य के संसाधनों व जमीनों को भू माफियाओं से बचाए रखना संकल्प: सीएम

मुख्यमंत्री धामी ने भू कानून पर दी सदन में जानकारी

नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा, उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था संशोधन विधेयक 2025 को प्रवर समिति को भेजा जाए

**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**देहरादून।** विधानसभा सत्र के चौथे दिन शुक्रवार को सदन के पटल पर कई प्रस्ताव रखे गये। इस दौरान सीएम पुष्कर सिंह धामी ने सदन में उत्तराखंड भू कानून को लेकर उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था संशोधन विधेयक 2025 सदन के पटल पर रखा। जिस पर विपक्ष ने चर्चा की मांग की।

चर्चा के बाद भू कानून को पारित कर दिया गया।

इससे पहले भू कानून पर सीएम धामी ने सदन में जानकारी देते हुए कहा कि उनकी सरकार ने ऐतिहा. सिक निर्णय लिये हैं। लोगों की जनभावनाओं के अनुरूप निर्णय लिये जा रहे हैं। उत्तराखंड के संसाधनों को भू माफिया से बचाने के लिए कोशिशें की जा रही हैं।सीएम धामी ने कहा कि उत्तराखंड में पहाड़ी इलाकों के साथ ही मैदानी इलाके भी हैं।जिनकी भौगोलिक परिस्थितियां अगल अलग हैं। इसके साथ ही इन्वेस्टर्स को भी ध्यान में रखा जा रहा है। इन सभी मुद्दों को समाहित करते हुए सरकार ने भू सुधार की नींव रखी है। सीएम धामी ने कहा ये एक शुरुआत है। इसके बाद इसमें आगे भी काम किया जाएगा।

सीएम धामी ने कहा पिछले कुछ सालों में बाहरी लोगों ने जमीनें खरीदी। जिसका उपयोग नहीं किया जा रहा था। इस कानून के लागू होने के बाद ये समस्या नहीं होगी। इससे भू माफिया को पहचानने में मदद



मिलेगी। सीएम धामी ने कहा कि प्रदेश सरकार लगातार अतिक्रमण हटाने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार इकोनॉमी और ईकोलॉजी को ध्यान में रखकर काम किया जा रहा है। सीएम धामी ने सदन में भू कानून को लेकर विस्तार से जानकारी दी।

सीएम धामी ने बताया भू कानून अध्यादेश में कई महत्वपूर्ण प्रावधान किये गए हैं। भू कानून के जरिये राज्य की जमीन बचेंगी।भूमि सुधार कानून राज्यवासियों के लिए हितकर होगा। उन्होंने बताया कि भू कानून उलंघन के 599 मामलों में से 572 मामले न्यायालय में है। सीएम धामी ने कहा राज्य बनने के बाद लगातार राज्य विकास में भू प्रबंधन को लेकर काम हुये है।इसी को आगे बढ़ाते हुए सरकार प्रयास किया है।11 जनपदों में भूमि खरीदने पर रोक लगाई है। अब शासन स्तर पर जमीन खरीद के लिए अनुमति लेनी होगी।मुख्यमंत्री ने कहा कि भू प्रबंधन कानून से भू माफिया और भूमिधरों के बीच अंतर पहचानने में मदद करेगा।

नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि आज उत्तराखंड भू कानून को लेकर उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था संशोधन विधेयक 2025 को प्रवर समिति को भेजा जाना चाहिए,जिस पर एक महीने में रिपोर्ट पेश हो। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में भू कानूनों को लचीला किसने किया ये जानना जरूरी है।नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा इस तरह के कानूनों में जल्दबाजी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि राजस्व के जानकारों से भी इसकी जानकारी ली जानी चाहिए। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने उत्तराखंड में जमीनों की खरीद फरोख्त पर रोक लगनी चाहिए।

इसके बाद काजी निजामुद्दीन ने कहा कि प्रदेश में भू माफिया की चर्चा होती है।इसकी परिभाषा तय होनी चाहिए। जिसके बाद उन पर कार्रवाई की जानी चाहिए

इसके साथ ही उन्होंने बैक डोर से जमीनों की खरीद फरोख्त के बारे में भी विस्तार से बताया।

### भू कानून के कुछ मुख्य नियम

ख अब राज्य में साढ़े 12 एकड़ से अधिक जमीन खरीद की मंजूरी नहीं दी जाएगी.
ख पहाड़ों पर चकबंदी और बंदोबस्ती को तेजी से पूरा किया जाएगा.
ख दूसरे राज्य के लोगों के लिए राज्य में जमीन खरीदना बेहद मुश्किल हो जाएगा. जमीनों की खरीदारी के लिए अब डीएम अनुमति नहीं दे पाएंगे.
ख प्रदेश में जमीन खरीद के लिए पोर्टल बनाया जाएगा. पोर्टल में राज्य के बाहर के लोगों की एक एक इंच जमीन खरीद का भी ब्यौरा दर्ज होगा.
ख सभी डीएम को राजस्व परिषद और शासन को सभी जमीनों की खरीद की रिपोर्ट नियमित रूप से देनी होगी.
ख राज्य से बाहर के लोगों के इसका दुरुपयोग करने सरकार स्तर से सख्त कार्रवाई की जाएगी.
ख नियमों से हटकर किए गए इस्तेमाल पर जमीन सरकार में निहित की जाएगी.
ख भूमि की कीमतों में अप्राकृतिक बढ़ोतरी पर नियंत्रण रहेगा और राज्य के मूल निवासियों को भूमि खरीदने में सहूलियत होगी.
ख सरकार को भूमि खरीद-बिक्री पर अधिक नियंत्रण प्राप्त होगा, जिससे अनियमितताओं पर रोक लगेगी.
ख पहाड़ी क्षेत्रों में भूमि का बेहतर प्रबंधन होगा, जिससे राज्य के निवासियों को अधिक लाभ मिलेगा.
ख निकाय सीमा में तय भू उपयोग से हटकर जमीन के इस्तेमाल करने पर भी सख्त कार्रवाई होगी

# 7वें कॉमन रिव्यू मिशन की बैठक में ग्रामीण विकास योजनाओं पर चर्चा

■ मुख्य सचिव राधा रतूड़ी सहित कई वरिष्ठ अफसर हुए बैठक में शामिल

**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**देहरादून।** मुख्य सचिव राधा रतूड़ी तथा भारत सरकार, ग्रामीण विकास मंत्रालय के तहत 7वें कॉमन रिव्यू मिशन का नेतृत्व कर रहे संजय अग्रवाल (सेनानिवृत आईएएस, पूर्व सचिव कृषि एवं कृषक कल्याण) ने राज्य में कॉमन रिव्यू मिशन से अपेक्षाओं के सम्बन्ध में आज विधानसभा भवन में बैठक ली। सीआरएम (कॉमन रिव्यू मिशन) द्वारा 7वें कॉमन रिव्यू मिशन के तहत मुख्य सचिव एवं ग्रामीण विकास, जलागम, पंचायती राज सहित सभी संबंधित विभागों से राज्य की विशेष परिस्थितियों के अनुरूप वर्तमान में संचालित योजनाओं में आवश्यक बदलावों के सम्बन्ध में सुझाव मांगे गए हैं। सीआरएम द्वारा ग्राम्य विकास



से सम्बन्धित विभिन्न योजनाओं से बेहतर परिणाम प्राप्त करने हेतु प्रत्येक योजना में कम से कम 5 इनोवेटिव सुझाव मांगे गए हैं। इसके साथ ही सीआरएम सदस्यों ने राज्य में योजनाओं के क्रियान्वयन दौरान अपनायी जा रही बेस्ट प्रैक्टिसेज का विवरण भी सीआरएम को देने के निर्देश दिए हैं। सीआरएम द्वारा राज्य में योजनाओं के क्रियान्वयन के दौरान आ रही समस्याओं, बाधाओं एवं कमियों से भी अवगत कराने के निर्देश दिए हैं, ताकि उनमें आवश्यक सुधार किया जा सके।

मुख्य सचिव राधा रतूड़ी ने राज्य के विशेष परिस्थितियों के अनुरूप कुछ योजनाओं में नीतिगत स्तर पर आवश्यक सुधारों की बात कही। उन्होंने मनेरगा के तहत सेवा क्षेत्र को सम्मिलित करने तथा वॉटर शेड प्रोग्राम में राज्य के विशेष परिस्थितियों के अनुकूल सुधार के सुझाव दिए हैं। बैठक में सचिव राधिका झा, चन्द्रेश कुमार, अपर सचिव मनुज गोयल सहित सभी संबंधित विभागों के अपर सचिव एवं अधिकारी मौजूद रहे।ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार का 7वां कॉमन रिव्यू मिशन (सीआरएम) 18 फरवरी से 02 मार्च तक प्रस्तावित है। सीआरएम को ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के प्रकरणों को समझने एवं बेहतर सार्वजनिक सेवा वितरण हेतु सुझाव देने का कार्य सौंपा गया है। 7वां सीआरएम संजय अग्रवाल, पूर्व सचिव, कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय द्वारा लीड किया जा रहा है,

## आमजन के मुद्दों से भागकर नौटंकी कर रहे कांग्रेसी विधायक: चौहान

**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**देहरादून ।** भाजपा ने विधानसभा में गैरसैण मे सत्र आयोजन को लेकर कांग्रेस के प्रदर्शन को आडंबर और जन मुद्दों से भागने का कृत्य बताया

प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान ने कहा कि एक ओर कांग्रेस सदन की अवधि बढ़ाने को लेकर मांग कर रही है और दूसरी ओर सस्ती लोकप्रियता के लिए नयी नयी नौटंकी कर रही है। कांग्रेस सदन से जन हित के मुद्दों को उठाने के बजाय भाग रही है और गैरसैंण का राग अलाप रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेसी विधायकों को अपने क्षेत्र मे आम जन की समस्याओं से कोई लेना देना नही है और वह सदन मे बिना होमवर्क के पहुंचे है।

उन्होंने कहा कि विस अध्यक्ष देहरादून में सदन घोषित करने से पहले स्पष्ट कर चुकी है कि देहरादून की भाँति गैरसैंण मे विधान सभा डिजिटलाइज्ड नही हो पायी है। विधानसभा भवन में साउंड भी काफी ईको करती है। वहाँ पर कार्य अंतिम चरण में है और गैरसैंण को भी देहरादून की भाँति सुदृढ़ और



सुविधाओं से लैस किया जा रहा है। लेकिन कांग्रेस बेवजह इसे मुद्दा बनाने की फिराक मे है।

चौहान ने कहा कि पूर्व मे गैरसैंण मे हुए सत्र मे ऐसे कई उदाहरण हैं, जब कांग्रेस विधायकों ने सीएम को पत्र लिखकर देहरादून मे शीतकालीन सत्र कराने की मांग की। भाजपा ने पर्वतीय क्षेत्र के विकास के लिए ही गैरसैंण को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया और इसे लेकर उसकी मंशा साफ है। बेहतर होगा कि कांग्रेसी विधायक अपने क्षेत्र मे सड़क, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे जन हित के मुद्दों पर बहस करते। उन्होंने कहा कि कांग्रेस विधायकों की इस नौटंकी को जनता माफ नही करेगी।

## सैन्यभूमि उत्तराखण्ड में शहीद सैनिकों के आश्रितों को दी बड़ी राहत

नियुक्ति की समयसीमा को 2 वर्ष से बढ़ाकर 5 वर्ष करने पर सैनिक कल्याण मंत्री जोशी ने मुख्यमंत्री धामी सहित सम्पूर्ण मंत्रिमण्डल का जताया आभार

**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**देहरादून।** उत्तराखंड सरकार ने शहीद सैनिकों के परिवारों के हित में एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। अब शहीद सैनिकों के आश्रितों को सरक. ारी सेवाओं में अनुकंपा के आधार पर आवेदन करने के लिए 2 साल के बजाय 5 साल का समय मिलेगा। मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में 19 फरवरी को हुई कैबिनेट बैठक में इस प्रस्ताव को मंजूरी दी गई।

उन्होंने बताया कि राज्य सरकार की इस नीति के तहत अब तक 27 शहीद सैनिकों के परिवारों को अनु. कंपा के आधार पर सरकारी नौकरी दी जा चुकी है। नई व्यवस्था से भविष्य में और अधिक परिवारों को राहत मिलेगी और वे सरकारी सेवाओं में रोजगार प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का यह फैसला शहीदों के परिवारों के प्रति सरकार की संवेदनशीलता और सम्मान को दर्शाता है। इस निर्णय से न केवल परिवारों को आर्थिक संबल मिलेगा, बल्कि उन्हें समाज में एक सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर



भी प्राप्त होगा। ज्ञात हो कि उत्तराखंड सरकार ने 20 नवंबर 2018 को अधिसूचना जारी कर भारतीय सेना और अर्द्धसैनिक बलों के उन शहीद सैनिकों (जो उत्तराखंड के स्थायी निवासी थे) के परिवारों के लिए सरकारी सेवाओं में अनुकंपा नियुक्ति का प्रावधान किया था। इसके तहत, जिलाधिकारी कार्यालयों में समूह 'ग' और 'घ' के दो-दो पद सृजित किए गए थे। पहले के नियमों के अनुसार, शहीद सैनिक के बैटल कैजुल्टी प्रमाण पत्र जारी होने की तिथि से 2 वर्ष के भीतर उनके आश्रितों को जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय में आवेदन करना अनिवार्य था लेकिन कई परिवार इस अवधि में आवेदन नहीं कर पाते थे, जिससे वे इस योजना का लाभ लेने से वंचित रह जाते थे। इस दौरान वे कई प्रशास. निक प्रक्रियाओं को पूरा नहीं कर पाते थे, जिससे वे तय समयसीमा में आवे. दन नहीं कर सकते थे। इसके अलावा, कई शहीदों के बच्चे उस समय कम उम्र के होते हैं और वे 2 साल के भीतर नौकरी के लिए आवे. दन करने योग्य नहीं हो पाते थे। इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री धामी ने 26 जुलाई 2024 को कारगिल विजय दिवस के अवसर पर इस समयसीमा को बढ़ाकर 5 वर्ष करने की घोषणा की थी। अब कैबिनेट से इस फैसले को मंजूरी मिलने के बाद यह नियम लागू कर दिया गया है।

# कंबल ओढ़कर विधानसभा पहुंचे कांग्रेसी विधायक

गैरसैंण में ठंड होने की वजह से सत्र न करवाए जाने पर कसा तंज

**शाह टाइम्स संवाददाता**

**देहरादून।** उत्तराखंड विधानसभा के बजट सत्र में कांग्रेस विधायक और उप नेता प्रतिपक्ष भवन कापड़ी हर रोज एक नए अंदाज में नजर आ रहे हैं। शुक्रवार को कुछ कांग्रेसी विधायक मोटे-मोटे कंबल ओढ़ कर विधानसभा पहुंचे और उन्होंने सरकार पर आरोप लगाया है कि सत्ताधारी विधायकों को गैरसैंण में ठंड लगती है, इसलिए उन्होंने गैरसैंण को गैर कर दिया है।

उत्तराखंड में चल रहे बजट सत्र में के अतरंगी रंग देखने को मिल रहे हैं। जहां एक तरफ विगत दिवस कांग्रेस विधायक भुवन कापड़ी हाथ और पैरों में बेड़ियां डालकर विधानसभा पहुंचे थे तो वहीं आज वह मोटे-मोटे कंबल ओढ़ कर विधानसभा पहुंचे। उनके साथ और भी कई विधायकों ने कंबल ओढ़े हुए थे। पिछले दिनों विधानसभा के बजट सत्र की शुरुआत के साथ ही गैरसैंण कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने भी



विधानसभा सत्र वहां ना कराए जाने पर विरोध जताया था। वहीं शुक्रवार को देहरादून विधानसभा में आयोजित बजट सत्र के दौरान उप नेता प्रतिपक्ष भुवन कापड़ी समेत विपक्षी विधायक कम्बल लपेट कर विरोध करने पहुंचे। कांग्रेसी विधायक सरकार पर गैरसैंण में ठंड होने की वजह से सत्र ना करवाए जाने के तंज कसते नजर आए। उपनलकर्मियों की समस्याओं को लेकर विधायक उमेश ने दिया धरना देहरादून। शुक्रवार को खानपुर से निर्दलीय विधायक उमेश कुमार प्रदेश के 22 हजार उपनल यानी उत्तराखंड पूर्व सैनिक कल्याण निगम कर्मचारियों की समस्याओं को लेकर विधानसभा पहुंचे। इस दौरान उन्होंने विधानसभा के प्रवेश द्वार पर पोस्टर लेकर प्रदर्शन किया। बजट सत्र के चौथे दिन सत्र से पूर्व उपनलकर्मियों की लंबे समय से चली आ रही नियमितीकरण की मांग को लेकर निर्दलीय विधायक उमेश कुमार विधानसभा में एक पोस्टर लेकर पहुंचे। जिसके जरिए उन्होंने उपनलकर्मियों को नियमित करने की मांग उठाई। उन्होंने कहा कि लंबे समय से उपनलकर्मियों ने राज्य में अपनी सेवाएं दी हैं, लेकिन राज्य सरकार उनकी मांगों को नजरअंदाज कर रही है। उमेश कुमार ने राज्य सरकार से अनुरोध किया है कि उनको नियमित करने की मांग को मानवता के आधार पर पूरा किया जाए।

# भाजपा ने की जिला अध्यक्ष के चुनावों के संचालन के लिए पर्यवेक्षकों की नियुक्ति

■ प्रदेश चुनाव अधिकारी खजान दास ने सौंपी पार्टी पदाधिकारियों को जिम्मेदारी

**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**देहरादून।** भाजपा ने संगठन पर्व के अंतर्गत जिला अध्यक्षों के चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है। पार्टी के प्रदेश चुनाव अधिकारी खजान दास ने जिला अध्यक्ष के चुनावों के संच. ालन के लिए पर्यवेक्षकों की नियुक्ति की है।

प्रदेश मीडिया प्रभारी मनवीर सिंह चौहान ने जानकारी देते हुए बताया कि पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत 21 फरवरी से 28 फरवरी तक जिला अध्यक्ष चयन की प्रक्रिया चलेगी। प्रदेश के सभी 19 सांगठनिक जिलों के अनुशार कुल 57 पर्यवेक्षकों की नियुक्ति की गई है। जिसमें उत्तरकाशी में बतौर पर्यवेक्षक हेमंत त्रिवेदी, रमेश गाड़िया और गोविंद अग्रवाल, चमोली के लिए शिव सिंह बिष्ट, मेहरबान सिंह रावत और अतर सिंह तोमर, रुद्रप्रयाग के लिए पुनीत मित्तल, मधु भट्ट और राम सुंदर नौटियाल, टिहरी विनय रोहेला, अनीता ममगई और ओमवीर सिंह राघव, देहरादून ग्रामीण विनय गोयल, श्याम डोभाल और गीता रावत, देहरादून महानगर दान सिंह रावत, ऋषि कंडवाल और आशीष गुप्ता, ऋषिकेश विश्वास डाबर, विजय कपरवान और रमेश चौहान, हरिद्वार सुरेश भट्ट अभिमन्यु कुमार और रविंद्र कटारिया, रुड़की सौरभ थपलियाल, नेहा जोशी और बलजीत सोनी, पौड़ी चंडी प्रसाद भट्ट, जोगिंदर पुंडीर और शशांक रावत, कोटद्वार कैलाश पंत, स्वामी यतीश्वरानंद और डॉ स्वराज विद्वान, पिथौरागढ़ दीपक मेहरा, अनिल कपूर डब्बू और समीर आर्य, बागेश्वर दीप भगत, अजय वर्मा और राजेंद्र रावत, रानीखेत प्रकाश हरबोला, कुंदन लटवाल और खूब सिंह विकल, अल्मोड़ा बलवंत सिंह भौंर्याल, राकेश नैनवाल और तरुण बंसल, चंपावत दिनेश आर्य, राम मेहरोत्रा और वीरेंद्र वल्दिया, नैनीताल आशा नौटियाल , रवि मोहन अग्रवाल और रामपाल सिंह, काशीपुर डॉ देवेंद्र भसीन, गणेश भंडारी और भावना मेहरा, उधम सिंह नगर कुसुम कंडवाल, देवेंद्र ढैला और डॉ जोगिंदर पाल रौतेला के नाम शामिल हैं।

## भू-कानून बिल पास होने पर मुख्यमंत्री को दी बधाई

**देहरादून।** मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से विधानसभा परिसर में विधानसभा बजट सत्र में उत्तराखंड (उत्तर प्रदेश जमींदारी विनाश और भूमि व्यवस्था अधिनियम, 1950) (संशोधन) विधेयक, 2025 सर्व सहमति से पारित होने पर विधायक उमेश शर्मा काऊ, महंत दिलीप रावत, प्रमोद नैनवाल, रेणु बिष्ट, सुरेश चौहान, राम सिंह कैड़ा, महेश जीना, राजकुमार, अनिल नौटियाल, सहित विभिन्न विधायकों ने भेंट कर इस ऐतिहासिक कार्य के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।विधायकों ने कहा कि भू-कानून के वजूद में आने से अब पर्वतीय जनपदों में जमीन की खरीद फरोख्त पर अंकुश लग सकेगा।

## एक नजर

### कांवड़ यात्रा: कल से जारी होगा ट्रैफिक प्लान

**काशीपुर।** हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी कांवर यात्रा के मद्देनजर शिव भक्त कांवरियों की सुरक्षा को देखते हुए यातायात पुलिस द्वारा ट्रैफिक प्लान बनाया गया है। यातायात पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक आगामी रविवार 23 से 26 फरवरी तक लागू रहने वाले इस ट्रैफिक प्लान के अंतर्गत धामपुर, बिजनौर से आने वाले भारी वाहन नादेही व धर्मपुर बॉर्डर से आगे प्रतिबंधित रहेंगे। ठाकुरद्वारा से आने वाले भारी वाहन सूर्या चौकी से आगे प्रतिबंधित रहेंगे। मुरादाबाद, टांडा से आने वाले भारी वाहन पैगा पुलिस चौकी से आगे प्रतिबंधित रहेंगे। दढ़ियाल से आने वाले भारी वाहन लोहिया पुल से आगे प्रतिबंधित रहेंगे। रामनगर से आने वाले भारी वाहन चौकी प्रतापपुर से आगे प्रतिबंधित रहेंगे। हल्द्वानी से बाजपुर होते हुए आने वाले भारी वाहन चौकी बरहैनी से आगे प्रतिबंधित रहेंगे।

### दस वर्षों के संघर्ष के बाद मिला बीमा क्लेम

**काशीपुर।** बीमा कम्पनी, जिला उपभोक्ता फोरम, राज्य व राष्ट्रीय आयोग में 10 वर्षों से अधिक संघर्ष के बाद बीमा उपभोक्ता को दस लाख की बीमा क्लेम की धनराशि से लगभग डेढ़ गुना 14 लाख 89 हजार 99 रू. का भुगतान प्राप्त हो गया है। यह भुगतान सरकारी बीमा कम्पनी ओरिएंटल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड ने उपभोक्ता फोरम, राज्य उपभोक्ता आयोग तथा राष्ट्रीय आयोग में केस हारने के बाद जिला आयोग के माध्यम से बीमा उपभोक्ता मुशर्रफ को किया गया है। काशीपुर के जमील अहमद तथा मुशर्रफ की ओर से नदीम उद्दीन एडवोकेट द्वारा जिला उपभोक्ता फोरम में परिवाद दायर किया गया था।

### अवैध खनन में दो जेसीबी व तीन डम्पर सीज

**काशीपुर।** वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद उधमसिंहनगर द्वारा जनपद में अवैध खनन की रोकथाम हेतु अभियान चलाये जाने हेतु निर्देशित किये जाने पर पुलिस अधीक्षक काशीपुर, क्षेत्राधिकारी काशीपुर तथा प्रभारी निरीक्षक काशीपुर के पर्यवेक्षण में बृहस्पतिवार को चौकी कुंडेश्वरी पुलिस द्वारा ग्राम जुड़का, गांधीनगर खत्ता में सघन चेकिंग व छापेमारी की कार्यवाही करते हुए दो जेसीबी मशीन व तीन डम्पर सीज़ किये गये। कोतवाली पुलिस के मुता. बिक अवैध खनन के संबंध में रिपोर्ट संबंधित विभाग को प्रेषित की जाएगी।

### हल्द्वानी से फरार हुआ कैदी काशीपुर में दबोचा

**काशीपुर।** हल्द्वानी स्थित सुशीला तिवारी चिकित्सालय से सुरक्षा कर्मियों को चकमा देकर फरार विचाराधीन कैदी को आईटीआई थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। अभियुक्त के खिलाफ विभिन्न थानों में 14 मामले पंजीकृत हैं। बताते चलें कि पुलिस ने चोरी के एक मामले में रोहित कुमार पुत्र मनीपाल निवासी चैती गांव हाल सत्यम पैलस के पास खड़कपुर देव. ीपुरा थाना आईटीआई, काशीपुर को गिरफ्तार किया था। बीती 18 फरवरी को पेट दर्द की शिकायत करने पर कांस्टेबल पवन गोसाई व खेम सिंह इलाज के लिए आरोपी को एसटीएच लेकर आए थे। इसी दौरान रोहित पुलिस को चकमा देकर भाग गया था। इस मामले में हल्द्वानी थाने में एफआईआर दर्ज कराई गई थी। आईटीआई थाना प्रभारी कुंदन सिंह रौतेला के नेतृत्व में टीम गठित की गई थी। गत शाम पुलिस ने विचाराधीन कैदी रोहित कुमार को टांडा उज्जैन से गिरफ्तार कर लिया। सीओ दीपक सिंह ने बताया कि अभियुक्त की गिरफ्तारी की सूचना हल्द्वानी पुलिस को दे दी गई है। पुलिस टीम में कुन्दन सिंह रौतेला थानाध्यक्ष आईटीआई, उपनिरीक्षक प्रकाश सिंह बिष्ट, कांस्टेबल नीरज शुक्ला, अनुज त्यागी, गिरीश विद्यार्थी व एसपीओ अमिताभ सिज्वाली थे।

### कांवरियों की सेवार्थ विभिन्न स्थानों पर भंडारे प्रारंभ

**काशीपुर।** महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर हरिद्वार से पवित्र गंगाजल लेकर गंतव्य को लौटने वाले शिवभक्त कांवरियों की सेवार्थ काशीपुर नगर व क्षेत्र में प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले भंडारों का क्रम आरंभ हो चुका है। जसपुर रोड से मिस्सरवाला मोड़ और बैलजुड़ी तिराहा से ढेलापुल पार कर काशीपुर में प्रवेश करने वाले कांवरियों की सेवा के लिए जारी तैयारियों के बीच वृहस्पतिवार से नगर के गंगे बाबा मंदिर में भंडारा प्रारंभ हो गया है। जानकारी के मुताबिक श्री गंगे बाबा मंदिर उदासीन आश्रम में वृहस्पतिवार 20फरवरी से आगामी 25 फरवरी की देर रात तक कांवरियों की सेवा हेतु विशाल भंडारे एवं विश्राम की व्यवस्था आश्रम के महंत श्री लखनदास महाराज जी के निर्देशानुसार श्रद्धालुओं के सहयोग से शुरू की गई है। उधर, श्री डमरू वाले बाबा मंदिर सेवा ट्रस्ट, हनुमान गढ़ी, द्रोणासागर, काशीपुर की ओर से विशाल भंडारे का आयोजन आज 21फरवरी से मंगलवार 25फरवरी तक श्री डमरू वाले बाबा मंदिर में किया जाना सुनिश्चित हुआ है। वहीं, मंगलवार 25 फरवरी को प्रात: 11 बजे से सायं 06 बजे तक चौती परिसर स्थित श्री मोटेश्वर महादेव मंदिर के समीप विशाल भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

### आधा दर्जन गांवों में लो वोल्टेज

**बागेश्वर।** बनलेख के पास बिजली की लाइन में चीड़ का पेड़ गिरने से दुग–नाकुरी तहसील के करीब आधा दर्जन गांव लो वोल्टेज की समस्या से जूझ रहे हैं। तीन दिन से लोगों के फ्रिज और कंप्यूटर शोपीस बने हुए हैं। हालांकि विभाग ने विजयुर उप केंद्र से लाइन जोड़ी है, लेकिन इसका भी लाभ ग्रामीणों को नहीं मिल रहा है। ग्रामीणों ने जल्द समस्या का समाधान करने की मांग की है। बुधवार शाम करीब तीन बजे से यह समस्या बनी हुई है। ग्रामीणों की शिकायत के बाद विभाग ने वियजपुर उप केंद्र से लाइन जोड़ी गई उसके बाद भी लोगों को राहत नहीं मिल पाई है।

# सरकार कृषि विकास के लिए प्रतिबद्ध

## उन्नत तकनीकों और नवाचारों से किसानों की आय वृद्धि होगी: मुख्यमंत्री धामी

**शाह टाइम्स संवाददाता**

**पंतनगर।** विश्वविद्यालय में आयोजित किये जा रहे 17वें कृषि विज्ञान सम्मेलन के दूसरे दिन मुख्य अतिथि उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी द्वारा एक वृहद कृषि विज्ञान प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया। उन्होंने सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के विभिन्न संस्थानों द्वारा प्रदर्शन में लगाए गए स्टालों का कुल. पति डा. मनमोहन सिंह चौहान एवं अन्य अधिकारियों के साथ अवलो. कन किया। तदोपरान्त उन्होंने इस सम्मेलन में उपस्थित अधिकारियों, वैज्ञानिकों, विद्यार्थियों एवं कृषकों के एक विशाल सभा जहां पर लगभग तीन हजार लोग उपस्थित थे को संबो. धित किया। उन्होंने अपने संबोधन में कृषि विज्ञान सम्मेलन के आयोजन के प्रासंगिकता को सराहा। उन्होंने राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी द्वारा देव भूमि उत्तराखण्ड में स्थापित पंतनगर विश्वविद्यालय में 17वें कृषि विज्ञान सम्मेलन को आयोजित करने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने कृषि के क्षेत्र में नवाचारों एवं सरकार की योजनाओं पर चर्चा की तथा कहा कि उत्तराखंड सरकार कृषि क्षेत्र के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य सरकार किसानों के हित में कई योजनाएं चला रही है, जिससे वे आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाकर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं। उन्होंने कृषि विश्वविद्यालयों और वैज्ञानिकों को किसानों के साथ मिलकर कार्य करने का आह्वान किया, ताकि नवाचारों को जमीनी स्तर तक पहुंचाया जा सके। सम्मेलन के संयोजक एवं कुल. पति डा. मनमोहन सिंह चौहान द्वारा सर्वप्रथम मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया और उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में नवाचार और अनुसंधान के जरिए किसानों की आय दोगुनी करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने उत्तराखण्ड सरकार द्वारा गर्मी के मौसम में धान की रोपाई पर प्रतिबंध लगाने की प्रशंसा की क्योंकि गर्मी में लगाये जाने वाले धान के कारण केवल भू-जल स्तर ही नहीं घट रहा था बल्कि धान की लगातार रोपाई से धान में लगने वाले कीटों का प्रकोप बढ़ता जा रहा था और उसके नियंत्रण के लिए रसायनों के प्रयोग से वातावरण दुशित हो रहा था। अत: इस प्रतिबंध से भू-जल स्तर में हो रही कमी रूक जायेगी और वातावरण में प्रदूषण भी कम रहेगा। उन्होंने यह भी बताया कि इस 'कृषि कुंभ' में 16 देशों यथा अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, ब्रिटेन, यूके, जर्मनी, इटली, रोमानिया, स्लोवेनिया, थाइलेंड, फिजी, मोरक्को, जांबिया, ओमान एवं नेपाल से वैज्ञानिक प्रतिभाग कर रहे है। इसके अतिरिक्त उद्योग जगत के प्रतिनिधि और प्रगतिशील किसान भी प्रतिभाग कर रहे है। कार्यक्रम के दौरान प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया। सम्मानित किसानों में किसान आयोग के उपाध्यक्ष राजपाल सिंह, बलविन्दर सिंह, सुरेश राणा, अमृत पाल, नरेंद्र मेहरा और कविता देवी शामिल थे, जिन्होंने कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। समापन समारोह में निदेशक शोध एवं आयोजन सचिव डा. एएस नैन ने धन्यवाद प्रस्ताव किया। प्रात: काल से ही 11 विषयों पर विभिन्न तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार गणेश जोशी उपस्थित रहेंगे।

### एग्रीकल्चर साइंस में डा. गौतम सम्मानित

**पन्तनगर।** 17वें कृषि विज्ञान सम्मेलन में कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए पन्तनगर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि



विश्वविद्यालय, पूसा समस्तीपुर (बिहार) के कुलाधिपति डा. पीएल गौत्तम को राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेवानिवृत्त) एवं भारत सरकार के कृषि सचिव/महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद डा. हिमांशु पाठक द्वारा संयुक्त रूप से डा. एबी जोशी मेमो. रियल लेक्चर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। डा. गौत्तम द्वारा कृषि विज्ञान सम्मेलन में कृषि में वायोडावरसीफाई पर विशेष व्याख्यान दिया गया। बायोडावरसीफाई के माध्यम से कृषकों की अतिरिक्त आय वृद्धि पर विशेष सुझाव दिये गये। डा. गौत्तम ने कहा कि टिकाऊ कृषि प्रथाओं को विकसित करने की आवश्यकता है जो न केवल उत्पादकता को बढ़ाएं बल्कि प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षण भी कर सका। उन्होने वैज्ञानिक समुदाय से जल प्रतिरोध, जल संरक्षण एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबन्धन को प्राथिमकता वाले क्षेत्रो के रूप में ध्यान केन्द्रीत करने की अपील की।

## कांवड़ियों की सुरक्षा के हों पुख्ता इंतजाम: कविता यादव

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**काशीपुर।** भाजपा की पूर्व पार्षद एवं जिला उपाध्यक्ष महिला मोर्चा कविता यादव ने प्रशासन से मांग की है कि महाशिवरात्रि पर्व के दौरान जिस मार्ग से कांवरिये गुजरते हैं उस मार्ग पर पुलिस की सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम एवं पुलिस पेट्रोलिंग होनी चाहिए क्योंकि गत वर्षो में देखने में आया है कि कुछ सामाजिक तत्व शहर का माहौल बिगड़ने का कार्य करते हैं ऐसे असामाजिक तत्वों पर कड़ी से कड़ी नजर रखी जाए ताकि कोई भी अप्रिय घटना घटित न हो। उन्होंने नगर निगम प्रशासन से भी आग्रह किया है कि निर्धारित मार्ग पर सफाई एवं प्रकाश व्यवस्था का उचित प्रबंध किया जाए, साथ ही काशीपुर के सभी मंदिरों के आसपास साफ सफाई एवं चूने की व्यवस्था की जाए। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग से भी आग्रह किया है कि मुख्य चौराहे पर एक मेडिकल कैंप लगाया जाए जिसमें कांवरियों को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी होने पर उनका निशुल्क उपचार किया जा सके। उन्होंने यह भी मांग की हैं कि जिस मार्ग से कांवरिया गुजरते हैं उस मार्ग पर नॉनवेज और शराब की दुकानें महाशिवरात्रि तक बंद होनी चाहिए। इसके अलावा कांवर रूट पर सीसीटीवी कैमरे लगाने की भी मांग की है।

## निरंकारी मिशन के प्रोजेक्ट अमृत का तृतीय चरण कल

**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**हल्द्वानी।** संत निरंकारी मिशन की सेवा भावना और मानव कल्याण के संकल्प को साकार करने हेतु 'प्रोजेक्ट अमृत' के अंतर्गत 'स्वच्छ जल, स्वच्छ मन' परियोजना के तृतीय चरण का भव्य शुभारंभ रविवार, 23 फरवरी 2025 को परम श्रद्धेय सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज एवं सत्कार योग्य निरंकारी राजपिता रमित जी के पावन सान्निध्य में एक विशेष सफाई अभियान पुरे भारत वर्ष में उस दिन चलाया जायेगा इसी क्रम में 23 फरवरी 2025 दिन रविवार को प्रात: 8 बजे से 12 बजे तक हल्द्वानी के चित्रशिला घाट गार्गी नदी और विद्युत शवदाह गृह पर सफाई अभियान किया जाएगा इस परियोजना का उद्देश्य जल संरक्षण एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक करना है, ताकि भावी पीढ़ियों को निर्मल जल और स्वस्थ पर्यावरण का वरदान प्राप्त हो सके। संत निरंकारी मंडल के सचिव जोगिंदर सुखीजा ने जानकारी देते हुए बताया कि यह वृहद अभियान देशभर में 27 राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों के 900 से अधिक शहरों में 1600 से भी अधिक स्थानों पर एक साथ आयोजित किया जाएगा। इस महाअभियान की यह अभूतपूर्व व्यापकता इसे एक ऐतिहासिक स्वरूप प्रदान करेगी, जिससे जल संरक्षण एवं स्वच्छता का संदेश और अधिक प्रभावशाली रूप से जन–जन तक पहुंचेगा। उन्होंने यह भी बताया की हल्द्वानी में इस अभियान को पूर्व की भांति 'आओ सवारें, चित्रशिला घाट गार्गी किनारे' के प्रेरक संदेश के साथ आयोजित किया जा रहा है। संत निरंकारी मिशन के लगभग 500 समर्पित स्वयंसेवको के साथ–साथ विभिन्न संस्थानों के युवाओं के साथ मिलकर जल संरक्षण और स्वच्छता का संदेश जन–जन तक पहुंचाएंगे।

# आरओबी का निर्माण शीघ्र पूरा किया जाए

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**काशीपुर।** काशीपुर शहर में चल रहे विभिन्न विभागों के विकास कार्यो की गति को लेकर एसडीएम अभय प्रताप सिंह ने समीक्षा बैठक कर

### काशीपुर में चल रहे विकास कार्यों को लेकर उपजिलाधिकारी ने ली समीक्षा बैठक

अधिकारियों से जानकारी ली। बैठक में एनएच की तरफ से बताया गया कि रामनगर आरओबी 75 प्रतिशत पूरा हो गया है, शेष किये जाने के निर्देश दिये गये। एसडीएम ने एनएच अधिका. रियों से आरओबी निर्माण को लेकर सख्ती दिखाते हुए कहा कि 25



प्रतिशत शेष कार्य जल्द से जल्द पूरा करने के निर्देश दिए। निर्माण के दौरान सड़क से गुजरने वाले यात्रियों की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

एसडीएम कार्यालय में आयोजित समीक्षा बैठक में तहसीलदार पंकज चंदोला, आरएम सिडकुल, सहायक नगर आयुक्त, पेयजल निगम के सहायक अभियंता शामिल रहे। इस दौरान एनएच की तरफ से बताया गया कि एनएच 121 (309) में पूर्ण चौड़ाई में डामरीकरण का कार्य किया जाये, ताकि रोड में जो बार–बार गड्ढे बन रहे हैं उनसे निजात मिल सके। लोक निर्माण विभाग की तरफ से राधेश्याम बिल्डिंग के पास पुलिया निर्माण कराया जाना है, जिसको लेकर एसडीएम ने इस कार्य को तय डेडलाइन में पूरा करने के निर्देश दिए। काशीपुर के प्रमुख चौराहों को सुंदर व जाम मुक्त बनाने को लेकर प्राधिकरण की तरफ से जगह चिन्हित करने के निर्देश दिये गये, ताकि चिन्हित किये स्थानों पर जिला स्तरीय विकास प्राधिकरण के द्वारा सौंदर्यकरण का कार्य किया जा सके। इस दौरान ट्रैफिक के भार को देखते हुए केवीआर अस्पताल से टांडा तिराहा तक सड़क चौड़ीकरण का कार्य करने के निर्देश दिए गए। रामनगर रोड पर स्टेडियम गेट सर्विस लेन के पास फैन्सी स्ट्रीट लाईट, पेड़–पौधे लगाने को लेकर प्रस्ताव पर मुहर लगाई गई। इसके अलावा एमपी चौक के ऊपर फ्लाईओवर पर रोटरी व आस–पास के पर सुंदरीकरण का कार्य किया जाएगा।

## बजट में उद्योग व कृषि क्षेत्र के लिए स्वागत योग्य कदम: बंसल

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**काशीपुर।** कुमायूँ गढ़वाल चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री (केजीसीसीआई) के अध्यक्ष अशोक बंसल ने प्रेस को जारी बयान में उत्तराखण्ड सरकार द्वारा पेश किए गए वित्तीय वर्ष 2025-26 के बजट का स्वागत करते हुए कहा कि यह बजट प्रदेश के उद्योगों और कृषि क्षेत्र को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सरकार द्वारा स्टार्टअप वेंचर फण्ड और उत्तराखण्ड वेंचर फण्ड की स्थापना से प्रदेश के उद्यमियों को नई ऊर्जा मिलेगी, जिससे न केवल रोजगार के अवसर बढ़ेंगे बल्कि उत्तराखण्ड औद्योगिक क्षेत्र में और अधिक मजबूती से आगे बढ़ेगा। इसके अलावा, मिलेट मिशन और मत्स्य पालन प्रोत्साहन योजना जैसे कदम कृषि क्षेत्र को नई दिशा देने वाले हैं।

इससे राज्य के किसानों को आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलेगा और प्रदेश की आर्थिकी को मजबूती मिलेगी। कुमायूँ गढ़वाल चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री सरकार के इन दूरदर्शी फैसलों की सराहना करता है और उम्मीद करता है कि भविष्य में भी ऐसे प्रगतिशील निर्णय लिए जाएंगे, जो उत्तराखण्ड को एक सशक्त और आत्मनिर्भर राज्य बनाने में सहायक होंगे।

# वकीलों का दूसरे दिन भी प्रदर्शन

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**काशीपुर।** केंद्र सरकार द्वारा प्रस्तावित अधिवक्ता संशोधन बिल 2025 के विरोध में आज दूसरे दिन भी काशीपुर बार एसोसिएशन के समस्त अधिवक्ताओं द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया। इस दौरान अधिवक्ताओं ने कहा कि इस बिल में संशोधन के नाम पर अधिवक्ताओं के हितों को प्रभावित करने का काम किया जा रहा है और अधिवक्ताओं को जो संवैधानिक अधिकार भारतीय संविधान में उनको मिले हैं सरकार द्वारा उनको खत्म करने का प्रयास किया जा रहा है। उक्त संशोधन के विरोध में काशीपुर बार एसोसिएशन के द्वारा एक आम सभा का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त अधिवक्तागणों से उक्त बिल मे होने वाले संशोधन के लिए आम राय मांगी गई, जिसको उचित माध्यम से सरकार तक पहुंचाया जाएगा। इस दौरान काशीपुर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अवधेश कुमार चौबे, अनूप शर्मा, नृपेंद्र कुमार चौधरी, सूरज कुमार, सौरभ शर्मा, हिमांशु बिश्नोई, सतपाल सिंह बल, दुष्यंत चौहान, रश्मि पाल, विजय सिंह, कामिनी श्रीवास्तव, नरेश कुमार पाल, अर्पित कुमार सौदा, अमित कुमार गुप्ता, अमृत पाल सिंह, हरि सिंह नेगी, मनोज जोशी, सनत कुमार पैगिया, उमेश जोशी, आनन्द रस्तोगी, शैलेंद्र मिश्रा, इन्दर सिंह, वीरेंद्र चौहान आदि बड़ी संख्या में अधिवक्तागण उपस्थित रहे। उधर तहसील परिसर में भी धरना प्रदर्शन किया गया। इस दौरान सुधीर चौहान, विजय चौहान, पवन शर्मा, नीरज चौहान, नरेश पाल, रोहित अरोरा, सतपाल, अक्षय नायक, अंकुर मल्होत्रा, राजेंद्र सैनी आदि दर्जनोंअधिवक्ता उपस्थित थे।

## विकास भवन में आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों का प्रदर्शन

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**बागेश्वर।** आधे दर्जन से अधिक मांगों को लेकर आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एक बार फिर मुखर हो गई हैं। नाराज कार्यकर्तियों ने शुक्रवार को विकास भवन परिसर में प्रदर्शन किया। यहां हुई सभा में वक्ताओं ने कहा कि उनकी मांग लंबे समय से लंबित है। कई बार अपनी समयों कामनग पत्र वे उच्चाधिकारियों को भेज चुकी है। लेकिन समस्या जस की तस बनी हुई है। शुक्रवार को आंगनबाड़ी कार्यकर्ता विकास भवन में पहुंचे। यहां नरोबाजी के साथ प्रदर्शन किया। यहां हुई सभा में वक्ताओं ने कहा कि सेवानिवृत्त वाली बहनों के महिला कल्याण कोष से अभी तक कोई भी धनराशि नहीं दी गई है। इसका कारण स्पष्ट किया जाए। एमपीआर की बैठक या अन्य कार्य के लिए कार्यालय में न बुलाकर सेक्टर मीटिंग की जाए। इसके अलावा आंगनबाड़ी केंद्र में कार्यकर्ताओं के बैठने के लिए कुर्सी तथा बच्चों के लिए दरी देने, केंद्र की पंजिकाओं को सुरक्षित रखने के लिए अलमारी उपलब्ध कराने, टेक होम राशन में किलोमीटर न देखते हुए प्रत्येक केंद्र को ढुलान का पैसा देने, पोषण ट्रेक में विकास द्वारा जो तय किया गया था व धनराशि पोषण ट्रैकर को न देकर धनराशि सबके खातों में डालने की मांग की गई। इस मौके पर लीला आर्या, तारा देवी, विमला देवी, गीता पांडे, अनीता लो. हनी, शोभा कांडपाल, कमला दानू, प्रभा देवी, नीमा जोशी, मुन्नी आर्या, रंजना देवी, आषा जोशी, मरियम डेविड आदि मौजूद रहे।

# यूसीसी के क्रियान्वयन पर चर्चा

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**बागेश्वर।** समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर अपर मुख्य सचिव आनंद बर्धन की अध्यक्षता में एक वर्चुअल बैठक आयोजित हुई। इस बैठक में सभी जिलाधिकारियों और नोडल अधिकारियों ने भाग लिया, जिसमें यूसीसी पोर्टल की कार्यप्रणाली की समीक्षा की गई। बागेश्वर की समीक्षा के दौरान जिलाधिकारी ने जिले में यूसीसी पोर्टल और प्राप्त आवेदनों की वर्तमान स्थिति से अपर मुख्य सचिव को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि जिले में विवाह पंजीकरण प्रक्रिया को सुचारू रूप से लागू करने के लिए हरसंभव प्रयास किए जा रहे हैं। जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों को भी निर्देश देते हुए कहा कि विभागों में कार्यरत कार्मिक जिनका विवाह निर्धारित तिथि के भीतर हुआ है उनका पंजीकरण यूसीसी के तहत कराना सुनिश्चित किया जाए। इसके अतिरिक्त जिला अधिकारी ने



अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे यूसीसी के महत्व को लेकर व्यापक जनजागरूकता अभियान चलाएं। इस अभियान के तहत विभिन्न माध्यमों से जनता को यूसीसी के लाभों के बारे में जागरूक करें। जिससे समाज में समानता और न्याय की भावना को और अधिक सशक्त बनाया जा सके। जिलाधिक. ारी ने कहा कि समान नागरिक संहिता राज्य में समानता और पारदर्शिता स्थापित करने की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है, जो सभी नागरिकों को समान अधिकार और न्याय सुनिश्चित करता है। यह अधिनियम महिलाओं और कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण में सहायक सिद्ध होगा और राज्य को सामाजिक समरसता की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

# वन मंत्री को नहीं कानून की जानकारी, लोगों में रोष

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**बिंदुखत्ता।** वन अधिकार अधि. नियम 2006 के तहत बिंदुखत्ता को राजस्व ग्राम घोषित करने की प्रक्रिया आठ माह से लंबित है, लेकिन

### वनाधिकार कानून

नेताओं और अधिकारियों की लाप. रवाही और नियमों की गलत व्याख्या के कारण 80 हजार की आबादी बुनियादी सुविधाओं से वंचित है। इस गंभीर मुद्दे को लेकर पूर्व सैनिक संगठन और वन अधिकार समिति ने आज उपजिलाधिकारी के माध्यम से राज्य स्तरीय वनाधिकार निगरानी समिति को एक तीखा ज्ञापन सौंपा। इस मामले को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य और विधायक हरीश धामी ने उठाया था, लेकिन वन मंत्री सुबोध उनियाल ने जवाब देते हुए कहा कि 75 वर्ष पूरे होना आवश्यक है, जबकि वना. धिकार अधिनियम में ऐसी कोई



बाध्यता नहीं है। यह जवाब ही इस बात का सबूत है कि सरकार को इस कानून की सही जानकारी नहीं है। वनाधिकार अधिनियम 2006 की धारा 2(ण) और जनजाति मंत्रालय के स्पष्ट निर्देशों के अनुसार अन्य परंपरागत वन निवासी (ओटीएफडी) समुदाय को तीन पीढ़ियों से वनाश्रित होने का प्रमाण देना होता है, न कि किसी विशेष स्थान पर 75 वर्ष से रहने का। हरिद्वार और रामनगर में इसी आधार पर वना. धिकार दावे स्वीकृत किए गए हैं, लेकिन बिंदुखत्ता के मामले में मनमाने ढंग से अलग नियम लागू किए जा रहे हैं। इस संबंध में नैनीताल की जिलाधिकारी ने भी अपनी रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से लिखा है कि वना. धिकार अधिनियम में 75 वर्षों से एक ही स्थान पर निवास करना आवश्यक नहीं है। फिर भी शासन इस मुद्दे पर कोई ठोस कदम नहीं उठा रहा। हरिद्वार की वनाधिकार पत्रावली में, 1952 में कुछ छात्रों के स्थानांतरण प्रमाण पत्र को आधार बनाकर उनकी दूसरी पीढ़ी को मान्यता दी गई और वर्तमान पीढ़ी को तीसरी पीढ़ी माना गया। इस आधार पर जिला स्तरीय समिति ने वनाधिकार दावा स्वीकृत कर दिया। रामनगर में भी 1933 के एक मानचित्र को आधार बनाकर बसासत सिद्ध की गई, और 75 वर्षों की बाध्यता नहीं मानी गई। अगर हरिद्वार और रामनगर में यह नियम लागू हो सकता है, तो फिर बिंदुखत्ता में क्यों नहीं? क्या सरकार जानबूझकर बिंदुखत्ता के नागरिकों के साथ भेदभाव कर रही है? वना. धिकार समिति ने अपने ज्ञापन में चेतावनी दी है कि यदि बिंदुखत्ता को राजस्व ग्राम घोषित नहीं किया गया, तो जनता आंदोलन के लिए बाध्य होगी। 80,000 की आबादी पिछले आठ महीनों से बिजली, पानी, सिंचाई, पंचायती राज, कृषि, सड़क और बैंक ऋण जैसी बुनियादी सरक. ारी योजनाओं से वंचित है। बिंदुखत्ता के नागरिकों का सीधा सवाल है कि जब एक ही कानून, एक ही राज्य में अलग–अलग लागू किया जा सकता है, तो हमारे साथ भेदभाव क्यों? सरकार को अविलंब अधिसूचना जारी करनी होगी।

### गोवंशीय गोसदन भेजे

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**बागेश्वर।** नगरपालिका अध्यक्ष खेतवाल ने पदभार ग्रहण करते ही समस्याओं पर काम करना शुरू कर दिया है। उन्होंने चुनवा के दौरान अपने संकल्प पत्र में शामिल नगर से आवारा पशुओं को सुरक्षित गौ सदन भेजने का वादा नगरवासियों से किया गया था। उन्होंने शुक्रवार नगर पालि. का के कर्मचारियों के साथ मिलकर करीब 16 गाय व गौ वंश को श्री राधा कृष्ण गौ सदन बाजपुर भेजा गया है। चेयरमैन सुरेश खेतवाल ने नगरवा. सियों व नगर की सीमाओं से लगे ग्रामसभाओं के लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे अपने गौवंश को नगर ने न छोड़े। इससे नगर की यातायात व्यस्था से लेकर लोगों के कृषि व अन्य कार्य प्रभावित हो रहे है। उन्होंने कहा कि नगर पालिका आने वाल दिनों में आवारा छोड़े जाने वाले गायों को उनके कान पर लगे टैग के आधार पर ट्रक करने का काम भी शुरू करेगी।

## पुलिस आरक्षी भर्ती 24 फरवरी को

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**बागेश्वर।** पुलिस अधीक्षक ने आगामी पुलिस आरक्षी भर्ती को निष्पक्ष एवं पारदर्शिता से सम्पन्न कराये जाने को लेकर समीक्षा बैठक ली। बैठक में उन्होंने कर्मचारियों को आवश्यक निर्देश दिए। एसपी चन्द्र शेखर घोड़के ने आगामी 24 फरवरी को पुलिस लाइन बागेश्वर में होने वाली पुलिस आरक्षी पुरुष भर्ती परीक्षा से सम्बन्धित (शारीरिक मानक/दक्षता परीक्षा) को निष्पक्ष एवं पारदर्शिता से आयोजन के निर्देश दिए। उन्होंने पुलिस के आलाधिका. रियों की बैठक लेते हुए कहा कि भर्ती हेतु आने वाले अभ्यार्थियों को उनके चेस्ट नम्बरों का आवंटन समय से किये जाए। भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता लाने के लिये शारीरिक मानक/दक्षता परीक्षा की सभी स्पर्धाओं की वीडियोग्राफी के सम्बन्ध में आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। ड्यूटी पर लगे सभी अधिकारी/कर्मचारी अपने दायित्वों/कर्तव्यों का निष्पक्षता से निर्वहन कर पुलिस भर्ती को शान्तिपुर्ण ढंग से सम्पन्न करवाने को कहा गया। पुलिस भर्ती मैदान के आस पास अराजक तत्वो, भर्ती करवाने का प्रलोभन देने वालो पर विशेष नजर रखने को कहा गया। उन्होंने कहा कि भर्ती प्रकिया के दौरान किसी भी अधिकारी व कर्मचारी द्वारा की गई लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बैठक में पुलिस उपाधीक्षक बागेश्वर, प्रति. सार निरीक्षक पुलिस लाइन बागेश्वर एवं अन्य अधिकारी, कर्मचारी रहे।

# वन दरोगाओं को कुचलने की कोशिश

## वन तस्करों का दुस्साहस: बंदूक तोड़ी, लूटपाट की कोशिश, सात पर मुकदमा

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। तस्करों के हौसले लगातार बढ़ते जा रहे हैं, बीते गुरुवार की रात्रि भाखड़ा रेंज के जंगलों में तस्करों ने एक बड़ी वारदात को अंजाम दिया है। तस्करी कर जंगल से निकलने की कोशिश कर रहे तस्करों को वन दरा. गाओं द्वारा रोकने का प्रयास किया तो तस्करों ने वन दरोगाओं को ट्रैक्टर से कुचलने की कोशिश करते हुए उनके साथ मारपीट की गई साथ ही सरक. ारी बंदूक तोड़ दी और कारतूस लूट कर फरार हो गए। पीड़ित वन दरोगा की तहरीर के आधार पर मुखानी पुलिस ने नामजद सात आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर वन तस्करों की तलाश शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार भाखड़ा रेंज के वन दरोगा मोहन सिंह चौहान और मनोज कुमार मेलकानी ने मुखानी पुलिस को तहरीर सौंपते हुए कहा कि बीती 20 फरवरी की रात वह लामाचौड अनुभाग में बाइक से जंगल में गश्त कर रहे थे। तभी रात करीब साढ़े 8 बजे वन निगम कटान प्लॉट लामाचौड़ 96 लॉट संख्या-27 पर पहुंचे तो उन्होंने दो बाइक पर सवार लोगों और उनके पीछे एक ट्रैक्टर को जाते देखा। बाइक व ट्रैक्टर पर शक होने पर वन दरोगाओं ने उक्त लोगों का पीछा किया और टॉर्च की रोशनी मारते हुए और आवाज लगाकर उन्हें रुकने को कहा। लेकिन तस्कर नहीं रुके और न ही बाइक सवार वन दरा. गाओं को आगे निकलने दिया। जिसके बाद वन दरोगाओं ने ओवरटेक करने की कोशिश की तो तस्करों ने उन्हें ट्रैक्टर से कुचलने का प्रयास किया। जिससे दोनों बाइक सवारों ने वन दरोगा जमीन पर गिर गए। किसी तरह वन दरोगाओं ने उनका पीछा किया और लामाचौड़ प्रथम गेट पर ट्रैक्टर ट्रॉली संख्या-यूए06-9589 को रोक लिया। तस्करी और शिकार के शक में जब वन दरोगाओं ने ट्रैक्टर ट्रॉली को चैक करने के लिए ट्रॉली पर चढ़े तो वन तस्करों ने उनके साथ मारपीट शुरू कर दी, और उनका मोबाइल व बाइक भी तोड़ दी। जिसके बाद तस्करों ने मोहन सिंह चौहान से सरकारी बंदूक छीनकर तोड़ दी और उसके 6 कारतूस लूट लिए। मारपीट और लूटपाट की घटना को अंजाम देने के बाद आरोपियों ने वन बैरियर पर लगी रस्सी काटकर ट्रैक्टर ट्रॉली के साथ फरार हो गए। इस घटना में वन दरोगाओं को गंभीर चोटें नहीं आई हैं। इधर मुखानी थानाध्यक्ष विजय मेहता ने बताया कि वन दरोगाओं के साथ हुई मारपीट व लूट की घटना मामले में वन दरोगाओं द्वारा सूरज पुत्र रूप किशोर, राजकुमार पुत्र रूप किशोर, संजय पुत्र रूप किशोर, युवराज पुत्र मुंशी, जोगेंदर पुत्र मुंशी, रोहित पुत्र दयाराम, राममूर्ति पुत्र दयाराम सहित सात लोगों के खिलाफ नामजद तहरीर सौंपी है। इनमें से सूरज, राज. कुमार और संजय सगे भाई हैं, जबकि युवराज और जोगेंदर सगे भाई, जबकि रोहित और राममूर्ति भी सगे भाई हैं। सभी आरोपी प्रेमपुर नवाड़ लामाचौड़ मुखानी क्षेत्र के रहने वाले हैं। सातों आरोपियों के खिलाफ धारा 121(1), 132, 191(2), 324(3) के तहत नामजद मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

### शिवरात्रि के लिए बेलपत्र तोड़ने गए थे

**हल्द्वानी।** शिवरात्रि के अवसर पर बेलपत्र की खरीद-फरोख्त में बढ़ोतरी होती है, जब भक्त भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए उन्हें बेलपत्र अर्पित करते हैं। लेकिन इसी बीच एक बड़ी घटना सामने आई है, जिसमें आरोपियों पर वन दरोगाओं के साथ मारपीट और लूटपाट करने का आरोप लगाया गया है। सूत्रों के मुताबिक, घटना के संदर्भ में बताया जा रहा है कि आरोपियों ने रात के अंधेरे में जंगल में बेलपत्र और बेल का फल तोड़ने के लिए प्रवेश किया था। वापसी के दौरान जब वन दरोगाओं ने उन्हें रोकने का प्रयास किया, तो आरोपियों ने उनके साथ मारपीट की और सरकारी सामान की लूटपाट की। हालांकि, घटना में कितनी सच्चाई है, इसका अभी तक कोई स्पष्ट जानकारी नहीं मिल पाई है, और पुलिस इस मामले की जांच कर रही है। बताया जा रहा है कि आरोपियों के पास जंगल में जाने की अनुमति भी थी, लेकिन फिर भी घटना के दौरान उत्पन्न परिस्थितियों को लेकर जांच की जा रही है।

### ऐक्टू का राष्ट्रीय सम्मेलन दिल्ली में 24 से

**हल्द्वानी।** ट्रेड यूनियन ऐक्टू का तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन 24-26 फरवरी को दिल्ली में होने जा रहा है। जिसमें देश भर से ऐक्टू से जुड़ी सैकड़ों मजदूर यूनियन के प्रतिनिधि हिस्सा लेंगे। सम्मेलन में देश भर में मजदूर वर्ग पर हो रहे शोषण के खिलाफ आवाज उठाई जाएगी। उक्त जानकारी देते हुए ऐक्टू राष्ट्रीय परिषद के सदस्य डा. कैलाश पाण्डेय ने बताया कि सम्मेलन में मोदी सरकार द्वारा लाए गए 4 श्रम कोड वापस लेने, न्यूनतम मजदूरी 30 हजार करने, महंगाई पर रोक लगाने, आशा-आंगनबाड़ी-भोजनमाता व अन्य स्कीम वर्कर्स को सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने, पुरानी पेंशन योजना बहाल करने, मजदूरों के लिए बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास व्यवस्था, सिडकुल में शोषण पर रोक लगाने, ठेकप्रथा खत्म करने, निर्माण मजदूरों को रोजगार व सामा. जिक सुरक्षा की गारंटी करने व तमाम असंगठित क्षेत्रों के श्रमिकों के लिए कल्याण बोर्ड का निर्माण करने सहित तमाम मांगे उठाई जाएंगी। ऐक्टू के राष्ट्रीय सम्मेलन की शुरुआत 24 फरवरी को तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली में आयोजित होने वाले ओपन सत्र से होगी।

# भाजपा जिलाध्यक्ष चुनाव के लिए पर्यवेक्षक नियुक्त

शाह टाइम्स ब्यूरो

**हल्द्वानी।** भाजपा ने संगठन पर्व के अंतर्गत जिला अध्यक्षों के चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है। पार्टी के प्रदेश चुनाव अधिकारी खजान दास ने जिलाध्यक्ष के चुनावों के संचालन के लिए पर्यवेक्षकों की नियुक्ति कर दी है। भाजपा के प्रदेश मीडिया सह प्रभारी चन्दन बिष्ट ने बताया कि पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत 21 से 28 फरवरी तक जिलाध्यक्ष चयन की प्रक्रिया चलेगी। प्रदेश के सभी 19 सांगठनिक जिलों के अनुसार कुल 57 पर्यवेक्षकों की नियुक्ति की गई है। जिसमें उत्तरकाशी में बतौर पर्यवेक्षक हेमंत त्रिवेदी, रमेश गाड़िया और गोविंद अग्रवाल, चमोली के लिए शिव सिंह बिष्ट, मेहरबान सिंह रावत और अतर सिंह तोमर, रुद्रप्रयाग के लिए पुनीत मित्तल, मधु भट्ट और राम सुंदर नौटियाल, टिहरी के लिए विनय रो. हेला, अनीता ममगई और ओमवीर सिंह राघव, देहरादून ग्रामीण के लिए विनय गोयल, श्याम डोभाल और गीता रावत, देहरादून महानगर दान सिंह रावत, ऋषि कंडवाल और आशीष गुप्ता, ऋषिकेश विश्वास डाबर, विजय कपरवान और रमेश चौहान, हरिद्वार सुरेश भट्ट, अभिमन्यु कुमार और रविंद्र कटारिया, रुड़की सौरभ थपलियाल, नेहा जोशी और बलजीत सोनी, पौड़ी चंडी प्रसाद भट्ट, जोगिंदर पुंडीर और शशांक रावत, कोटद्वार कैलाश पंत, स्वामी यतीश्वरानंद और डा. स्वराज विद्वान, पिथौरागढ़ दीपक मेहरा, डा. अनिल कपूर डब्बू और समीर आर्य, बागेश्वर दीप भगत, अजय वर्मा और राजेंद्र रावत, रानीखेत प्रकाश हर्बोला, कुंदन लटवाल और खूब सिंह विकल, अल्मोड़ा बलवंत सिंह भौर्याल, राक. श नैनवाल और तरुण बंसल, चंपावत दिनेश आर्य, राम मेहरोत्रा और वीरेंद्र वल्दिया, नैनीताल आशा नौटियाल, रवि मोहन अग्रवाल और रामपाल सिंह, काशीपुर डा. देवेंद्र भसीन, गणेश भंडारी और भावना मेहरा, उधमसिंह नगर कुसुम कंडवाल, देवेंद्र ढैला और डा. जोगेंद्र रौतेला के नाम शामिल हैं।

# डा. चेतन भट्ट को शोध सम्मान

शाह टाइम्स ब्यूरो

**हल्द्वानी।** इंटलेक्चुअल सोसायटी ऑफ मीडिया प्रमोटर्स द्वारा आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में जिज्ञासा यूनिवर्सिटी के असिस्टेंट प्रोफेसर डा. चेतन भट्ट को समाज रत्न मीडिया शोध सम्मान से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें मीडिया और समाज में रचनात्मक योगदान के लिए दिया गया।

सम्मेलन का आयोजन 14-16 फरवरी तक रायपुर में हुआ। जिसका मुख्य विषय मीडिया के नए आयाम और समाज था। सम्मेलन में देशभर के मीडिया प्रोफेशनल्स, शिक्षाविदों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने भाग लिया और विभिन्न विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए। उद्घाटन सत्र में पद्मश्री डा. भारती बंधु, वरिष्ठ पत्रकार आसिफ इकबाल और सामा. जिक कार्यकर्ता डा. अजय कुमार शर्मा मौजूद थे। सम्मेलन में मीडिया के प्रभाव, डिजिटल और सोशल मीडिया के दौर, सांस्कृतिक विकास, पर्यावरण, और पत्रकारिता की गौरवशाली परंपरा पर चर्चा की गई। डा. चेतन भट्ट ने अपने संबोधन में पत्रकारिता के महत्व और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी पर विचार साझा किए। समारोह को कार्टूनिस्ट त्रयंबक शर्मा, डा. रत्ना पांडेय, अखिलेश चंद्र शुक्ल, और डा. योगेश वैष्णव ने भी संबोधित किया। सम्मेलन का संचालन निमिषा सिंह और ताम्रध्वज बोरकर ने किया। कार्यक्रम के अंत में दार्शनिक स्थलों का भ्रमण भी आयोजित किया गया। जिसमें शबरी के राम डाक्यूमेंट्री फिल्म की भी प्रदर्शनी हुई।

# पहाड़ी हिन्दू सशक्तिकरण अभियान 26 से

## चम्पावत के श्री गोल्ज्यू मंदिर से होगी अभियान की शुरूआत: विनोद शाही

शाह टाइम्स ब्यूरो

**हल्द्वानी।** पहाड़ी आर्मी उत्तराखंड में सात दिवसीय पहाड़ी हिन्दू सशक्तिकरण अभियान शुरू करने जा रही है। यह अभियान पहाड़ बचाने के उद्देश्य से एक जागरण यात्रा के रूप में आयोजित किया जा रहा है, जो कुमाऊं मंडल में 26 फरवरी से 4 मार्च तक चलेगी। अभियान की शुरुआत चंपावत के श्री गोल्ज्यू मंदिर से होगी, जहां से यात्रा का भव्य शुभारंभ न्याय के देवता श्री गोल्ज्यू के आशीर्वाद से संकल्प लेकर किया जाएगा। इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य पहाड़ी हिंदू समाज को जागरूक और सशक्त बनाना है। यह बात पहाड़ी आर्मी के संयोजक विनोद शाही ने कहीं। शुक्रवार को नैनीताल रोड स्थित एक जनपथ कॉम्प्लेक्स में पत्रकार वार्ता करते हुए पहाड़ी आर्मी के संयोजक विनोद शाही ने कहा कि यह सात दिनों की यात्रा विभिन्न प्रमुख स्थानों से होकर निकलेगी। यात्रा का पहला चरण चंपावत, लोहाघाट, पिथौरागढ़, मुवानी, थल, कांडा, बागनाथ, बागेश्वर, गरुड़, कौसानी, सोमेश्वर, अल्मोड़ा, द्वाराहाट, चौखुटिया, मासी, भिकियासैंण, भतरोंजखान और नैनीताल होते हुए हल्द्वानी पहुंचेगी। इस यात्रा के दौरान, पहाड़ी समाज के प्रमुख सात संकल्प लिए जाएंगे, जिनमें पहाड़ी हिंदू संस्कृति की पहचान को सुरक्षित करना, आर्थिक अवसरों में पहाड़ी युवाओं का प्राथमिक अधिकार सुनिश्चित करना, भू-कानून, एनआरसी और मूल निवास की रक्षा करना, और नदियों व जंगलों का संरक्षण करना शामिल है। पहाड़ी आर्मी के संस्थापक अध्यक्ष हरीश रावत ने कहा कि पृथक उत्तराखंड राज्य बनने के 25 वर्षों बाद भी राज्य के पहाड़ी समाज को उचित सशक्तिकरण नहीं मिल पाया है। उन्होंने कहा कि इस अभियान के माध्यम से पहाड़ी हिंदू समाज के विभिन्न मुद्दों पर काम किया जाएगा और समाज को जागरूक किया जाएगा। पत्रकार वार्ता में युवा जिलाध्यक्ष मोहित राणा, कोषाध्यक्ष भगवंत सिंह राणा, मीडिया प्रभारी गौरव गोस्वामी, युवा नगर अध्यक्ष विनोद शाही, मोहन कांडपाल, पंकज जोशी, हिमांशु शर्मा, पंकज बिष्ट, कपिल शाह, बंटी जोशी आदि मौजूद रहे।

# छात्रों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अवगत कराया

## नई शिक्षा नीति के तहत तीन दिवसीय वर्कशॉप

शाह टाइम्स ब्यूरो

**हल्द्वानी।** नई शिक्षा नीति के तहत छात्रों में विज्ञान को लोकप्रिय और रुचिकर बनाने के उद्देश्य से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान भीमताल द्वारा तीन दिवसीय वर्कशॉप का आयोजन किया गया। शुक्रवार को वर्कशॉप का शुभारंभ राजकीय जूनियर हाईस्कूल कालाढूंगी रोड हल्द्वानी में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान भीमताल के प्राचार्य सुरेश चंद्र आर्य द्वारा दीप प्रज्वलित करते हुए उन्होंने कहा कि इस वर्कशॉप का मुख्य उद्देश्य छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि और विज्ञान शिक्षण को बढ़ावा देना है, ताकि बच्चे खेल-खेल में विज्ञान को सीख सकें और अपने आसपास की घटनाओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अवलोकन कर सकें। उन्होंने बच्चों से अपील की गई कि वे अपने आसपास घटित होने वाली प्रत्येक गतिविधि का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करें और अपने मन में उठने वाले प्रश्नों का उत्तर शिक्षकों और अभिभावकों से प्राप्त करें। कार्यशाला के संयोजक डा. पूरन सिंह बुंगता ने बताया कि यह वर्कशॉप जनपद नैनीताल के चार विकासखंडों रामगढ़, कोटाबाग, ओखलकांडा और हल्द्वानी में आयोजित की जाएगी। वर्कशॉप में डा. विजेता मनराल और गीता नेगी मास्टर ट्रेनर की भूमिका निभा रहे हैं। कार्यक्रम के शुभारंभ के मौके पर डायट भीमताल के प्रवक्ता डा. सुमित पांडे और डा. हेम तिवारी ने छात्रों को खेल-खेल में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझाने के सरल और मनोरंजनपूर्ण तरीकों से अवगत कराया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों को भारत रत्नश्री सीवी रमन के जीवन पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई, जिससे वे बेहद उत्साहित हुए। इसके अलावा, बच्चों को इलेक्ट्रोमैग्नेट, विद्युत के चुंबकीय प्रभाव, इंद्रधनुष, रमन प्रभाव और पौधों की पत्तियों में पाए जाने वाले स्टोमेटा की संरचना को माइक्रोस्कोप के माध्यम से दिखाया गया। इस मौके पर डा. पूरन सिंह बुंगता, डा. सुमित पांडे, डा. हेम तिवारी, डा. विजेता मनराल, आशा नेगी, गीता आर्य, राजीव लॉरेंस, प्रीति, नितेश, काजल, युवराज, अजय आर्य, आयुष बिष्ट आदि मौजूद रहे।

# जीवन सार्थक बनाती है कथा

शाह टाइम्स ब्यूरो

**हल्द्वानी।** श्री चारधाम मॉदिर गुजरोड़ा फतेहपुर में चल रही श्रीमद् भागवत कथा के दूसरे दिन कथा वाचक व्यास श्रीश्री 108 रमेश दास भागवत कथा के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण मनुष्य जीवन को सार्थक बनाती है। जन्म तो हर प्राणी एवं मनुष्य लेता है लेकिन उसे अपने जीवन का अर्थ बोध नहीं होता है। बाल्यावस्था से लेकर मृत्यु तक वह सांसारिक गतिविधियों में ही लिप्त होकर इस अमूल्य जीवन को नश्वर बना देता है। श्रीमद् भागवत ऐसी कथा है जो जीवन के उद्देश्य एवं दिशा को दर्शाती है। इसलिए जहां भी भागवत होती है इसे सुनने मात्र से वहां का संपूर्ण क्षेत्र दुष्ट प्रवृत्तियों से खत्म होकर सकारात्मक ऊर्जा से सशक्त हो जाता है। उन्होंने धुंधकारी की कथा का वर्णन करते हुए कहा कि धुंधकारी के गलत कार्यों में संलिप्त होने के कारण उसकी हत्या हो गई और अकाल मृत्यु होने के कारण वह प्रेत योनि में चला गया। भाई गोकर्ण ने प्रेत योनि से मुक्ति दिलाने के लिए सूर्य भगवान के बताए सूत्र पर श्रीमद भागवत कथा का आयोजन किया और भाई धुंधकारी को कथा सुनाई, जिसके श्रवण से धुंधकारी को प्रेत योनि से मुक्ति मिली। इससे स्पष्ट होता है कि कर्म, धर्म मनुष्य को संयमित और वेद रीति नीति से करना चाहिए। इस अवसर पर मुख्य यजमान प्रमोद बोरा, अध्यक्ष मॉदिर कमेटी जमन सिंह निगल्टिया, सचिव गोपाल दत्त पड़लिया, उपाध्यक्ष रवि कुरिया, प्रमोद पलडिया, स्वामी नारायण दास, गोपाल दास, मुख्य पुजारी चंद्रशेखर जोशी, नारायण सिंह मेहरा, महंत हरिदास, कमलकांत पड़लिया, कमल पड़लिया सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

# अधिवक्ताओं ने किया कार्यबहिष्कार

## अधिवक्ता संशोधन अधिनियम का विरोध

शाह टाइम्स ब्यूरो

**हल्द्वानी।** अधिवक्ता संशोधन अधि. नियम 2025 के खिलाफ हल्द्वानी बार एसोसिएशन पदाधिकारियों ने शुक्रवार को कार्य बहिष्कार करते हुए दीवानी न्यायालय, एसडीएम कोर्ट और तहसील कार्यालय में एकजुट होकर प्रदर्शन किया। इस दौरान अधिवक्ताओं ने केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। अधिवक्ताओं ने कहा कि अधिवक्ता संशोधन अधिनियम 2025, अधिवक्ताओं के अधिकारों का हनन है। हम लगातार संशोधन अधिनियम का विरोध कर रहे हैं। हल्द्वानी बार एसोसिएशन के अध्यक्ष किशोर कुमार पंत ने कहा कि अधिवक्ता संशोधन अधिनियम केंद्र सरकार को बार काउंसिल, अधिवक्ता और बार संघों पर नियंत्रण करने का अबाध अधिकार प्रदान करता है जो अधिवक्ताओं और विधि व्यवसाय के विपरीत हैं। नये संशोधन अधिनियम में स्वतंत्र विधि व्यवसाय के कार्यों में दंड के जुर्माने के अधीन किए जाने का प्रावधान भी रखा गया है। इससे विधि व्यवसाय पर विपरीत असर पड़ेगा। अगर सरकार अधिवक्ता संशोधन अधिनियम को बिना शर्त वापस नहीं लेती और अधिवक्ता हितों को नजरअंदाज करते हुए विधेयक को पारित करती है तो अधिवक्ता सड़कों पर उतरकर आंदोलन करने को बाध्य होंगे। एसोसिएशन के पूर्व सचिव राजन सिंह मेहरा ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद आज तक सरकार ने कभी भी अधिवक्ताओं को किसी भी प्रकार की कोई सुविधा नहीं दी। उसके बाद भी सरकार जबरन संविधान में निर्धारित अधिकारों का उल्लंघन करेगी तो उसका पुरजोर विरोध किया जाएगा। इस दौरान सचिव मोहन सिंह बिष्ट, उपाध्यक्ष सुनील सिंह पुंडीर, भगवती पडलिया, योगेश चंद्र लोहनी, आदित्य कुमार, योगेंद्र कुमार पाठक, आरपी पांडे, भरत सिंह, हरेंद्र सिंह पडियार, लो. केश राज चौधरी, मोहित पांडेय, पंकज कब्डवाल, नीलू शर्मा समेत कई अधिवक्ता मौजूद रहे।

# मातृभाषा को संजोकर रखा जाए: जोशी

शाह टाइम्स ब्यूरो

**हल्द्वानी।** मातृभाषा दिवस पर शुक्रवार को उत्तराखंड मुक्त विश्व. विद्यालय में भाषा, संस्कृति, पहचान, संचार, सामाजिक एकीकरण, शिक्षा और विकास आदि विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमे बोलते हुए मुख्य अतिथि वरिष्ठ कुमाऊंनी साहित्यकार व लेखक दामोदर जोशी देवांशु ने कहा कि अपनी मातृभाषा को सजोय रखना हम सबका कर्तव्य है और इसका संवर्धन, संरक्षण बहुत जरुरी है। उन्होंने कहा कि यह दुखद है कि वर्तमान में हमारी नई पीढ़ी इसे नहीं समझ रही है। हम सबको मिलकर इसके लिए कार्य करना होगा तभी इसे आगे बढ़ाया जा सकेगा। उत्तराखंड में कई लोग साहित्य निकालकर अपनी भाषा को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे है जो सराहनीय कदम है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कार्यवाहक कुलपति प्रो. गिरजा पाण्डे ने कहा कि भाषा का बड़ा सामाजिक संदर्भ है। यह एक राजनीतिक मसला भी है और सांस्कृतिक टूल भी। प्रो.पाण्डे ने विस्तारपूर्वक मातृभाषाओं की सामा. जिक भूमिका को रेखांकित किया। मानवीकी विभाग की निदेशक प्रो. रेनू प्रकाश ने अपना वक्तव्य कुमाऊंनी भाषा में बोला और कहा कि मातृभाषा को हमें अपनी दिनचर्या में भी लाना होगा तभी हम सफल हो सकते है। हिन्दी विभागाध्यक्ष डा. शशांक शुक्ला ने विषय की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए यूनेस्को द्वारा मातृभाषा दिवस के इतिहास को सामने रखा। जबकि डा. राजेन्द्र कैड़ा ने कहा कि भाषा और पर्यावरण जैसी चीजें हमारे समाज में प्राय: उपेक्षित हो जाती है। जबकि ये हमारे समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डा. अनिल कार्की ने भाषाओं के इतिहास पर संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम मात्र गोष्ठियों में ही नहीं सिमटना चाहिए, बल्कि इसका व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार भी हो और लाभ भी दिखे। निदेशक अकादमिक प्रो. पीडी पंत ने सभी का आभार जताते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर विभिन्न मातृ भाषाओं में प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक मौजूद रहे।

### मुक्त विश्वविद्यालय में एक दिवसीय कार्यक्रम

### शिवी चौहान का स्वागत

शाह टाइम्स संवाददाता

**नैनीताल।** युवक कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी शिवी चौहान के प्रथम बार नैनीताल नगर आगमन पर उन्हें शॉल ओढ़ाकर एवं स्मृति चिन्ह देकर नगर कांग्रेस परिवार द्वारा उनका स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष सुमित लो. हनी, पूर्व प्रदेश महासचिव युवक कांग्रेस धीरज बिष्ट, नगर महामंत्री कांग्रेस कमेटी कैलाश अधिकारी, नगर सचिव कांग्रेस कमेटी बंटू आर्या, जिलाध्यक्ष यूथ सेवादल कमल जोशी, जिला उपाध्यक्ष यूथ कांग्रेस ललित सिंह बोरा, जिलाध्यक्ष एनएसयूआई शार्दुल नेगी, नगर अध्यक्ष आयुष आर्या, विधानसभा अध्यक्ष युवक कांग्रेस अमन महिन्द्रा, महेश जोशी, विमल कुमार, अभिषेक कुमार, अनमोल थापा तथा प्रियांशु बिष्ट आदि उपस्थिति रहे।

### बोर्ड की परीक्षाएं शांतिपूर्ण शुरू

**हल्द्वानी।** अधिवक्ता संशोधन अधिनियम 2025 के खिलाफ हल्द्वानी बार एसोसिएशन पदाधिकारियों ने शुक्रवार को कार्य बहिष्कार करते हुए दीवानी न्यायालय, एसडीएम कोर्ट और तहसील कार्यालय में एकजुट होकर प्रदर्शन किया। इस दौरान अधिवक्ताओं ने केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। अधिवक्ताओं ने कहा कि अधिवक्ता संशोधन अधिनियम 2025, अधिवक्ताओं के अधिकारों का हनन है। हम लगातार संशोधन अधिनियम का विरोध कर रहे हैं। हल्द्वानी बार एसोसिएशन के अध्यक्ष किशोर कुमार पंत ने कहा कि अधिवक्ता संशोधन अधिनियम केंद्र सरकार को बार काउंसिल, अधिवक्ता और बार संघों पर नियंत्रण करने का अबाध अधिकार प्रदान करता है जो अधिवक्ताओं और विधि व्यवसाय के विपरीत हैं। नये संशोधन अधिनियम में स्वतंत्र विधि व्यवसाय के कार्यों में दंड के जुर्माने के अधीन किए जाने का प्रावधान भी रखा गया है। इससे विधि व्यवसाय पर विपरीत असर पड़ेगा। अगर सरकार अधिवक्ता संशोधन अधिनियम को बिना शर्त वापस नहीं लेती और अधिवक्ता हितों को नजरअंदाज करते हुए विधेयक को पारित करती है तो अधिवक्ता सड़कों पर उतरकर आंदोलन करने को बाध्य होंगे। एसोसिएशन के पूर्व सचिव राजन सिंह मेहरा ने कहा कि स्वतंत्रता के बाद आज तक सरकार ने कभी भी अधिवक्ताओं को किसी भी प्रकार की कोई सुविधा नहीं दी। उसके बाद भी सरकार जबरन संविधान में निर्धारित अधिकारों का उल्लंघन करेगी तो उसका पुरजोर विरोध किया जाएगा। इस दौरान सचिव मोहन सिंह बिष्ट, उपाध्यक्ष सुनील सिंह पुंडीर, भगवती पडलिया, योगेश चंद्र लोहनी, आदित्य कुमार, योगेंद्र कुमार पाठक, आरपी पांडे आदि मौजूद रहे।

# खेल विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों का सम्मान

शाह टाइम्स ब्यूरो

**हल्द्वानी।** 38वें राष्ट्रीय खेलों के सफलतम समापन पर हल्द्वानी स्पोर्ट्स एसोसिएशन ने खेल विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों सम्मान पत्र और शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया। इस मौके पर संस्था के अध्यक्ष नवीन वर्मा ने कहा कि इतने विशाल खेल समारोह को उत्कृष्ट तरीके से संपन्न करवाने में सभी खेल अधिकारियों, विभाग के सभी कर्मचारियों ने रात दिन मेहनत कर इस समारोह को भव्यता प्रदान की। उनकी मेहनत और लगन से खेल आयोजन बहुत शानदार तरीके से संपन्न हुआ। हम देश की पदक तालिका में सातवें स्थान पर आ गये। इसके लिए उत्तराखंड के खिलाड़ी भी सम्मान के पात्र है। संस्था के कार्यकारी अध्यक्ष मोहन बोरा ने कहा कि हमें राष्ट्रीय खेलों में जो अपार सफलता हमें मिली है, उसके हकदार हमारे खिलाड़ी और खेल विभाग के कर्मचारी हैं। इस अवसर पर महासचिव गोपाल बेलवाल, वरिष्ठ खिलाड़ी पुत्तन लाल, मनोज जोशी, विमल शर्मा, अनूप थथोला, रमेश मेहरा ने सहायक खेल निदेशक रसिका सिद्दीकी, जिला खेल अधिक. ारी ऊधमसिंह नगर जानकी कार्की, उपक्रीड़ा अधिकारी वरुण बेलवाल, फुटबॉल प्रशिक्षक किशोर पाल, ताइक्वांडो प्रशिक्षक शुभांगिनी साह, मनीष वर्मा, दिनेश रावत, श्याम भट्ट, किरण मौर्य, पूनम मेहता को सम्मानित किया।

### गंदगी पर बेकरी का किया चालान

**नैनीताल।** नगर के मल्लीताल क्षेत्र में मामुज बेकरी में गंदगी पर खाद्य सुरक्षा विभाग की कार्रवाई के बाद नगर पालिका ने भी सुध ली है। पालिका ने भी मामुज बेकरी में गंदगी होने पर पांच हजार का चालान काटा है। बता दें कि बीते बुधवार को मल्लीताल स्थित मामुज बेकरी में गंदगी मिलने व चाय के लाइसेंस पर बेकरी चलाने पर चालानी कार्रवाई की थी जिससे सुध लेते हुए पालिका की टीम भी चौकन्नी हो गई है। पालिका की टीम ने भी बेकरी का निरीक्षण कर गंदगी पाए जाने पर मामुज बेकरी संचालक के खिलाफ कार्रवाई की है। पालिका के कर निरीक्षक हिमांशु चंद्रा ने बताया कि गंदगी पर मामुज बेकरी संचालक के खिलाफ पांच हजार की चालानी कार्रवाई की गई है।

**कार्यालय नगर पालिका परिषद कालाढूंगी ( नैनीताल )**

**सार्वजनिक सूचना**

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि प्रार्थिनी देवकी देवी पत्नी श्री खीमानन्द निवासी ग्राम राधाबंगर गरवाल पो.ओ. हल्दूचौड़ लालकुआ जिला-नैनीताल द्वारा कालाढूंगी वार्ड न0-6 में मौ. जुनैद सिददीकी पुत्र श्री मो. अय्यूब से भवन क्रय किया गया है। जिसके पूरब में गली पश्चिम में सड़क उत्तर में मो. असलम का मकान व दक्षिण में श्री फारूख अहमद सिददीकी का मकान स्थित है। जिसका गृहकर प्रार्थिनी द्वारा अपने नाम हस्तान्तरण करने हेतु प्रार्थना पत्र शपथ पत्र व श्री मो. जुनैद सिददीकी का अनापत्ति का शपथ पत्र व रजिस्ट्री की छाया प्रति प्रस्तुत की गयी है। दिये गये शपथ पत्र व श्री मो. जुनेद सिददीकी का अनापत्ति का शपथ पत्र व रजिस्ट्री की छाया प्रति के आधार पर गृहकर करो के वसूली के परियोजनार्थ उक्त भवन का गृहकर देवकी देवी पत्नी श्री खीमानन्द निवासी ग्राम राधाबगर गरवाल पो.ओ. हल्दूचौड़ लालकुआं जिला-नैनीताल के नाम किया जाना इस आशय से प्रस्तावित है कि यदि भविषय में उक्त गृहकर हस्तान्तरण के सम्बन्ध में किसी के द्वारा कोई आपत्ति की जाती तो लगाया गया गृहकर स्वत: ही समाप्त हो जायेगा। नोट: यदि किसी को कोई आपत्ति व सुझाव हो तो इस सूचना जारी होने के 30 दिन के अन्दर लिखित आपत्ति व सुझाव अधोहस्ताक्षरी को प्रस्तुत करें। बाद म्याद आपत्ती में विचार नहीं किया जायेगा।

**अधिशासी अधिकारी**

**शाह टाइम्स**

स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **एस.एन. राना** द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजडू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं कृष्णा लोहा भण्डार, प्रथम तल काला ढुंगी रोड, हल्द्वानी (उत्तराखंड) से प्रकाशित।

**सम्पादक:**
**एस.एन. राना**
*कार्यकारी सम्पादक
**आनन्द बत्रा 'सुमन'**
☎05946-250286
मुख्यालय:
मोबाइल-9720007290
R.N.I.No. UTTHIN/2003/10264
**www.shahtimesnews.com**
email:shahtimes2015@gmail.com

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

# अधिवक्ता संशोधन विधेयक के खिलाफ धरना दूसरे दिन भी जारी

**उप निबंधक रुद्रपुर के प्रांगण में धरने पर बैठकर कार्य से रहे विरत**

शाह टाइम्स संवाददाता

**रुद्रपुर।** उत्तराखण्ड सरकार द्वारा समान नागरिक संहिता (यूसीसी) नियमावली लागू करके प्रदेश के हजारों अधिवक्ता एवं दस्तावेज लेखकों को विवाह पंजीकरण एवं वसीयत पंजीकरण आदि कार्यों से बाहर किये जाने के विरोध में आज दूसरे दिन रुद्रपुर उपनिबन्धक/तहसील रुद्रपुर में कार्य करने वाले अधिवक्ता व दस्तावेज लेखक कार्यालय उप निबंधक रुद्रपुर के प्रांगण में धरने पर बैठकर कार्य से विरत रहे।

धरना स्थल पर संबोधित करते हुए वरिष्ठ दस्तावेज लेखक चंचल सिंह धपोला ने कहा कि अधिवक्ता व दस्तावेज लेखक आजादी से भी पूर्व से उपनिबन्धक व तहसीलों में रजिस्ट्री बैनामा संबंधित कार्य करके अपनी आजीविका चलाते चले आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड सरकार द्वारा समान नागरिक संहिता नियमावली, 2025 लागू करने के पश्चात वसीयत पंजीकरण व विवाह पंजीकरण आदि कार्यों से अचानक प्रदेश के हजारों वकीलों व दस्तावेज लेखकों को अलग कर दिया गया है। जिसका विरोध सम्पूर्ण उत्तराखंड के अधिवक्ता व दस्तावेज लेखक कर रहे हैं। साथ ही मीडिया के माध्यम से जानकारी प्राप्त हो रहा कि राज्य सरकार द्वारा रजिस्ट्री बैनामा आदि कार्यों को पेपर लैस करने जा रही है। कही ऐसा न हो कि सरकार उक्त कार्यों से भी हमें बाहर कर दें यदि सरकार ऐसा करती है तो प्रदेश के हजारों अधिवक्ता व दस्तावेज लेखकों के समक्ष रोजी-रोटी का संकट उत्पन्न हो जायेगा। अन्य वक्ताओं ने कहा कि सरकार द्वारा यूसीसी की जो नई वेबसाइट बनाई है उसमें अधिवक्ताओं व दस्तावेज लेखकों को स्थान नहीं दिया गया है तथा अधिवक्ताओं व दस्तावेज लेखकों के स्थान पर सीएससी सेंटर को स्थान दिया गया है। वक्ताओं ने सरकार से मांग की यूसीसी पोर्टल पर सीएससी सेंटरों को हटाकर पूर्व की भांति वकीलों व दस्तावेज लेखकों को स्थान दिया जाए।

इस अवसर पर दस्तावेज लेखक लक्ष्मी नारायण सक्सेना, एडवोकेट राजीव सक्सेना, निरंजन पन्त, दस्तावेज लेखक रणजीत सिंह, दिनेश कुमार, रविशरण श्रीवास्तव, चंचल सिंह धापोला, भगवान दास, एडवोकेट श्यामपाल सिंह मेहरा, अशोक कुमार सागर, प्रमोद मित्तल, मनीष मित्तल, एहसान दानिश, विरेन्द्र कुशवाहा, विपेन्द्र कुमार गुप्ता, दलजीत सिंह, सुनील कुमार, जगद. ेश सागर, गुरदीप सिंह, दिवाकर पाण्डेय, डींपल भण्डारी, रोहित गड़ाकोटी, भजन बत्र, जसपाल सिंह, राजेश विश्वास, जीवन चन्द्र जोशी, अशोक चन्द्र, अरूण जुनेजा, नितिन राठौर, ओम प्रकाज श्रीवास्तव, नरेन्द्र सिंह, दीपक कुमार, उदय राठौर, शावेस (सोनू), सरस गुप्ता, रोहित राठौर, गणेश चन्द्र, महीपाल सिंह, दस्तावेज लेखक चन्द्र शेखर शर्मा, एडवोकेट मुनीष गिरी, दस्तावेज लेखक कपिल छाबड़ा, कीर्तिबल्लभ पनेरू, अबरार अली, उत्तम मण्डल, सगीर अहमद, प्रवीण सिंह, शुभम पाल, भुवन चन्द्र अवस्थी, स्टाम्प वैण्डर सुनील बजाज, मो. आजम, रविन्द्र नाथ, सुरेश राणा, संजीव रंग, पूजा अरोरा, सौरभ कुमार, गौरव सक्सेना आदि मौजूद रहे।

## उत्तराखंड बोर्ड की 10वीं व 12वीं की परीक्षाएं शुरू

शाह टाइम्स संवाददाता

**जसपुर।** उत्तराखंड विद्यालय शिक्षा परिषद रामनगर (नैनीताल) बोर्ड की 10वीं व 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाएं शुक्रवार से शुरू हो गई हैं। जसपुर ब्लॉक में परीक्षा के कुल 13 केंद्र बनाए गए हैं इन केन्द्रों पर हाई स्कूल के 2393 व इंटरमीडिएट के 2045 छात्र-छात्राएं परीक्षा देंगे। सबसे अधिक छात्र-छात्राएं नेहरू राजकीय इंटर कॉलेज में तथा सबसे कम बच्चे हमीरा वाला कालेज परीक्षा केंद्र पर परीक्षा देंगे।

प्रत्येक परीक्षा केंद्र पर केंद्र निरीक्षक की ड्यूटी लगाई गई है तथा केंद्र व्यवस्थापक एवं कस्टोडियन भी नियुक्त किए गए हैं। बीआरसी के प्रधान सहायक बोर्ड एवं परीक्षा प्रभारी अजीम खान ने बताया कि प्रत्येक परीक्षा केंद्र में कक्षा निरीक्षकों की नियुक्ति कर दी गई है तथा केंद्र व्यवस्थापक व कस्टोडियन द्वारा कक्ष निरीक्षकों से बैठक ले ली गई है। परीक्षा के दौरान प्रतिदिन अनुचित साधन के प्रयोग के प्रकरण एवं उपस्थिति की सूचना बोर्ड परीक्षा को दी जाएगी।

जसपुर एसडीएम चतर सिंह चौहान ने बताया कि 13 परीक्षा केंद्रों पर निषेधाज्ञा लागू कर दी गई है।

# घायल फैक्ट्री कर्मी की उपचार के दौरान मौत

शाह टाइम्स संवाददाता

**रुद्रपुर।** बीते दिनों फैक्ट्री में अचानक गिरने से घायल हुए आवास विकास निवासी फैक्ट्री कर्मचारी की शुक्रवार को उपचार के दौरान निजी अस्पताल में उसकी मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। घटना से परिजनों में कोहराम मचा है।

जानकारी के अनुसार आवास विकास निवासी 41 वर्षीय राकेश यादव पुत्र राम निवास मलसा रोड स्थित एक कंपनी में सिक्योरिटी सुप. रवाइजर के रूप में कार्यरत था। बीती 16 फरवरी को कंपनी में काम करते वक्त वह अचानक गिर गया। सिर पर गंभीर चोट आने के कारण उसे जिला अस्पताल ले जाया गया जहां हालत गंभीर देखकर चिकित्सकों ने हायर सेंटर रेफर कर दिया। परिजन राकेश को किच्छा रोड स्थित निजी अस्पताल ले गए।

शुक्रवार सुबह उपचार के दौरान राकेश की मौत हो गयी। सूचना पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। घटना से परिजनों में कोहराम मचा है। वहीं निधन की सूचना पर समाजसेवी सुशील गावा समेत तमाम लोगों ने अस्पताल पहुंचकर मृतक के परिजनों को ढांढस बंधाया।

## गत रात्रि बस की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत

शाह टाइम्स संवाददाता

**रुद्रपुर।** गत रात्रि सिरसा चौकी के पास रोड़वेज बस की टक्कर से बाईक सवार युवक की मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस ने शव अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया।

जानकारी के अनुसार मूल रूप से ग्राम भूरा कैमोर थाना अमरिया पीलीभीत निवासी 25 वर्षीय नरेश पाल मौर्य पुत्र केसरी प्रसाद कंपनी वाहन का चालक था। बताया जाता है कि गत दिवस वह अपने एक दोस्त के घर विवाह समारोह में शामिल होने के लिए अपनी मोटरसाइकिल संख्या यूपी 26 एपी 7555 पर सवार होकर किच्छा के ग्राम बरा आया था। जहां से रात्रि में नरेश अपनी बहन के घर के सपीप एक अन्य समारोह में शामिल होने के लिए जा रहा था मार्ग में सिरसा चौकी के पास पीछे की ओर से तेज गति से आती रोड़वेज बस के अज्ञात चालक ने उसे टक्कर मार दी। जिससे नरेश बस की चपेट में आकर गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे उपचार के लिए यहां चिकित्सालय ले जाया गया। जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। वहीं घटना की जानकारी मिलते ही मृतक नरेश के परिजन भी यहां आ पहुंचे और उनमें कोहराम मच गया। पुलिस ने घटनास्थल से दोनों वाहनों को अपने कब्जे में ले लिया है।

## एक नजर

### हादसे में घायल बाइक सवार की इलाज के दौरान मौत

शाह टाइम्स संवाददाता

**जसपुर।** ध्याननगर के पास तीन दिन पहले बाइक व ट्रैक्टर ट्राली में हुई भिड़ंत में दो बाइक सवार घायल हो गए थे, जिन्हें पुलिस द्वारा जसपुर साम. ुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कर गया था। हालत गंभीर होने पर उन्हें दूसरे हायर सेंटर रेफर कर दिया गया था, जहां पर परिजनों द्वारा दोनों घायलों को प्राइवेट अस्पताल काशीपुर में भर्ती कराया गया था, जिनमें से एक बाइक सवार की गंभीर हालत में इलाज के दौरान मौत हो गई। बताया जा रहा है कि घायल घायल दोनों व्यक्ति हरपाल फौजी व जयपाल सिंह पुत्र उदल सिंह सगे भाई हैं, जिनमें से जयपाल सिंह की इलाज के दौरान मृत्यु हो गई। दोनों यूपी के थाना भगतपुर के ग्राम बिलावाला के निवासी थे।

### हरिद्वार से गंगाजल लाने वाले शिव भक्तों के स्वागत की तैयारी शुरू

शाह टाइम्स संवाददाता

**जसपुर।** हरिद्वार से गंगाजल लेकर शिव भक्त आना शुरू हो गए हैं। आज शुक्रवार को भूतपुरी से लेकर जसपुर तक जगह- जगह नागरिकों द्वारा शिव भक्तों के स्वागत के लिए भंडारे चलाए जाने की तैयारी चलने लगी हैं। इसी क्रम में नादे. ही शुगर मिल के गेट के सामने शिव भक्तों की सेवा के लिए लगाया भंडारा विगत 30 वर्षों से लगातार सेवा करता आ रहा है। इस भंडारे में सभी चीनी मिल कर्मचारियों/अधिकारियों का अपना योगदान होता हैं।

### कृषि मंत्री करेंगे कृषि विज्ञान सम्मेलन का समापन

शाह टाइम्स संवाददाता

**रुद्रपुर।** प्रदेश के कृषि, कृषक कल्याण, सैनिक कल्याण एवं ग्राम्य विकास मंत्री गणेश जोशी 21 फरवरी को हल्द्वानी से कार द्वारा प्रस्थान कर रात्रि 8.45 बजे एनेक्सी भवन पंतनगर पहुंचकर रात्रि विश्राम करेंगे। कृषि मंत्री 22 फरवरी को 12 बजे राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के 17वें कृषि विज्ञान सम्मेलन के समापन कार्यक्रम में प्रतिभाग करेंगे। तदुपरांत मंत्री अपराह्न दो बजे देहरादून के लिए प्रस्थान करेंगे।

### बोर्ड परीक्षाओं के चलते धारा 163 लागू

शाह टाइम्स संवाददाता

**रामनगर।** उत्तराखंड विद्यालयी परिषद रामनगर द्वारा आयोजित परिषदीय परीक्षा की हाई स्कूल और इंटरमीडिएट परीक्षाएं शुक्रवार से शुरू हो गई हैं। उप जिलाधिकारी रामनगर राहुल शाह ने परीक्षाओं के सुचारू रूप से संच. ालन एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराए जाने के लिए रामनगर परगना क्षेत्रांतर्गत परीक्षा केंद्रों के चारों तरफ 200 मीटर की परिधि में तत्काल प्रभाव से धारा 163 लागू की गई है। इस दौरान परगना रामनगर अंतर्गत स्थित परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर की परिधि के क्षेत्रांतर्गत जिला मजिस्ट्रेट, अपर जिला मजिस्ट्रेट,संबंधित क्षेत्रीय मजिस्ट्रेट की पूर्वानुमति के बिना प्रवेश नहीं करेंगे। कोई भी परीक्षार्थी,व्यक्ति किसी भी प्रकार शस्त्र, लाठी, डंडा, आदि लेकर परीक्षा स्थल और उसकी 200 मीटर की परिधि में नहीं आएगा। परीक्षा स्थलों के 200 मीटर की परिधि के अंतर्गत ध्वनि विस्तारक यंत्रों लाउडस्पीकर, डीजे. आदि का प्रयोग वर्जित रहेगा। बताया कि किस भी तरह का उल्लंघन करने पर आरोपी व्यक्ति के खिलाफ मामला दर्ज किया जाएगा।

### हज जिला ट्रेनर के लिए मो. नईम का चयन

शाह टाइम्स संवाददाता

**रामनगर।** हज 2025 के चयनित हाजियों को सफर की बारीकियां और जरूरी बातें सिखाने के इंतजाम स्टेट हज कमेटी ओर राज्य हज कमेटी करती आई है। इसके लिए इस साल भी हज ट्रेनर्स नियुक्त किए जा रहे हैं। कमेटी ने इसके लिए योग्य उम्मीदवारों का चयन किया गया हैं। चुने गए मास्टर हज ट्रेनर मुंबई हज कमेटी से प्रशिक्षण लेकर आएंगे। इसके बाद प्रदेश के हाजियों को हज ट्रेनिंग देंगे। उत्तराखंड जिला मास्टर हज ट्रेनर के लिए मोहम्मद नईम रामनगर को चयनित किया गया है। हज से जुड़ी जानकारी के लिए 7017214384 पर सम्पर्क कर सकते है।इधर सैफी के चयन पर क्षेत्रवासियों ने उन्हें मुबारकबाद देते हुऐ हज कमेटी के प्रति आभार व्यक्त किया है।

### उप डाकघर में सौन्दर्यीकरण का कार्य शुरू

शाह टाइम्स संवाददाता

**रामनगर।** रामनगर उप डाकघर में डाकघर की बिल्डिंग का सौन्दर्यकरण का कार्य चल रहा हैं। शुक्रवार को सौन्दर्यकरण कार्य की समीक्षा और कार्यालय निरीक्षण के लिए शुक्रवार को मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल उत्तराखण्ड परिमण्डल शशि शालिनी और प्रवर अधीक्षक डाक नैनीताल मण्डल अमित दत्त रामनगर डाकघर पहुंचे। उन्होंने बिल्डिंग सौन्दर्यकरण कार्य व डाकघर में और बेहतर सेवाएं प्रदान करने के लिए आवश्यक निर्देश दिए और मुख्य पोस्ट मास्टर जनरल उत्तराखण्ड परिमण्डल व प्रवर अधीक्षक डाक नैनीताल मण्डल द्वारा रामनगर डाकघर परिसर में वृक्षारोपण भी किया गया। उनके साथ पोस्ट मास्टर रामनगर जीएस गंगोला , सहायक पोस्ट मास्टर गुलजार हुसैन, निरीक्षक डाकघर रामनगर उप मण्डल हेमंत यादव, यतेंद्र यादव, मनोज कुमार, चंद्रशेखर गोस्वामी, संजय, अनिकेत, कपिल, सुरेंद्र, गुरचरण आदि मौजूद रहे।

## आवास की मांग को लेकर ग्रामीणों का विकास भवन पर प्रदर्शन

शाह टाइम्स संवाददाता

**रुद्रपुर।** गदरपुर के ग्राम बरीराई के ग्रामीणों ने आज प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवास की मांग करते हुए विकास भवन के समक्ष प्रदर्शन कर सीडीओ को ज्ञापन सौंपा।

ग्रामीणों का कहना है कि प्रधान मंत्री आवाए योजना के अन्तर्गत सर्वे प्रारम्भ हो गया है। जिसके तहत गरीब एव झोपडी में वालों को आवास मिलना है। इस योजना में आवादी की भूमि अथवा रजिस्ट्री की भूमि पर ही आवास दिया जा रहा है। उनका कहना है कि योजना के अंतर्गत अनेकों लाभार्थी है जिनकी भूमि मूल व्यक्ति के नाम है गरीब व्यक्ति रजिस्ट्री नहीं करा सकता है। इस संदर्भ में मूल व्यक्ति को कोई आपत्ति नहीं है। पूर्व में भी ऐसे लाभार्थियों को आवास दिए गए हैं। इस दौरान सुरजन सरदार, अमृत विश्वास, रंजीत, प्रमोद, श्यामल, रविन्द्र, उत्तम, कालीपद, सपना, कमल, रोहित, दीपाली, ममता, नम्रता, मल्लिका आदि मौजूद थे।

## अधिवक्ता संशोधन अधिनियम बिल के खिलाफ कोर्ट परिसर में वकीलों का प्रदर्शन

शाह टाइम्स संवाददाता

**रुद्रपुर।** केंद्र सरकार द्वारा देश में लाये गये अधिवक्ता संशोधन अधिनियम बिल 2025 के विरोध में जिला बार एसोसिएशन द्वारा आज जिला न्यायालय परिसर में नारेबाजी कर जोरदार प्रदर्शन किया गया और संशोधन बिल को वापस देने की मांग की।

अधिवक्ता संशोधन बिल के माध्यम से अधिवक्ताओं के अधिकारों के हनन और उन पर सरकारों के नियंत्रण लाने की बात कहते हुए अधिवक्ता संशोधन बिल का विरोध किया गया। इस बिल के विरोध में जिला बार एसोसिएशन द्वारा जनपद स्तर पर आंदोलन चलाने का निर्णय लिया गया। अध्यक्ष दिवाकर पांडे ने बताया कि अधिवक्ता इसके विरोध में उधम सिंह नगर की सभी बार एसोसिएशन को साथ लेकर हड़ताल पर रहेंगे। इस दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता वीरेंद्र चौधरी, नरेश छाबड़ा, गुरबाज सिंह, नरेश रस्तोगी, पियूष पंत, उमा गक्खर, शिवकुंवर सिंह, राहुल प्रजापति, संजीव फोगाट, अमित छाबड़ा, धर्मेंद्र शर्मा, राशिद हुसैन, कमल चिलाना, मनोज तनेजा, सुरेंद्र नरूला, राजेंद्र सिंह नारंग, परविंदर सिंह, रिजवान खान, बलबीर चौहान, इंद्रजीत पॉल, राजेश यादव, नंदनंदन सागर, राजीव ग्रोवर, शाहिद हुसैन, सुरेंद्र गिरधर, पावेल कठायत, रक्षपाल सिंह, सोमिल घीक, शुभम गगनेजा, रोहित अरोरा, गौरव मिड्ढा, होमी जहांगीर कुरैशी, गुरवीर सिंह, डीएन जयसवाल, सुशीला मेहता, अखलाक अहमद, उमेशनाथ पांडे, अमनदीप कौर, सुधीर सिंह, आरएस रावत, सूरज सक्सेना, जसवंत सिंह, मुकेश मिश्रा आदि मौजूद थे।

## पत्रकार असद के पिता के निधन पर जताया शोक

शाह टाइम्स संवाददाता

**खटीमा।** पत्रकार असद जावेद के पिता मकसूद अली (80) का गुरुवार की रात्रि लगभग दो बजे लंबी बीमारी के बाद देहांत हो गया। वहीं सूचना पर पहुंचे क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों, प्रतिनिधियों तथा स्थानीय पत्रकारों ने शोक व्यक्त किया। पत्रकार असद जावेद के पिता मकसूद अली स्वास्थ्य विभाग से सेवानिवृत थे और काफी लंबे समय से बीमार चल रहे थे। वहीं बुधवार को तबीयत बिगड़ने पर उन्हें उप जिला चिकित्सालय खटीमा में भर्ती कराया गया था, जहां गुरुवार को तड़के उनका निधन हो गया।

इस दौरान प्रवीन कोहली, हीरा राजपूत, ओमप्रकाश मौर्य, खड़क सिंह गैड़ा, जितेंद्र पारूथी, दीपक फुलेरा, मुस्तकीम मलिक, इशियाक अंसारी, स्वतंत्र प्रकाश आजाद, गोरख नाथ, सुनील सैनी, सूरज गुसाईं, करन सतवाल, अनीस अहमद, सुरेंद्र गुप्ता तथा शंकर पलियाल आदि पत्रकार मौजूद रहे।

## सतमार्ग को प्रेरित करता है संतों का जीवन चरित्र: बाबा बंता सिंह

**बाबा कुंदन सिंह जन्म शताब्दी को समर्पित तीन दिवसीय समागम संपन्न**

**समागम में धार्मिक प्रचारकों ने किया संत महिमा का गुणगान**

शाह टाइम्स संवाददाता

**बाजपुर।** गुरुद्वारा नानकसर ठाठ गजरौला में धन धन बाबा कुंदन सिंह की जन्म शताब्दी को समर्पित तीन दिवसीय धार्मिक समागम श्रद्धापूर्वक संपन्न हो गया। समागम में पंथप्रसिद्ध धार्मिक प्रचारकों ने संत महिमा का गुणगान करते हुए बाबा कुंदन सिंह जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला।

पंजाब से आए अंतरराष्ट्रीय कथावाचक बाबा बंता सिंह ने कहा कि संतों का मुख्य उद्देश्य जन मानस की भलाई व सेवा सिमरन होता है। संतों का जीवन चरित्र समाज को सतमार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। बाबा कुंदन सिंह जी का जीवन चरित्र इसकी एक मिसाल है। समागम में संत बाबा सुखदेव सिंह भुच्चो साहब वालों ने कहा कि नानकसर संप्रदाय में बाबा कुंदन सिंह ने सेवा और सिमरन के साथ जोड़ने के लिए विभिन्न प्रदेशों में गुरुघरों के निर्माण की श्रृंखला चलाई।

बाबा अमरजीत सिंह गालिब खुर्द वाले, भाई दिलजीत सिंह खालसा, ज्ञानी गुरु प्रताप सिंह सुगा, ज्ञानी त्रिलोक सिंह यूके, ज्ञानी जगदीश सिंह,बाबा पाल सिंह मोहम्मदी, बाबा गुरमीत सिंह, जत्थेदार गुरबख्श सिंह तरना दल, जत्थेदार जयमल सिंह, भाई मंजीत सिंह बॉम्बे, बाबा करनैल सिंह हजीरा, बाबा बलदेव सिंह पीलीभीत आदि ने भी कथा कीर्तन के माध्यम से बाबा कुंदन सिंह के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। गुरुद्वारे के मुख्य सरदार बाबा प्रताप सिंह द्वारा आए हुए जत्थों को स्मृति चिन्ह और अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। समागम का संचालन कथावाचक हरपाल सिंह खालसा द्वारा किया गया।

इस मौके पर एसजीपीसी के प्रति. निधि प्रताप सिंह, देवेंद्र सिंह, गुरमुख सिंह, अमरीक सिंह सलवंत सिंह, कश्मीर सिंह, हरजिंदर सिंह, गुरदेव सिंह आदि उपस्थित रहे।

## रक्तदान शिविर में 23 लोगों ने किया रक्तदान

**बाजपुर।** समागम के दौरान सेवा चौरिटेबल ब्लड बैंक के सौजन्य से आयोजित किए गए धन धन बाबा कुंदन सिंह यादकारी खून दान कैंप में 23 लोगों ने रक्तदान किया। रक्तदान शिविर का शुभारंभ गुरुद्वारा नानकसर ठाठ के मुख्य सेवादार बाबा प्रताप सिंह द्वारा फीता काटकर किया गया। इस मौके पर जगतार सिंह बाजवा, सौरभ परमार, विकास चौधरी, डॉक्टर मुबारक हुसैन, प्रिया सक्सेना, हरविंदर सिंह, गुरलाल सिंह, गुरजीत सिंह, योगेश सैनी, खेमकरण, राजकिशोर सिंह, रतन बाजवा, निशान सिंह, आदि उपस्थित रहे।

## 24 श्रद्धालुओं ने किया अमृत पान

**बाजपुर।** समागम के दौरान गुरुद्वारा नानकसर घाट गजरौला में पांच प्यारों की अगुवाई में इच्छुक श्रद्धालुओं को पवित्र अमृत पान कराया गया एवं सत मार्ग पर चलने सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का संकल्प कराया गया।

## आगामी वर्ष के समागम में होंगे सामूहिक विवाह

**बाजपुर।** गुरुद्वारा नानकसर ठाठ के मुख्य सेवादार बाबा प्रताप सिंह ने बताया कि आगामी वर्ष में समागम के दौरान सामूहिक विवाह भी आयोजित किए जाएंगे, जिसमें जरूरतमंद परिवारों के दहेज रहित विवाह संपन्न कराए जाएंगे।

## राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन आठ मार्च को

शाह टाइम्स संवाददाता

**रुद्रपुर।** सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण योगेन्द्र कुमार सागर ने बताया कि उत्तराखण्ड राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, नैनीताल के तत्वाधान में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, ऊधम सिंह नगर द्वारा जनपद में आठ मार्च 2025 (द्वितीय शनिवार) को प्रातः 10 बजे से सांय पांच बजे तक रुद्रपुर सहित वाह्य स्थित दीवानी न्यायालयों काशीपुर, खटीमा, बाजपुर, जसपुर, सितारगंज एवं किच्छा में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा।

सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण योगेन्द्र कुमार सागर ने बताया कि आठ मार्च को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत में प्री-लिटिगेशन के वादों का निस्तारण किया जाएगा जैसे- भरण पोषण, धन वसूली, श्रम विवाद, विद्युत एवं जलकर बिलों के मामले, धारा 138 एनआई एक्ट के मामले, अपराधिक शमनीय व सिविल मामले इसके अतिरिक्त न्यायालयों में लम्बित शमनीय प्रकृतिक के आपराधिक वाद/अपराध, धारा 138 एनआई एक्ट, धन वसूली, मोटर दुर्घटना प्रतिकर वाद, श्रम विवाद, विद्युत व जल कर बिल संबंधित, वैवाहिक मामले तलाक को छोड़कर, भूमि अधिग्रहण, भुगतान व भत्तों से सम्बन्धित सर्विस के मामले, जिला न्यायालय में लंबित राजस्व वाद, मोटर वाहन अधिनियम के शमनीय अपराधों के चालान, सिविल मामले (किरायेदारी, सुखाधिकार, व्यादेश) का निस्तारण किया जाएगा। उन्होंने अपील करते हुए कहा कि जो भी व्यक्ति अपने वादों/मामलों को राष्ट्रीय लोक अदालत में निस्तारण करवाना चाहते हैं वे सम्बन्धित न्यायालय में किसी भी कार्य दिवस में स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से संबोधित न्यायालय में प्रार्थना पत्र देकर अपने वादों को नियत करवा सकते है या जिला न्यायालय परिसर में स्थित एडीआर केन्द्र रुद्रपुर में स्वयं अथवा जरिए अधिवक्ता अपना आवेदन प्रस्तुत कर सकते है। उन्होंने कहा है कि अधिक जानकारी के लिए सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जिला न्यायालय परिसर एडीआर केन्द्र रुद्रपुर के हैल्प डैस्क नं.-9411531449, ई-मेल-dslausnagar@gmail.com फोन नं.-05944-250682 पर सम्पर्क कर सकते है।

# अधिवक्ता अधिनियम संशोधन विधेयक वापस लेने को लेकर किया कार्य बहिष्कार

शाह टाइम्स संवाददाता

**रामनगर।** केंद्र सरकार द्वारा अधिवक्ता अधिनियम 1961 में चिंताजनक संशोधन प्रस्तावित किए हैं, इसके विरोध में शुक्रवार को रामनगर बार एसोसिएशन के तहत अधिवक्ताओं ने एक ज्ञापन उप जिलाधिकारी राहुल शाह के माध्यम से केंद्रीय कानून मंत्री को भेजते हुए इसे तत्काल वापस लेने की मांग की है।

शुक्रवार को बार एसोसिएशन कार्यालय में अधिवक्ताओं की हुई बैठक में मौजूद अधिवक्ताओं ने सरकार के इस फैसले का विरोध करते हुए कहा कि यह एक्ट लागू होने के बाद अधिवक्ताओं के मौलिक अधिकारों का हनन होगा। उन्होंने कहा जिसे सहन नहीं किया जाएगा तो वहीं अधिवक्ताओं ने उत्तराखंड बर काउंसिल के प्रति भी अपनी नाराजगी व्यक्त की। रामनगर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष एडवोकेट ललित तिवारी ने कहा कि इस एक्ट को बिना सर तो वापस लिया जाए तथा केंद्र सरकार के अनावश्यक हस्तक्षेप को अस्वीकार किया जाए तथा बार काउंसिल आफ इंडिया एवं राज्यपालों की स्वायत्तता सुरक्षित रखी जाए।

इस दौरान रामनगर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष ललित मोहन तिवारीसचिव संतोष देवरानी, उपाध्यक्ष ललित मोहन पांडे, गणेश कुमार गगन, रणजीत सिंह, बलवंत सिंह, मोहम्मद यूनुस, हिमांशु अग्रवाल,जावेद अख्तर, गिरधर सिंह बिष्ट, सुहाना तबस्सुम, फईम सिद्दीकी आदि मौजूद रहे।

# स्वागत समारोह कार्यक्रम को लेकर भाजपा कार्यकर्ताओं की हुई बैठक

**नगर पालिका अध्यक्ष रामू जोशी ने सौंपी जिम्मेदारी**

शाह टाइम्स संवाददाता

**खटीमा।** भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं की बैठक नगर पालिका सभागार में संपन्न हुई बैठक में आगामी 25 फरवरी को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के खटीमा आगमन पर उनका नागरिक अभिनंदनव को लेकर चर्चा की गई।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए नगर पालिकाध्यक्ष रमेश चंद्र जोशी ने कहा कि 25 फरवरी मंगलवार दोपहर 2:00 बजे मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की भव्य नागरिक अभिनंदन कार्यक्रम इंटर कॉलेज में संपन्न होगा। मुख्यमंत्री के गृह क्षेत्र खटीमा में भारतीय जनता पार्टी की नगर पालि. का चुनाव में ऐतिहासिक जीत के लिए धन्यवाद अभिनंदन कार्यक्रम किया जाएगा, जिसमें पार्टी के सभी कार्यकर्ता एवं निर्वाचित सभासद मौजूद रहेंगे। बैठक में मुख्य रूप से पूर्व जिला पंचायत सदस्य किशन सिंह, जिला उपाध्यक्ष मोहनी पोखरिया, नगर महामंत्री मनोज बाधवा, दीपक तिवारी, नीलू गुप्ता, विनीत सक्सेना, अनीता, ज्याला, अनुपमा शर्मा, भुवन जोशी, किशोर जोशी, कामिल खान, जानकी गोस्वामी, गोकुल ओली, प्रकाश शर्मा, महेश राणा, विक्की अंसारी, रमेश जोशी, कुंदन बोरा, जितेंद्र सिंह, विजय गुप्ता, रामू भारती, तारिक मालिक, राजू कुरैशी, जावेद रजा, बॉबी ढींगरा, अमानत हुसैन, अनवार अहमद, प्रदीप गुप्ता, सूरज धामी, विजय प्रधान, राहुल सक्सेना, राजनाथ मौर्य, करण, गणेश जोशी, गोविंद ठुकराती, जफर खान आदि उपस्थित थे।

दैनिक शाह टाइम्स में विज्ञापन व समाचार के लिए संपर्क करें।
9759273715
rudrapurst2020@gmail.com

# राज्य के थाने भी प्राइवेट कंपनी को बेचने में लगी है धामी सरकार: यशपाल आर्य

■ माइनिंग कंपनी इस काम के बदले राज्य सरकार को देगी 303.52 करोड़ रुपये

शाह टाइम्स संवाददाता

**बाजपुर।** कांग्रेस नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने विधानसभा सत्र में कहा कि उत्तराखण्ड में धामी सरकार ने कैलाश रिवर बैंड माइनिंग (नदी के तल में खनन) करने वालों से रॉयल्टी और दूसरे टैक्स वसूलने और अवैध खनन पर लगाम लगाने का कार्य और शक्तियां निजी हाथों में सौंप दी हैं। पहली बार देखा जा रहा है राज्य सरकार पुलिस व्यवस्था, टैक्स लेना और पर्यावरण संरक्षण जैसे राज्य के कामकाज को निजी कंपनियों को दे रही हैं।

सरकार ने नियम बनाया है कि, जो निजी कंपनी रिवरबेड माइनिंग से टैक्स वसूलेगी उसे नदियों में खनन करने के लिए दूसरी कंपनियों की तुलना में प्राथमिकता दी जाएगी। खनन रॉयल्टी संग्रह का काम के लिए हैदराबाद स्थित निजी कंपनी पावर मेक प्रोजेक्ट्स लिमिटेड को आउटसोर्स किया गया है। ये कंपनी ने चार बड़े जिलों नैनीताल, हरिद्वार, उधम सिंह नगर और देहरादून में पांच सालों तक रॉयल्टी इकट्ठा करेगी। कंपनी राज्य को इस काम के बदले 303.52 करोड़ रुपये देगी।

बाकी लाभ का सारा पैसा कंपनी के खाते में जायेगा।निजी कंपनी स्थानीय माइनरों और ट्रांसपोर्टरों से रॉयल्टी वसूल करेगी। क्या इससे अत्यधिक खनन नहीं होगा। क्योंकि निजी कंपनी सरकार को दी गई धनरा. शि वसूलने के साथ ऊपर से बड़ा मुनाफा भी कमाना चाहेगी।

निजी हाथों में देना वैसा ही है जैसे एक पुलिस स्टेशन के काम के लिए निजी कंपनी को आउटसोर्स करना। यदि यही गति रही तो सरकार थाने भी ठेके पर दे देगी। पेपर लीक माफिया, खनन माफिया, भू माफिया इन सब पर तो सरकार ने ध्यान देना ही बंद कर दिया है।

आज राज्य के प्राकृतिक संसाधनों के आकर्षक व्यापार पर दूसरे राज्यों से आए लोग कब्जा कर रहे हैं और उत्तराखंड का मूल निवासी अपने जल जंगल जमीन को दोनों हाथों से लूटते देख रहा है ।

# अधिवक्ताओं ने की अमेंडमेंट बिल के विरोध में अनिश्चितकालीन हड़ताल

■ रजिस्टार कार्यालय में जाकर हंगामा कर प्रदर्शन किया

■ अमेंडमेंट बिल से अधिवक्ताओं की स्वतंत्रता को सबसे बड़ा खतरा: सुरेंद्र शर्मा

■ कोर्ट मैरिज, वसीयत और बैनामा, रजिस्ट्री पेपर लेस में किया जाए संशोधन

शाह टाइम्स संवाददाता

**बाजपुर।** प्रस्तावित अधिवक्ता अमेंडमेंट बिल के विरोध में दर्जनों आक्रोशित बाजपुर बार एसोसिएशन के अधिवक्ताओं ने विरोध प्रदर्शन कर अनिश्चितकालीन हड़ताल करते हुए रजिस्टार कार्यालय में जाकर भी प्रदर्शन करते हुए चेतावनी देते हुए कहा कि जब तक केंद्र सरकार इस बिल को वापस नहीं कर लेती संघर्ष जारी रहेगा।

बाजपुर बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा ने अधिवक्ताओं साथ लेकर अनिश्चितकालीन हड़ताल करने का ऐलान किया। बाजपुर बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष सुरेंद्र शर्मा ने कहा उत्तराखंड सरकार द्वारा यूसीसी कानून में संशोधन करें, जिसमें कोर्ट मैरिज, वसीयत और बैनामा, रजिस्ट्री पेपर लेस में संशोधन किया जाए। उन्होंने कहा अधिवक्ता अधिनियम 1961 में सरकार द्वारा प्रस्तावित हालिया संशोधन के खिलाफ देश भर में अधिवक्ताओं द्वारा जमकर विरोध किया जा रहा है। न्यायिक अभ्यास' के प्रभावी कार्यान्वयन के नाम पर वकीलों की प्रैक्टिस के लिए खतरा हैं। बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष सोहनलाल गोयल ने कहा कि इस कानून से अधिवक्ताओं की स्वतंत्रता को बड़ा खतरा है। मुवक्किल अपने वकीलों पर मुकदमा कर सकते हैं। परंपरागत रूप से कानूनी पेशे में दुराचरण केवल पेशेवर नैतिकता के उल्लंघन तक सीमित रहा है, जैसे कि धोखाधड़ी, गलत बयानी या मुवक्किल की गोपनीयता का उल्लंघन। हालिया प्रस्तावित संशोधन के तहत धारा 45 बी में 'दुराचरण 'की परिभाषा का विस्तार किया गया है, जिसमें अधिवक्ता की कार्रवाई के कारण मुवक्किल को हुए वित्तीय नुकसान को भी शामिल किया गया है।

उन्होंने कहा कि इस कानून में संशोधन नहीं किया गया तो अधिवक्ताओं का संघर्ष जारी रहेगा। इस मौके पर सुरेंद्र शर्मा, सूरज प्रकाश शर्मा, योगेश पाठक, हीरा शर्मा, सुरजीत सिंह, इकबाल हुसैन, सरफराज अली, वसीम अकरम, मनोज शर्मा, विवेक चौबे, अनिकेत मैनी, सूरज सागर, दीपिका यादव, सतनाम सिंह बहादुर भंडारी, विकास कश्यप आदि मौजूद रहे।

# हाथों में बेड़ियां और पैरों में जंजीर बांधकर कांग्रेसियों ने किया ट्रंप और मोदी सरकार के खिलाफ प्रदर्शन

■ भारत के गौरवशाली इतिहास को शर्मसार करने वाली घटना: बॉबी राठौर

■ ट्रंप सरकार द्वारा भारतीय प्रवासियों के साथ अपमानजनक और अमानवीय व्यवहार के बाद भी प्रधानमंत्री चुप

शाह टाइम्स संवाददाता

**खटीमा।** मुख्य चौक पर कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य बॉबी राठौर के नेतृत्व में अमेरिका सरकार द्वारा प्रवासी भारतीयों के साथ किए गए अमानवीय और अपमानजनक व्यवहार पर गुस्सा जाहिर करते हुए हाथों में बेड़ियां और पैरों में जंजीर बांधकर मोदी सरकार तथा अमेरिका की ट्रंप सरकार के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया तथा जमकर विरोध प्रदर्शन किया। साथ ही ट्रंप सरकार और मोदी सरकार के

खिलाफ जमकर नारेबाजी भी की।

आपको बता दें कि खटीमा विधायक तथा उप नेता प्रतिपक्ष भुवन चंद्र कापड़ी का विधानसभा बजट सत्र के तीसरे दिन देहरादून में हाथों में बेड़ियां और पैरों में जंजीर बांधकर अमेरिका सरकार के खिलाफ अनोखा तरीके से विरोध प्रदर्शन देखने को मिला, जहां उन्होंने केंद्र सरकार पर जमकर निशाना भी साधा। इसी क्रम में खटीमा में भी कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने हाथों में बेड़ियां और पैरों में जंजीर बांधकर ट्रंप और मोदी सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुए नारेबाजी की।

इस दौरान कांग्रेस प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य बॉबी राठौर ने कहा कि रोजी-रोटी की तलाश में अमेरिका गए प्रवासी भारतीयों को अमेरिका की ट्रंप सरकार द्वारा बेड़ियों और जंजीरों में बांधकर अपमानजनक और आपत्तिजनक तरीके से वापस भेजा गया जो भारत के गौरवशाली इतिहास को शर्मसार करने वाली घटना है। इतनी बड़ी घटना के बाद भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा केंद्र सरकार चुप्पी साधे बैठी है। साथ ही उन्होंने कहा कि यह हमारे गौरवशाली इतिहास का दुर्भाग्यपूर्ण दिन है और भारत का अपमान है।

राठौर ने कहा कि कोलंबिया जैसा देश अपने देश के प्रवासी नागरिकों को अपनी जहाज से अमेरिका से सम्मानजनक तरीके से वापस लाया जिनका सम्मान स्वयं कोलंबिया के राष्ट्रपति ने भी किया, लेकिन इतनी बड़ी घटना (भारत के अपमान) के बाद भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा केंद्र सरकार चुप्पी साधे बैठी है।

इस दौरान युवा कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष नरेंद्र आर्य, महिला कांग्रेस जिला अध्यक्ष रेखा सोनकर, विनोद चंद, राज किशोर सक्सेना, नासिर खान, नीरज कन्याल, अरविंद कुमार, मनोज कोहली, अराफात अंसारी, मोहम्मद ताहिर, पंकज मेहरा, उम्मेद सिंह, विजय चंद, राहुल कुमार, रवि अग्रवाल तथा फर्दम खान सहित भारी संख्या में कांग्रेसी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

# चार सूत्रीय मांगों को लेकर आठवें दिन भी धरना स्थल पर डटे रहे वन कर्मी

शाह टाइम्स संवाददाता

**खटीमा।** एसडीओ कार्यालय परिसर में वन बीट अधिकारी, वन आरक्षी संघ शाखा तराई पूर्वी वन प्रभाग हल्द्वानी के बैनर तले खटीमा, सुरई, किलपुरा, दक्षिणी जौलासाल, रनसाली तथा हल्द्वानी वन प्रभाग हल्द्वानी की शारदा रेंज के वन विभाग के कर्मचारियों का वन सेवा नियमावली 2016 को पूर्व की भांति लागू किए जाने, वन बीट अधिकारियों वन आरक्षियों को दूसरे राज्यों की भांति एक स्टार दिए जाने, पुलिस की तर्ज पर एक माह का अतिरिक्त वेतन दिए जाने तथा वन चौकियों में कार्यरत सभी वन बीट अधिकारियों व आरक्षियों को हाउस रेंट अलाउंस अनुमन्य किए जाने आदि जायज मांगों को लेकर छठवें दिन भी अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन जारी रहा।

वन विभाग के कर्मचारी अपनी लंबित चार सूत्रीय जायज मांगों को लेकर कार्य बहिष्कार करते हुए अनिश्चितकालीन धरना पर बैठे हैं। वन बीट अधिकारी वन आरक्षी संघ के मंत्री मुकेश कुमार ने बताया कि वन, वन्य जीवों तथा पर्यावरण को बचाने में उनकी अहम भूमिका रहती है। हम पर्यावरण के हितैषी हैं लेकिन आज मजबूर होकर कार्य बहिष्कार करते हुए धरना पर बैठे हैं। उन्होंने कहा कि हॉफ द्वारा उनकी कुछ मांगों को लेकर प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजा गया है, लेकिन जब तक उनकी मांगों का जीओ शासन द्वारा लिखित रूप में नहीं दिया जाएगा, तब तक प्रांतीय कार्यकारिणी के आह्वान पर पूर्ण रूप से कार्य बहिष्कार करते हुए अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन चलता रहेगा। वन विभाग की एसडीओ सीं. चता वर्मा ने बताया कि वन बीट अधिकारी वन आरक्षी संघ द्वारा धरना प्रदर्शन किया जा रहा है। वन कर्मियों ने अपनी मांगों को लेकर उच्च स्तर पर पत्राचार भी किया है। अन्य कर्मियों द्वारा प्रभागीय कार्यालय तथा वन संरक्षक कार्यालय स्तर पर भी धरना प्रदर्शन किया जा रहा है। प्रदर्शन शांतिपूर्वक किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पूर्व में उच्च न्यायालय द्वारा एक निर्णय पारित किया गया है जिसमें कुछ दिशा निर्देश वनाग्नि से संबंधित दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि मुझे आशा है कि धरना प्रदर्शन जल्द समाप्त हो जाएगा तथा वन कर्मियों को भी इसका कुछ लाभ मिलेगा। धरना स्थल पर संघ के प्रभागीय मंत्री मुकेश कुमार, कुमाऊं मंडल उपाध्यक्ष अरविंदर सिंह, सुखविंदर सिंह, कुमारी नाजिश, कुमारी किरन, रेखा, पूजा, सरिता, ऋचा भारद्वाज, सोनी, भावना, प्रीति, संजीव, महिपाल सिंह, भगत मेहरा, गणेश पलड़िया, गंगाराम, जीत प्रकाश, विवेक तथा सूरज कुमार आदि मौजूद रहे।

### आसमान पर चढ़कर

फिर औंधे मुंह गिरकर
चढ़कर गिरकर फिर से संभलकर
रास्ते तय कर रहा हूं, में धीरे धीरे
आगे बढ़ रहा हूं, मैं धीरे धीरे आगे बढ़
रहा हूं, जीरो से शुरू करके अंधकार से
निकलकर
रास्ते गढ़ रहा हूं। मैं धीरे धीरे आगे
बढ़ रहा हूं,
बर्फीली सी ठंड
में, शरद की
हवाओं में,
इतिहास के पन्नों
सर्वत्र गढ़ रहा हूं,
में धीरे धीरे आगे
बढ़ रहा हूं, कभी

नदी तो कभी बादल, कभी फलक पर
चमकता हूं तो कभी दलदल में फंसता
हूं, पर प्रयास कर रहा हूं, में धीरे धीरे
आगे बढ़ रहा हूं, लू के थपेड़े हो या
चिलचिलाती धूप, कंठ की प्यास हो या
पेट की भूख, छाले भी पड़ जाएं पैर में,
फिर भी दर्द सह रहा हूं।
मैं धीरे धीरे आगे बढ़ रहा हूं, मुस.
ीबतों के कांटों से फूल चुन चुनकर पर
रोज लड़ रहा हूं, मैं धीरे धीरे आगे बढ़
रहा हूं। मैं धीरे धीरे आगे बढ़ रहा हूं।

**सुषमा कुमार**
**हिंदी टीजीटी कलाकार एवं लेखिका टनकपुर ( चंपावत )**

## एक नजर

### शुरू हुआ धर्मशाला एवं भंडार ग्रह का निर्माण

शाह टाइम्स संवाददाता

**लोहाघाट।** बद्रीनाथ के लघु रूप में सकल धाम महर पिनाना के वैष्णवी शक्तिपीठ में विधिवत पूजा अर्चना के साथ धर्मशाला एवं भंडार गृह के निर्माण का कार्य शुरू किया गया। यह कुमाऊं का ऐसा धाम है, जहां बद्रीनाथ के तर्ज पर छह माह तक मंदिर के कपाट बंद रहते हैं। कार्तिक पूर्णिमा को धाम के द्वार बंद तथा बैसाखी पूर्णिमा के दिन खुलते हैं। इस वर्ष धाम के कपाट कुंटे समय जिलाधिकारी नवनीत पांडे स्वयं उपस्थित हुए थे। तब से हम लोगों की दृष्टि में ओझल यह धाम काफी चर्चा आने के साथ यहां श्रद्धालुओं की काफी संख्या बढ़ती गई। आज शुक्रवार को मंदिर के पुजारी एवं कुल पुरोहित पंडित त्रिलोचन जोशी ने निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। इस कार्य हेतु जिलाधिकारी द्वारा 10 लाख रुपये स्वीकृत किए गए थे। यहां जिला प्रशासन द्वारा दो सोलर लाइट भी लगाई गई है। इस अवसर पर जगदीश जोशी, खेमानंद जोशी, भागीरथ जोशी, दिलबर जोशी, खिलानंद जोशी, नरेश जोशी, दीपक जोशी, रमेश भट्ट, दया कृष्ण शर्मा समेत गांव के लोग मौजूद थे।

### नशामुक्ति जागरूकता के लिए कार्यशाला का आयोजन

शाह टाइम्स संवाददाता

**रामनगर।** निदेशक समाज कल्याण के आदेश पर पीएनजी पीजी कॉलेज रामनगर के ऑडिटोरियम में नशा मुक्त भारत जन जागरूकता अभियान के अंतर्गत मादक पदार्थ एवं नशीली दवाओं के सेवन से बचाव योजना के अंतर्गत कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में नशे के संबंध में नगर पालिका रामनगर,कालाढूंगी के सभासद और एनसीसी व एनएस एस के छात्र-छात्राओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन इ एच कोमल शर्मा के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में चंचल के द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि में पालिकाध्यक्ष रामनगर अकरम ने अपने वक्तव्य में नियमित दिनचर्या व खेल को शामिल करने की बात युवाओं के समक्ष रखी। महाविद्यालय संरक्षक प्रोफेसर डॉक्टर एमसी पांडे ने नशे के दुष्प्रभाव की तुलना कोरोना महामारी से करते हुए इस पर त्वरित नियंत्रण की बात रखी। महाविद्यालय एंटी ड्रग सेल की नोडल अधिकारी डॉक्टर जया भट्ट ने से अपने क्षेत्र को नशा मुक्त रखने का आग्रह किया और युवा वर्ग का संरक्षण नशे से करने की बात कही गई। इस दौरान डॉ. नरेश कुमार, डॉ. सुरेश चंद्र, डॉ. जेपी त्यागी, डॉ. डीएन जोशी, डॉ. कृष्णा भारती, डॉ. सुनीता भट्ट, डॉ.नीमा राणा कैड़ा आदि मौजूद रहे।

### समान नागरिक संहिता एवं मतदाता जागरूकता पर हुई निबंध प्रतियोगिता

शाह टाइम्स संवाददाता

**टनकपुर।** राजकीय महाविद्यालय टनकपुर के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा विभागीय परिषद के अंतर्गत समान नागरिक संहिता व मतदाता जागरूकता पर निबंध एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के आयोजन किए गए। जिसमें महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने बढ़ चढ़कर प्रतिभाग किया।

कार्यक्रम प्रभारी डाक्टर सुल्तान सिंह यादव ने बताया प्रतियोगिता के विजई प्रतिभागी बच्चों को आज सम्मानित किया गया। आयोजित कार्यक्रम के तहत विशेष स्थान लाने वाले बच्चे अंजू सक्सेना, सनी कश्यप, रुमाईशा परवीन, अंजलि विश्वकर्मा, हरीश सिंह, निशा, सुषम को महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. अनुपमा तिवारी के द्वारा प्रमाण -पत्र व पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर विभाग प्रभारी डॉ. सुल्तान सिंह यादव, डॉ. ब्रह्मानंद, डॉ. पूनम, डॉ.किरन, डॉ.होशियार सिंह, डॉ. विमल, डॉ. सुषमा मक्कड़, तुषार अग्रवाल, प्रिया रावत, एवं अनेक विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# हल्द्वानी में खुले निःशुल्क नशामुक्ति केन्द्र के बारे में जानकारी दी

शाह टाइम्स संवाददाता

**रामनगर।** राज्य सरकार के द्वारा नशा मुक्ति के लिये हल्द्वानी में खोले गए निःशुल्क नशा मुक्ति केन्द्र के बारे में नगर पालिका के पर्यावरण मित्रों को जानकारी दी गई।

राजकीय नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केन्द्र पान्डे नवाड़ आरटीओ रोड हल्द्वानी के संचालक चंचल कुमार व सुनीता भट्ट के द्वारा पर्यावरण मित्रों को बताया गया कि तीस बैड वाले नशा मुक्ति केन्द्र में 18 वर्ष से अधिक आयु के पुरूष रोगियों के रहने, खाने व उपचार की सभी सुविधाएं निःशुल्क हैं। उनके द्वारा बताया गया कि नशे की लत से पीड़ित रोगियों को सामाज की मुख्य धारा से जोड़े जाने के लिए उन्हे योग अन्य रचनात्मक कार्यों के जरिए उन्हे नशा के खिलाफ मानसिक रूप से तैयार किया जाता है। मौहल्ला बम्बाघेर में चमुंडा मंदिर व मौहल्ला भवानीगंज मे दुर्गा मंदिर परिसर में जनजागरूकता के कार्यक्रम में मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. कोमल शर्मा, रोशन कुमार, अनमोल कुमार, सफाई नायक सुनील कुमार, मुकेश कुमार आदि सहित बड़ी संख्या मे पर्यावरण मित्र मौजूद रहे। इससे पूर्व उपरोक्त के द्वारा राजकीय महाविद्यालय के ऑडीटोरियम में संपन्न हुए कार्यक्रम में नगर पालिक. ाध्यक्ष हाजी मौ. अकरम, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एमसी पांडे, पालिका के सभासदों से नशामुक्ति अभियान में सहयोग किए जाने के लिए प्रेरित किया गया।

# सेवा, संकल्प, धरणी के जरिए गीता धामी ने रोगियों के चेहरों में मुस्कान लाने का उठाया बीड़ा

## विशाल निशुल्क चिकित्सा शिविर में एक हजार से अधिक लोगों ने उठाया लाभ

शाह टाइम्स संवाददाता

**चंपावत।** यहां के प्रसिद्ध घटकू मंदिर के पास आज जहां मंदिर से धूप अगरबत्ती की खुशबू आ रही थी, तो इसी स्थान के कुछ ही दूरी पर सेवा व समर्पण की महक के संगम से यह संदेश निकल रहा था कि इस संसार में दीन दुखियों की सेवा से बड़ा कोई धर्म और कर्म नहीं है। वही व्यक्ति महान होता है जो दूसरों की खुशियों में अपनी खुशियां तलाशता है।

मौका था यहां सेवा संकल्प फाउंडेशन द्वारा आयोजित तीन दिनी विशाल निशुल्क चिकित्सा एवं स्वास्थ्य शिविर के शुभारंभ का। चंपावत को हिमालयी राज्यों का मॉडल जिला बनाने के सूत्रधार मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने जहां यहां की तस्वीर व लोगों की तकदीर बदलने का बीड़ा उठाया है, वहीं उनकी धर्मपत्नी गीता धामी ने सेवा संकल्प फाउंडेशन के माध्यम से उत्तराखंड के लोगों को स्वस्थ रखने के साथ बीमार लोगों के चेहरों में मुस्कान लाने का अपना इरादा जाहिर किया है। जिसकी शुरुआत यहां घटकू मंदिर में पूजा अर्चना एवं लोक देवता का आशीर्वाद लेने के साथ की गई। धरणी फाउंडेशन की ट्रस्टी गीता ने कहा कि यदि कोई परेशान व्यक्ति आपके पास आता है तो हमें उसके विश्वास को बनाए रखने के लिए उसकी ऐसी सेवा करनी है की आंखें तो हमारी हो, लेकिन आपकी सेवा से दूसरे व्यक्ति की आंखों से आंसू आए। मैंने इसी अवधारणा से धरणी के इस कार्य की शुरुआत की है। जिसमें दिल्ली के नामी अपोलो हॉस्पिटल के अलावा अन्य स्थानों के डॉक्टरों के दल द्वारा यहां निशुल्क चिकित्सा दी जा रही है।

उन्होंने यहां सेवा देने आए चिकित्सा दल का स्वागत करते हुए कहा वह व्यक्ति कितने महान होते हैं जो अपने कार्यों व्यवहार से दूसरों को खुशियां बाटकर स्वयं खुश होते हैं। शिविर में एक हजार से अधिक लोगों का मुक्त उपचार किया गया। क्षेत्रीय लोगों की दिक्कतों को देखते हुए शि. विर में मानसिक रोगियों का भी उपचार करने के लिए यहां विशेष रूप से चिकित्सक आए हुए थे। शि. विर में लोगों को 150 चश्मा, एक दर्जन कान सुनने की मशीने,

व्हीलचेयर, वैशाखी आदि सामग्री निशुल्क वितरित की गई। शनिवार एवं रविवार को यह शिविर टनकपुर एवं खटीमा में भी आयोजित किया जाएगा।

यहां सीएमओ डा. देवेश चौहान, मेडिकल कॉलेज पिथौरागढ़ के प्रिंसिपल एवं वरिष्ठ बाल लोग विशेषज्ञ डा. अजय आर्य, मानसिक रोग विशेषज्ञ डा. एमके पंत,अपोलो हॉस्पिटल के अस्थि रोग विशेषज्ञ डा. जीके सुमन, वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. पूनम वशिष्ठ, फिजिशियन डा. दीपक वत्स, डा. संस्कृति वत्स, जिला चिकित्सालय के ईएनटी सर्जन डा. नरेंद्र सिंह, हड्डी रोग विशेषज्ञ डा. धनंजय पाठक के अलावा मुख्यमंत्री के निजी सचिव बीसी तिवारी, पंकज सिंह, मनमोहन सिंह बोहरा, विधायक प्रतिनिधि प्रकाश तिवारी,प्रेमा पांडे, सचिन जोशी, शंकर पांडेय, अनिल जोशी, कैलाश अधिकारी, योगेश जोशी, विनीता फ्रत्याल, गोविन्द सामन्त एवं तमाम लोगों ने अपना सहयोग दिया। कार्यक्रम का संचालन डा. बीसी जोशी ने किया।

# रुद्रपुर के गांधी पार्क का जल्द होगा कायाकल्प

■ महापौर ने कार्ययोजना बनाने के लिए अधिकारियों के साथ पार्क का किया निरीक्षण

शाह टाइम्स संवाददाता

**रुद्रपुर।** दशकों से बदहाल पड़े शहर के सबसे बड़े पार्क गांधी पार्क का जल्द ही कायाकल्प होने जा रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी जल्द ही रुद्रपुर पहुंचकर गांधी पार्क के सौंदर्यीकरण सहित करोड़ों के विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण करेंगे। गांधी पार्क के सौंदर्यीकरण की योजना को धरातल पर उतारने के लिए शुक्रवार को महापौर विकास शर्मा ने जिला विकास प्राधिकरण और नगर निगम के अधिकारियों के साथ गांधी पार्क का स्थलीय निरीक्षण किया और अधिकारियों के साथ सौंदर्यीकरण की कार्ययोजना पर विस्तृत चर्चा करते हुए रूपरेखा तैयार की।

महापौर विकास शर्मा ने मुख्य नगर आयुक्त नरेश दुर्गापाल, जिला विकास प्राधिकरण के सचिव जयकिशन, उपाध्यक्ष पंकज उपाध्याय सहित अन्य अधिकारियों के साथ गांधी पार्क स्थलीय निरीक्षण करते हुए गांधी पार्क के सौंदर्यीकरण की कार्ययोजना पर चर्चा की। इस दौरान विकास शर्मा ने कहा कि चुनाव से पूर्व उन्होंने गांधी पार्क को आकर्षक पार्क के रूप में तब्दील करने का वायदा किया था, जल्द ही अब यह वायदा पूरा होने जा रहा है। उन्होंने कहा कि गांधी पार्क को सजाने और संवारने के लिए नगर निगम ने जिला विकास प्राधिकरण के साथ एमओयू साईन किया है। जिसके तहत गांधी पार्क के सौंदर्यीकरण के लिए विस्तृत कार्ययोजना बनायी जा रही है। आने वाले दिनों में गांधी पार्क नये कलेवर में नजर आएगा। गांधी पार्क का सौंदर्यीकरण करने के लिए इसे हरा भरा बनाने के साथ ही वॉकिंग के लिए सिंथेटिक ट्रैक बनाया जायेगा ताकि इसमें बूढ़े बच्चे और नौजवान सुबह शाम के समय आसानी से रनिंग और जॉगिंग कर सकें। गांधी पार्क को सिर्फ पार्क के रूप में सजाया जायेगा। गांधी पार्क के आधे हिस्से को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए व्यवस्थित किया जायेगा जबकि आधे हिस्से में ओपन जिम, योगा, मेडिटेशन और बच्चों के लिए मनोरंजक झूले आदि की व्यवस्था होगी। रात के समय गांधी पार्क में रोशनी के पुख्ता इंतजाम होंगे साथ ही गांधी पार्क की नियमित देख रेख का प्रबंध भी नगर निगम द्वारा किया जाएगा।

महापौर ने कहा कि गांधी पार्क के सौंदर्यीकरण का पूरा लेआउट तैयार करने के बाद इसे शहर के व्यापारियों और आम जनता के सामने भी रखा जाएगा और गांधी पार्क के सम्बंध में जो भी बेहतर सुझाव आएगा, उसे भी कार्ययोजना में शामिल किया जाएगा। महापौर ने कहा कि रुद्रपुर को स्मार्ट सिटी बनाने की शुरूआत गांधी पार्क से की जा रही है। जल्द ही सीएम पुष्कर सिंह धामी रुद्रपुर में करोड़ों के विकास कार्यों का शिलान्यास और लोकार्पण करने आएंगे। निरीक्षण के दौरान देवभूमि व्यापार मण्डल जिलाध्यक्ष गुरमीत सिंह, सुनील ठुकराल, मोहन तिवारी, धीरेन्द्र मिश्रा,गोपाल पटेल,रितेश मनोचा, चिराग कालरा, पारस चुघ, राजन राठौर, विनय बत्रा, सन्नी अरोरा आदि भी मौजूद रहे।

# आईटीबीपी की 36वीं वाहिनी में छात्र-छात्राओं ने किया शैक्षिक भ्रमण

शाह टाइम्स संवाददाता

**लोहाघाट।** आईटीबीपी की 36वीं वाहिनी में राजकीय पॉलीटेक्निक लोहाघाट, चम्पावत एवं राजकीय इण्टर कॉलेज चम्पावत से छात्र एवं छात्राओं द्वारा शैक्षिक भ्रमण किया गया।

वाहिनी सेनानी धर्मपाल सिंह रावत के दिशा-निर्देशन में द्वितीय कमान बेगराज मीणा की अध्यक्षता में वाहिनी परिसर में लगभग 150 बच्चों एवं 15 अध्यापकों को वाहिनी के किया-कलापों के बारे में जानकारी दी गई। बच्चों की कैरियर काउंसलिंग के दौरान बच्चों को हथियार प्रदर्शनी, भर्ती से संबंधित जानकारी एवं आई.टीबीपी के कार्यों एवं सेल्फ डिफेंस की विस्तृत जानकारी दी गई। अन्त में द्वितीय कमान अधिकारी ने बच्चों को कैरियर काउंसलिंग के माध्यम से जागरूक किया।

इस अवसर पर अनिल कुमार सहा. सेनानी / जीडी, डॉ. सुरभि चिकित्सा अधिकारी, विशन सिंह मेहता एवं आईटीबीपी के अन्य प्रशिक्षित जवानों द्वारा बच्चों को भर्ती में शामिल होने हेतु प्रोत्साहित किया गया ताकि बच्चों में देशभक्ति की भावना जागृत हो। इस अवसर पर हिमवीर पदाधिकारियों द्वारा कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया।

### 2622 छात्र-छात्राएं ने छोड़ी परीक्षा

शाह टाइम्स संवाददाता

**रामनगर।** उत्तराखंड विद्यालयी शिक्षा परिषद के सचिव विनोद कुमार सिमल्टी ने बताया कि शुक्रवार से हाईस्कूल और इंटरमीडिएट परीक्षा शुरू हो गई है। शुक्रवार को इंटरमीडिएट हिंदी विषय की परीक्षा देने के लिए 105630 विद्यार्थी पंजीकृत किए गए थे। 103008 विद्यार्थियों ने परीक्षा केंद्रों में पहुंच कर हिंदी विषय की परीक्षा दी है। बताया कि 2622 छात्र-छात्राएं अनुपस्थित पाए गए हैं। इंटरमीडिएट की कृषि भाग दो की परीक्षा में पंजीकृत 350 में से 338 ने परीक्षा दी है। 12 अनुपस्थित रहे। हाईस्कूल की टाइपिंग हिंदी अंग्रेजी विषय की परीक्षा में 122 विद्यार्थी पंजीकृत रहे। 119 ने परीक्षा दी और तीन ने परीक्षा नहीं दी है।

### सूचना

सूचित किया जाता है कि एक किता भुखण्ड जिसका खसरा नंबर 6/1/3 मिन रकबई 0.316 हेक्टेयर बाके ग्राम संतोषपुर तहसील रामनगर जिला नैनीताल से सम्बंधित एक बैनामा जो कि मनप्रीत सिंह पुत्र गुरूचरण सिंह ने हरेन्द्र सिंह पुत्र गुंसाई सिंह के हक में किया था, जिसकी रजिस्ट्री उपनिबन्धक कार्यालय हल्द्वानी में बही नंबर 1, जिल्द 1409 के पृष्ठ 229-232, क्रमांक 3228 पर दिनांक 05.08.2005 को पंजीकृत हुई थी, जो कि कहीं खो गयी है तथा काफी खोज बीन के बाद उक्त बैनामा की मूल प्रति नहीं मिल पा रही है।

**सूचनादाता**
**नरेन्द्र सिंह रावत पुत्र भवान सिंह**
**निवासी-भरतपुरी, रामनगर**
**( नैनीताल )**

# अधिवक्ताओं ने जलाई बिल की प्रतियां

## राष्ट्रपति व कानून मंत्री को ज्ञापन भेजा



**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**नैनीताल।** प्रस्तावित एडवोकेट एमेंडमेंट बिल के खिलाफ शुक्रवार को नैनीताल जिला न्यायालय परिसर में अधिवक्ताओं ने जोरदार प्रदर्शन करते अपना विरोध दर्ज कराने के साथ ही बिल की प्रतियां जलाई। अधिवक्ताओं ने न्यायिक कार्य से विरत रहने के साथ ही अपर जिला. धिकारी फिंचा राम चौहान के माध्यम से राष्ट्रपति व कानून मंत्री को ज्ञापन भेजा। इस दौरान जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्ष ओंकार गोस्वामी ने कहा कि बिल में जो संशोधन लाए जा रहे हैं वे अधिवक्ता समुदाय के हित में नहीं हैं इसलिए तब तक प्रोटेस्ट करना होगा जब इसे वापस नहीं लिया जाता वहीं सचिव संजय सुयाल ने कहा कि बिल अधिवक्ताओं की आजादी छीन रहा है कहा कि एसोसिएशन अब तक एक स्वतंत्र निकाय के रूप में कार्य करती आ रहा है लेकिन अब केंद्र सरकार बिल के माध्यम से इस पर ऑब्जर्वर नियुक्त करने की कोशिश कर रही है जो बीसीआई के कार्य मे भी दखल देंगे और एसोसिएशनों को कंट्रोल करेंगे। कहा कि हड़ताल व प्रस्ताव वकीलों की फ्री वॉइस (अभिव्यक्ति की आजादी) होती है और उनकी इसी आजादी को छीन लिया जाएगा तो वो क्या करेगा इसे भी मिसकंडक्ट में लाया जा रहा है। वहीं मनीष मोहन जोशी ने कहा कि क्या न्यायाधीशों द्वारा गलत फैसले देने पर भी शिकायत पर कार्यवाही की जाएगी? अधिवक्ता राजेन्द्र कुमार पाठक ने कहा की यदि उनके मांगे नहीं मानी गयी तो आगे अनिश्चितकालीन हड़ताल व आंदोलन को बाध्य होंगे। सभा को वरिष्ठ अधिवक्ता व जिला बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष ज्योति प्रकाश बोरा समेत भगवत प्रसाद, बलवंत सिंह तथा अनिल बिष्ट सुंदर ने संबोधित किया। इस दौरान प्रीति साह, अनिल बिष्ट, भरत भट्ट, अखिल साह, पंकज सिंह बिष्ट, अशोक मौलखी, भानुप्रताप मौनी, मनीष कांडपाल, यशपाल आर्या, कमल चिलवाल, पंकज कुमार, शंकर चौहान, सुभाष जोशी, शिवांशु जोशी, निखिल बिष्ट, कैलाश बल्यूटिया, गिरीश चंद्र जोशी, तरुण चंद्रा, शारिक अली, नीरज गोस्वामी, चंद्रकांत बहुगुणा, निर्मल कुमार, पंकज कुमार, यशपाल आर्य, प्रमोद तिवारी, मोहम्मद खुर्शीद, दिग्विजय सिंह, राजेन्द्र भैसोड़ा, उमेश कांडपाल, दीपक दानू, कैलाश रावत, दीपक पांडेय, गौरव भट्ट, सरिता बिष्ट, तारा आर्या, मुन्नी आर्या, आकांक्षा आर्या, सिम्मी कपूर, भारती आर्या, किरन आर्या व जया आर्या आदि मौजूद रही।

## अधिवक्ता हित के खिलाफ है संशोधन बिल

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**नैनीताल।** हाईकोर्ट बार एसोसिएशन व बार काउंसिल उत्तराखंड में पहुंचे विभिन्न जिला बार एसोसिएशन के अध्यक्षों तथा पदाधिकारियों ने नैनीताल हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के अध्यक्ष डी.एस. मेहता की अध्यक्षता में बैठक कर केंद्र सरकार द्वारा अधिवक्ता अधिनियम 1961 में किये जा रहे संशोधन बिल 2025 के विरुद्ध अपना रोष प्रकट करते हुए संशोधन बिल को अधिवक्ता हित के दृष्टिगत तत्काल प्रभाव से हटाने की मांग की है। अधिवक्ताओं का कहना था कि केंद्र सरकार के अधिवक्ता (संशोधन विधेयक 2025) में धारा 45बी के जरिए अधिवक्ता के कदाचार के लिए उत्तरदायित्व तय किए गए हैं। अगर किसी व्यक्ति को अधिवक्ता के कदाचार से नुकसान होता है तो वह बीसीआई के नियमों के मुताबिक शिकायत दर्ज कर सकता है। जो अधिवक्ताओं के स्वतंत्र रूप से कार्य करने में एवं अपनी बात को प्रभावी रूप से प्रदर्शित करने में कुठाराघात है। संशोधन बिल की धारा 45 बी अधिवक्ताओं को स्वतंत्र रूप से कार्य करने में बाधा उत्पन्न करती है। बिल संसोधन का विरोध कर रहे अधिवक्ताओं का करना है कि कदाचार एवं झूठी गवाही इत्यादि देने के लिए पूर्व से ही आपराधिक अधिनियम में प्राविधान है धारा 45 बी सम्पूर्ण न्याय जगत में प्रभावी न्याय देने एवं न्याय को अंतिम छोर तक पहुँचाने में बाधा उत्पन्न करेगी।

## लिव इन रिलेशन पर सुनवाई 1 अप्रैल को



**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**नैनीताल।** राज्य सरकार द्वारा लागू की गई समान नागरिक संहिता (यूसीसी) में लिव इन रिलेशनशिप के रजिस्ट्रेशन की अनिवार्यता व रजिस्ट्रेशन के फॉर्मेट को असंवैधानिक ठहराए जाने को लेकर दायर याचिका की सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने इस याचिका को भी अन्य याचिकाओं के साथ सम्बद्ध कर दिया है। इन सभी याचिकाओं की सुनवाई की तिथि 1अप्रैल (मंगलवार) निर्धारित है। बता दें कि लिव इन रिलेशनशिप में रह रहे एक जोड़े की याचिका की 18 फरवरी को हुई सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायधीश न्यायमूर्ति जी. नरेंद्र व न्यायमूर्ति आशीष नैथानी की खंडपीठ ने केंद्र व राज्य सरकार को दो दिन के भीतर जबाव दाखिल करने को कहा था। इसी क्रम में शुक्रवार को राज्य व केंद्र सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये राज्य व केंद्र सरकार का पक्ष रखा। इस दौरान याचिकाकर्ता जोड़े की तरफ से बहस करते हुए सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता राजू रामचन्द्रन ने बताया कि लिव इन रजिस्ट्रेशन के लिये कई तरह का विवरण मांगा जा रहा है जो कि व्यद्रि की निजता का हनन है। कहा कि सरकार को किसी व्यक्ति की निजता को जानने का अधिकार नहीं है। रजिस्ट्रेशन में इस तरह के प्रावधान पक्षपातपूर्ण भी है क्योंकि शादी के रजिस्ट्रेशन में ऐसी सूचनाएं नहीं मांगी जा रही हैं जैसी लिव इन रिलेशन के रजिस्ट्रेशन के लिये मांगी जा रही हैं।

## छेड़छाड़ का आरोपी दोषमुक्त

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**नैनीताल।** मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट नैनीताल रवि प्रकाश की अदालत ने एक महिला के साथ छेड़छाड़ करने के आरोपी टैक्सी चालक को दोषमुक्त करार दिया है। इस मामले में आरोपी टैक्सी चालक द्वारा घटना के समय की वीडियो फुटेज कोर्ट में पेश करना अहम कारक रहा। अभियोजन पक्ष के अनुसार 12 फरवरी 2022 को खैरना से पिलखोली रानीखेत जाने के लिये एक महिला टैक्सी में बैठी लेकिन टैक्सी में अन्य सवारियों के न होने के कारण टैक्सी चालक ने दूसरी बुकिंग ले ली और महिला से टैक्सी से उतरने को कहा लेकिन महिला ने टैक्सी से उतरने से इंकार कर दिया। इसी मामले में हुए विवाद में महिला ने टैक्सी चालक अशोक के खिलाफ आईपीसी की धारा 323 व 354 के तहत मुकदमा दर्ज कराते हुए आरोप लगाया कि टैक्सी चालक ने उसे अपने वाहन में बैठाया और 50 मीटर दूर ले जाकर उसके साथ छेड़छाड़ की। इस मामले में पुलिस रिपोर्ट व गवाहों के बयानों के साथ ही टैक्सी चालक अशोक द्वारा कोर्ट में पेश की गई पेन ड्राइव (वीडियो फुटेज) ने आरोपी के पक्ष में अहम भूमिका निभाई। इस पेन ड्राइव में घटना के समय की रिकॉर्डिंग है जिसमें टैक्सी चालक गाड़ी में बैठी महिला से गाड़ी से उतरने को कह रहा है लेकिन महिला गाड़ी से उतरने को अपनी प्रतिष्ठा के खिलाफ मानते हुए टैक्सी चालक से भला बुरा कहते सुनाई दे रही है। आरोपी के अधिवक्ता पंकज कुलौरा ने इस मामले में मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की कोर्ट में सुप्रीम कोर्ट के आदेश, घटना के समय मौके पर मौजूद भीड़ व टैक्सी ड्राइवर द्वारा स्वयं पुलिस को बुलाने आदि तथ्यों को भी प्रस्तुत किया।

# गांव आबाद रहेंगे तो कुमाऊंनी भी बची रहेगी

## कुमाऊंनी भाषा और संस्कृति के संरक्षण पर जोर

**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**हल्द्वानी।** अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर 'राग-भाग-थाती से माटी तक' लोक सांस्कृतिक मंच द्वारा फूलदेई वेंकट हाल में आयोजित परिचर्चा में वक्ताओं ने कुमाऊंनी भाषा और संस्कृति के संरक्षण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि कुमाऊं में बढ़ते गांवों के पलायन से कुमाऊंनी भाषा और सांस्कृतिक विरासत को खतरा है। वक्ताओं ने कुमाउनी भाषा के मानकीकरण की आवश्यकता पर बल दिया ताकि इसे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने में कोई समस्या न हो। कुमाउनी कवि जगदीश जोशी और गायिका बीना तिवारी ने कुमाउनी बोलने और लिखने के महत्व पर चर्चा की। कुमगढ़ पत्रिका के संपादक दामोदर जोशी देवांशु ने कहा कि कुमाउनी लेखन में सुधार की आवश्यकता है। हिंदी के कवि अनिल कार्की ने बताया कि भाषा अपनी धरती, समय और समाज से पल्लवित होती है, और यह गांव से ही आती है। पत्रकार चारु तिवारी ने कहा कि अगर गांव नहीं रहेंगे तो कुमाउनी भाषा के असली स्रोत भी खत्म हो जाएंगे। कार्यक्रम में शोध छात्र, प्रोफेसर, लेखकों और कवियों ने अपनी राय व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार जगमो. हन रौतेला द्वारा किया। इस मौके पर मुकेश को. हली, प्रोफेसर दीपा गोबाड़ी, डा.प्रदीप उपाध्याय, बची सिंह बिष्ट, गोविंद बल्लभ बहुगुणा, यतीश पंत, भास्कर उप्रेती, दयाल पांडे, रिस्की पाठक, मोहन कांडपाल, हर्षिता रौतेला बुल. बुल, केएन चंदोला, पूरन सिंह बिष्ट, शिवराज भंडारी, हरीश पंत, मदन सिंह मेर, मेघा बृजवाल, भावेश, शिवराज भंडारी, प्रदीप कोठारी आदि अनेक लोग मौजूद थे।



## मानसिक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**नैनीताल।** हक की बात अभियान के तहत शुक्रवार को जिला कारागार नैनीताल में 6 दिवसीय फास्ट फूड प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं मानसिक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। बता दें कि राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण नैनीताल के दिशा निर्देशानुसार एवं जिला न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नैनीताल सुबीर कुमार के मार्गदर्शन में जिला नैनीताल में सामा. जिक न्याय दिवस के मौके में 20 से 26 फरवरी तक हक की बात अभियान चलाया जा रहा है जिसके अंतर्गत सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नैनीताल श्रीमती बीनू गुलयानी द्वारा जिला कारागार नैनीताल में आरसीटी बैंक ऑफ बड़ौदा के सहयोग से आयोजित छह दिवसीय फास्ट फूड खाना बनाने का कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया, साथ ही मनोन्याय मानसिक बीमारी वाले व्यक्तियों और बौद्धिक विकलांग व्यक्तियों के लिए कानूनी सेवा इकाई सदस्य डिप्टी चीफ लीगल एड डिफेन्स कॉउन्सिल हेमा शर्मा, अधिकार मित्र यशवंत कुमार द्वारा मानसिक बीमारी वाले व्यक्ति एवं बौद्धिक दिव्यांग व्यक्तियों के लिये कानूनी सेवा योजना 2024 पर जागरूकता शिविर व मानसिक बीमारी वाले बंधियों के लिए चिकित्सा शिविर का भी आयोजन गया। शिविर में मनोचिकित्सक डा. गरिमा काण्डपाल द्वारा बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया गया तथा आवश्यकता अनुसार दवाइयां भी उपलब्ध कराई गई। शिविर में चीफ एड डिफेंस काउंसिल व अधिवक्ता सोहन तिवारी, डिप्टी चीफ एड डिफेंस काउंसिल अधिवक्ता हेमा शर्मा, डिप्टी चीफ एड डिफेंस काउंसिल अधिवक्ता राजेंद्र असवाल द्वारा मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्तियों के संबंधित कानून न्यायालय संबंधित वादों के प्रकरण के संबंध में अवगत कराया गया।

# नरेंद्र ने बढ़ाया गौलापार का मान

## कृषि विज्ञान सम्मेलन में सीएम ने किया सम्मानित



**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**हल्द्वानी।** प्रगतिशील किसान नरेंद्र सिंह मेहरा ने एक बार फिर उत्तराखंड समेत गौलापार क्षेत्र का मान बढ़ाया है। शुक्रवार को पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 17वें कृषि विज्ञान सम्मेलन समारोह में नरेंद्र सिंह मेहरा को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अंगवस्त्र एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। बता दें कि एक प्रयोगधर्मी किसान के रूप में अपनी पहचान बनाने वाले गौलापार निवासी किसान नरेंद्र मेहरा ने कृषि क्षेत्र में अनेक अभिनव प्रयोग किए हैं। गेहूं की एक नई प्रजाति नरेन्द्र-9 को विकसित करने के साथ ही जैविक खेती के प्रति समर्पण समेत तमाम अभिनव प्रयोग कर उन्नतशील खेती के प्रति जागरूकता लाने के लिए सम्मान पाने वाले कृषक को मिले सम्मान पर क्षेत्रवासियों ने हर्ष व्यक्त करते हुए कृषि के क्षेत्र में तमाम अभिनव प्रयोग कर सर्वश्रेष्ठ प्रगतिशील कृषकों के श्रेणी प्राप्त करने पर उन्हें बधाइयां प्रेषित की हैं। प्रगतिशील किसान नरेंद्र मेहरा ने जैविक खेती के द्वारा हल्दी के एक पौधे से 25 किलोग्राम हल्दी पैदा कर विश्व रिकॉर्ड कायम किया था। उनकी इस उपलब्धि पर आज देश विदेश के तमाम कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों और किसानों की मौजूदगी में उन्हें इस सम्मान से नवाजा गया।

## पथराव और फायरिंग मामले में मुकदमा, जांच शुरू

**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**हल्द्वानी।** भीमताल से शुरू हुए जुए के विवाद के बाद भोटियापड़ाव क्षेत्र में पथराव और फायरिंग की घटना सामने आई है। पुलिस ने मामले में पीड़ित की तहरीर के आधार पर मुक. दमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और सीसीटीवी फुटेज की सहायता से आरोपियों की पहचान करने का प्रयास कर रही है। बता दें कि 19 फरवरी को पुरानी आईटीआई तल्ली हल्द्वानी निवासी घनश्याम पंत ने पुलिस को बताया कि वह भीमताल से अपनी कार में घर लौट रहे थे। रात करीब साढ़े 10 बजे भोटियापड़ाव के पास तीन कार सवारों ने उनकी कार का पीछा करना शुरू किया। आरोप है कि पीछा करते हुए उन्होंने घनश्याम की कार पर पत्थर फेंके और फायरिंग भी की। अपनी जान बचाने के लिए घनश्याम ने सिंधी चौराहा से मंडी के पास इंदिरा नगर की ओर मुड़ने की कोशिश की और फिर गौलापार रोड पर गलत साइड आंवला चौकी की ओर चले गए, जहां उनकी कार डिवाइडर से टकरा गई। इसके बाद हमलावरों ने कार पर पत्थर मारे। घनश्याम का दोस्त संजय जायसवाल कार से बाहर निकलकर भाग गया, जबकि घनश्याम कार लेकर बरेली रोड पर आईटीआई तक पहुंचे और वहां गाड़ी छोड़कर भाग गए। घनश्याम ने बताया कि जब वह एक घंटे बाद वापस लौटे, तो उनकी कार के पीछे और बायीं ओर दो गोलियों के निशान पाए गए।

## वर्दी में रील बनाने पर एसएसपी सख्त

**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**हल्द्वानी।** वर्दी में रील बनाने का मामला तूल पकड़ने के बाद एसएसपी पीएन मीणा ने कड़ी नाराजगी जताई है। उन्होंने इस मामले की गंभीरता को देखते हुए एसपी क्राइम डा. जगदीश चन्द्र को पूरे मामले की जांच सौंप दी है। एसपी क्राइम की रिपोर्ट आने के बाद मामले में कार्रवाई की बात की जा रही है। गौरतलब है कि कुछ समय से एक व्यक्ति के इंस्टाग्राम अकाउंट पर कई रील्स वायरल हो रही थीं, जिसमें वह खुद को दुबई किंग बताकर पुलिस अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ वीडियो बनाता था। वर्दीधारी पुलिसकर्मियों को इस पर कोई आपत्ति नहीं थी, और कथित दुबई किंग अपनी पहचान चमकाने की कोशिश कर रहा था। जब यह मामला मीडिया में आया तो आरोपी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से सारे वीडियो डिलीट कर दिए। उस रील्स में पुलिस के आलाधिकारी से लेकर कांस्टेबल और होमगार्ड तक नजर आए थे, जिसने पुलिस महकमे में हलचल मचा दी। हालांकि रील्स डिलीट की जा चुकी हैं, लेकिन इंस्टाग्राम स्टोरी में खाकी का जलवा अब भी बरकरार है। दुबई किंग ने एक स्टोरी में शहर के तेजतर्रार थानाध्यक्ष की सरकारी गाड़ी को अपनी दुकान के बाहर खड़ा दिखाया है। इस वीडियो में कथित दुबई किंग अपने प्रतिष्ठान का प्रचार करते हुए थानाध्यक्ष की सरकारी गाड़ी का जिक्र करता है। अब सवाल उठता है कि पुलिसकर्मी वर्दी में इस तरह की रील और वीडियो किस उद्देश्य से बनवा रहे थे। एसएसपी पीएन मीणा ने इस मामले में गंभीरता से कदम उठाते हुए एसपी क्राइम डा. जगदीश चंद्र को जांच सौंप दी है, और रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई किए जाने की बात कही जा रही है।

## छात्राओं को दी जानकारी

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**नैनीताल।** कुमाऊं विवि के डीएसबी परिसर स्थित वाणिज्य विभाग में बिग 4 और मल्टीनेशनल कंपनियों (एमएनसी) में उच्च वेतन वाली नौकरी कैसे प्राप्त करें विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार में मुख्य वक्ता ऑडिट प्रोफेशनल खुशी गैड़ा ने छात्रों को कई अहम जानकारियां साझा की। उन्होंने वित्त समेत लेखा, विपणन तथा प्रबंधन, ऑडिटिंग व मानव संसाधन प्रबंधन तथा आयकर आदि क्षेत्रों में करियर बनाने के अवसरों की जानकारी दी। शुक्रवार को वाणिज्य विभाग की ओर से ऑनलाइन आयोजित वेबिनार में दो सौ से अधिक छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। छात्रों ने वेबिनार को अत्यंत लाभकारी बताया और कहा कि इससे उन्हें उच्च वेतन वाली नौकरियों के लिए आवश्यक कौशल और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

### एक नजर

## सरकार पर गैरसैंण की उपेक्षा का लगाया आरोप

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**अल्मोड़ा।** पूर्व विस अध्यक्ष गोविंद सिंह कुंजवाल ने शुक्रवार को जिला कांग्रेस कार्यालय में प्रेस वार्ता की। प्रेस वार्ता के दौरान उन्होंने कहा कि देहरादून में आयोजित बजट सत्र के दौरान राज्यपाल के अभिभाषण में गैरसैंण का जिक्र तक नहीं किया गया। वही सरकार का वादा था कि ग्रीष्मकालीन राजधानी गैरसैंण को बनाया जाएगा। ऐसे में बजट सत्र को देहरादून में आयोजित कराने से सरकार की पहाड़ विरोधी मानसिकता उजागर होती है। कहा कि गैरसैंण में राजधानी बन जाने से राज्य के पर्वतीय क्षेत्रों का विकास होता। लगातार हो रहे पलायन को रोकने में भी मद्द मिलती। उन्होंने सरकार पर गैरसैंण की उपेक्षा करने का भी आरोप लगाया। कहा कि आज भाजपा सरकार ने कांग्रेस के भू-कानून नियम का गलत इस्तेमाल कर पहाड़ों की जमीन को बाहरी व्यक्तियों की बिकवा दी। उन्होंने कहा कि अगर सरकार की नियत साफ है तो यह खुलासा करे कि किसकी सरकार में कितनी भूमि बिकी। यहां प्रेस वार्ता में जिलाध्यक्ष भूपेंद्र सिंह भोज, महिला जिलाध्यक्ष राधा बिष्ट, नगर अध्यक्ष तारा चंद्र जोशी, यूथ कांग्रेस जिलाध्यक्ष दीपक कुमार, निर्मल रावत आदि मौजूद रहे।

## खेल मैदान निर्माण की कवायद फिर शुरु

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**अल्मोड़ा।** रानीखेत में खेल मैदान निर्माण के लिए कवायद एक बार फिर शुरु हो गई है। शुक्रवार को जिला क्रीड़ा अधिकारी महेशी आर्या द्वारा विभागीय टीम के साथ मिलकर खेल मैदान के लिए भूमि चयन को लेकर स्थलीय निरीक्षण किया गया। डीएसओ महेशी आर्या ने बताया कि रानीखेत में स्टेडियम निर्माण को लेकर भूमि चयन को लेकर निरीक्षण किया गया। बताया कि भूमि चयन हो जाने के बाद अग्रिम कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। वर्ष 2014 में तत्कालीन मुख्यमंत्री हरीश रावत ने रानीखेत में स्टेडियम निर्माण की घोषणा की थी। निर्माण कार्यो के लिए 10 करोड़ रुपय भी स्वीकृत किए थे।

## पूर्ण ईमानदारी और निष्ठा से करें कार्य: डीएम

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**अल्मोड़ा।** राजस्व एवं भूलेख प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षु सब रजिस्ट्रारों द्वारा शुक्रवार को जिलाधिकारी आलोक कुमार पांडेय से मुलाकात की। कलेक्ट्रेट में हुई बैठक में जिलाधिकारी ने सभी सब रजिस्ट्रारों को कहा कि व्यक्ति की सभी गतिविधियां भूमि से जुड़ी होती हैं। भूमि का हम सभी के जीवन में बहुत महत्व है। कहा कि आप जिस पद पर हैं, वह पद भूमि के पंजीकरण एवं उसके उपयोग जैसी गतिविधियों से जुड़ा पद है। सरकार के राजस्व में पंजीकरण शुल्क का बड़ा हिस्सा शामिल है। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा से कार्य करें। कहीं भी भूमि धोखाधड़ी जैसे मामले सामने न आए। इस कार्य को गहनता के साथ संपादित करें। उन्होंने कहा कि जमीन के फर्जी पंजीकरण, बंटवारे आदि को लेकर बहुत सारे मामले सामने आते रहते हैं, लेकिन यदि हम अपना कार्य त्रुटिरहित एवं निष्पक्षता से करेंगे तो ऐसे मामले सामने नहीं आएंगे। उन्होंने सभी अधिका. रियों को शुभकामनाएं प्रेषित की तथा अपने कार्य क्षेत्र में निष्ठा भाव से कार्य करने की बात कही। यहां कार्यकारी निदेशक राजस्व एवं भूलेख प्रशिक्षण संस्थान अल्मोड़ा चंदन सिंह डोबाल समेत अन्य मौजूद रहे।

## छात्रों ने किया ब्रॉन्ज फैक्ट्री ताड़ीखेत का भ्रमण किया

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**रानीखेत।** केंद्रीय विद्यालय रानीखेत के छात्रों ने ताड़ीखेत स्थित ब्रान्ज फैक्ट्री का भ्रमण किया। शैक्षणिक भ्रमण मानक क्लब के अंतर्गत करवाया गया था। यात्रा का उद्देश्य छात्रों को ब्रान्ज पाउडर की उत्पादन प्रक्रिया और इसके प्रयोग से परिचित कराना था। इस यात्रा के दौरान छात्रों ने ब्रान्ज पाउडर बनाने की विधि, कच्चे माल से लेकर तैयार उत्पाद तक की प्रक्रिया को देखा। कारखाने के विशेषज्ञों ने छात्रों को इसके विभिन्न उपयोगों और उद्योग में उसकी महत्ता के बारे में जानकारी दी। छात्रों ने कारखाने के विभिन्न विभागों का दौरा किया और यहां की कड़ी मेहनत को समझा। मानक क्लब की रिसोर्स पर्सन नीतिका बिष्ट अग्रवाल ने इस प्रकार की शैक्षिक यात्राओं के महत्व को रेखांकित किया और बताया कि इस तरह के भ्रमण से छात्रों को केवल ज्ञान ही नहीं, बल्कि उद्योग से जुड़ी वास्तविक जानकारी भी मिलती है, जिससे उनका समग्र विकास होता है। इस अवसर पर क्लब के मेंटर करिश्मा चंदेल ने छात्रों के उत्साह को सराहा और आगे भी ऐसे शिक्षाप्रद भ्रमण आयोजित करने का आश्वासन दिया। इस दौरान विद्यालय के शिक्षक दीपक जोशी, जीवन कुमार, विनय, आराधना आदि विद्यार्थियों के साथ रहे।

# नारी स्वावलंबन के लक्ष्यों को प्राप्त करें: डीएम

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**अल्मोड़ा।** बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के अंतर्गत जनपद में गठित जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक जिलाधिकारी आलोक कुमार पांडेय की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट में आयोजित हुई। बैठक में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम को बेहतर तरीके से संचालित करने एवं इस कार्यक्रम के उद्देश्य को प्राप्त करने के संबंध में विस्तृत चर्चा हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा इस कार्यक्रम के मिशन शक्ति के अंतर्गत नारी शक्ति, नारी सम्मान एवं नारी स्वावलंबन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रभावी कार्यवाही की जाए। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिका. रियों को निर्देश दिए कि इस अभियान की जागरूकता को बढ़ाने एवं इसका लाभ पात्रों तक पहुंचना सुनिश्चित किया जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि जनपद की बेटियां जिस क्षेत्र में भी बेहतर कार्य कर रही हों, उनका चयन कर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम के तहत उनको पुरस्कृत करें एवं उनका उत्साहवर्धन किया जाए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय खेलों के अंतर्गत अल्मोड़ा में आयोजित योगा. सन प्रतियोगिता के दौरान स्कूली छात्राओं ने अद्भुद सांस्कृतिक कार्यक्रम किए। उन्हें भी इस कार्यक्रम के तहत सम्मानित एवं पुरस्कृत करें। जिलाधिकारी ने कहा कि खत्याड़ी में स्थलीय मंगलदीप विद्यामंदिर की बालिकाओं के लिए भी प्रोत्साहन कार्यक्रम किए जाएं एवं इन्हें सहायता दी जाए। महिला सुरक्षा एवं सम्मान के संबंध में जागरूकता बढ़ाई जाए। जिला कार्यक्रम अधिकारी पीतांबर प्रसाद ने बैठक में योजना के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा इस अभियान के अंतर्गत आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के संबंध में समिति के सदस्यों से सुझाव भी लिए, जिससे उन सुझावों पर कार्य योजना बनाकार उनका कार्यान्वयन किया जा सके। बैठक में मुख्य चिकित्साधिकारी डा. आरसी पंत, बाल विकास समिति की सदस्या मीता उपाध्याय, जिला पंचायत राज अधिकारी राजेंद्र सिंह समेत अन्य संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।



# एसएसजे के विभागों का निरीक्षण

**शाह टाइम्स संवाद्दाता**

**अल्मोड़ा।** एशियन डेवलपमेंट बैंक की ओर से नरेंद्र कुमार चांडिल्य ने शुक्रवार को एसएसजे विवि के अल्मोड़ा परिसर में मूलभूत आवश्यकताओं को लेकर विभिन्न विभागों, प्रयोगशालाओं, कंप्यूटर लैब का निरीक्षण किया। उन्होंने परिसर निदेशक प्रो. प्रवीण सिंह बिष्ट से परिसर से संबंधित जानक. ारी ली। परिसर निदेशक प्रो. प्रवीण सिंह बिष्ट ने बताया कि निरीक्षण के दौरान परिसर की प्रयोगशालाओं, परिसर के विभागों, भवनों व कक्षों की स्थिति एवं मूलभूत संसाधनों की आवश्यकता, संचालित रोजगारपरक पाठ्यक्रमों की स्थिति, विवि में छात्रों की संख्या आदि की जानकारी दी गई। इस दौरान परीक्षा नियंत्रक डा. नंदन सिंह बिष्ट ने परीक्षा और विद्यार्थियों से संबंधित और कुलानुशासक डा. दीपक ने परिसर में प्रवेश लिए हुए विद्यार्थियों से संबंधित जानकारी दी। निरीक्षण के दौरान विवि व परिसर की स्थापना, कक्षाओं और कक्षों की उपलब्धता, विद्यार्थियों से संबंधित आंकड़े, परिसर में संचालित पाठ्यक्रमों की स्थिति, रोजगारपरक पाठ्यक्रमों के संचालन की प्रक्रिया, प्लेसमेंट कमेटी की स्थिति, नवीन शिक्षा नीति के तहत संचालित पाठ्यक्रमों के क्रियान्वयन और विद्यार्थियों के फीडबैक, परिसर में कार्यरत फैकल्टीज पर अतिरिक्त कार्यभार, स्किल डेवलपमेंट कोर्स के संचालन की स्थिति, 12 बी स्टेटस की स्थिति, कॉलेज संबंधी मान्यता, परिसर को मिलने वाले सरकारी ग्रांट की स्थिति, विभिन्न स्रोतों से मिलने वाले ग्रांट, बी वोक कोर्स के संचालन, विद्यार्थियों से लिये जा रहे शुल्क की स्थिति, शुल्क निर्धारण कमेटी एवं प्लेसमेंट कमेटी की स्थिति, विद्यार्थियों को प्रदत्त विभिन्न छात्रवृत्तियां, नवीन पाठ्यक्रमों के संचालन और विभाग खोलने की प्रक्रिया आदि से संबंधित विषयों पर विस्तार से बात. चीत हुई। नरेन्द्र कुमार ने जानकारी प्राप्त कर परिसर के जंतु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भूगोल, भौतिक, कंप्यूटर लैब, रसायन विज्ञान आदि विभागों का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान प्रो ज्योति जोशी, प्रो. रुबीना अमान, डा. मुकेश सामंत, डा. आर सी मौर्य, डा. धनी आर्या, डा. बलवंत कुमार, डा. पारुल सक्सेना, विवि मीडिया प्रभारी डा. ललित चंद्र जोशी, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी देवेंद्र सिंह धामी, पूरन कनवाल, गणेश तिवारी मौजूद रहे।

## 6624 परीक्षार्थी परीक्षा में शामिल हुए

**अल्मोड़ा।** उत्तराखंड विद्यालयी शिक्षा परिषद की बोर्ड परीक्षाएं शुक्रवार से शुरू हो गई हैं। पहले दिन हाईस्कूल हिन्दुस्तानी संगीत व टंकण, इंटरमीडिएट में हिन्दी और कृषि हिन्दी की परीक्षा हुई। परीक्षा में कुल 6624 परीक्षार्थी शामिल हुए। शाम करीब 05 बजे बोर्ड परीक्षा नियंत्रण कक्ष प्रभारी जनार्दन तिवारी ने बताया कि पहले दिन हाईस्कूल हिन्दुस्तानी संगीत व टंकण कुल पंजीकृत 13 छात्राओं ने परीक्षा दी। जबकि इंटर हिन्दी में कुल पंजीकृत 6655 में से 6593 परीक्षार्थी परीक्षा शामिल हुए और 62 अनुपस्थित रहे। वहीं, हिन्दी कृषि में कुल 20 में से 19 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। एक परीक्षार्थी गैरहाजिर रहा। सचल दल ने सीईओ अत्रेश सयाना के नेतृत्व में जीजीआईसी बग्वालीपोखर, मिशन इंटर कालेज द्वाराहाट, जीजीआईसी द्वाराहाट, जीआईसी चित्रेश्वर और पटलगांव का निरीक्षण किया।

## भाजपा महिला मोर्चा की नगर महामंत्री आशा शुक्ला ने मेयर से की मुलाकात

**शाह टाइम्स ब्यूरो**

**हल्द्वानी।** भाजपा महिला मोर्चा की नगर महामंत्री आशा शुक्ला ने महानगर हल्द्वानी के नवनिर्वाचित महापौर गजराज बिष्ट से मुलाकात कर उन्हें मेयर बनने की शुभकामनाएं दीं। इस दौरान उन्होंने महापौर को शहर की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया और उम्मीद जताई कि उनके पांच साल के कार्यकाल में हल्द्वानी में अभूतपूर्व विकास कार्य होंगे। आशा शुक्ला ने कहा हल्द्वानी में अब ट्रिपल इंजन की सरकार है, जिसमें केंद्र और राज्य सरकार का पूरा फोकस विकास कार्यों पर है। इसका सीधा लाभ शहर को मिलेगा। उन्होंने महापौर गजराज बिष्ट की सराहना करते हुए कहा कि अतिक्रमण हटाओ अभियान को धाकड़ तरीके से चलाने की दिशा में जो प्रयास किए जा रहे हैं, वे शहर के यातायात व्यवस्था को सुधारने में मददगार होंगे। आशा शुक्ला ने यह भी विश्वास जताया कि मेयर के नेतृत्व में हल्द्वानी शहर में नए आयाम छुएंगे और विकास कार्यों की गति तेज होगी।

# द. अफ्रीका ने अफगानिस्तान को 107 रनों से हराया

● रायन रिकलटन ने 103 रनों की शतकीय पारी खेली, रबाडा ने तीन विकेट हासिल किए



**कराची, वार्ता।** रायन रिकलटन (103) की शतकीय, कप्तान तेम्बा बवूमा (58), एडन मारक्रम (नाबाद 52) रासी वान दर दुसें (52) की अर्द्धशतकीय पारियों के बाद गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत दक्षिण अफ्रीका ने शुक्रवार को चैंपियंस ट्रॉफी के तीसरे मैच में अफगानिस्तान को 107 रनों से हरा दिया।

316 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी अफगानिस्तान की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 50 रन के स्कोर पर अपने चार विकेट गवां दिये। रहमानउल्लाह गुरबाज (10), इब्राहिम जदरान (17), सेदिकुल्लाह अटल (16) और हशमतउल्लाह शहीदी (शून्य) पर आउट हुए। इस दौरान रहमत शाह एक छोर थामे रन बनाते रहे। आलम यह रहा कि दक्षिण अफ्रीकी गेंदबाजी आक्रमण के आगे अफगानिस्तान के विकेट अंतराल पर गिरते रहे।

अजमतउल्लाह ओमरजई (18) को कगिसो रबाड़ा ने आउट किया। मोहम्मद नबी (आठ) को यानसन ने अपना शिकार बनाया। गुलबदीन नईब (13) और राशिद खान (18) रन बनाकर आउट हुए। 43 ओवर की तीसरी गेंद पर कगिसो रबाड़ा ने रहमत शाह को आउटकर अफगानिस्तान की पारी का 208 के स्कोर पर अंत कर दिया। रहमत शाह ने अफगानिस्तान के लिए 92 गेंदों में नौ चौके और एक छक्का लगाते हुए (90) की पारी खेली। दक्षिण अफ्रीका की ओर से कगिसो रबाडा ने तीन विकेट लिए। वियान मुल्डर और लुंगी एन्गिडी ने दो-दो विकेट लिए।

यानसन, और केशव महाराज ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले आज यहां अफ्रीका के कप्तान तेम्बा बवूमा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी अफ्रीका की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 28 के स्कोर पर टोनी डीजार्जी (11) का विकेट गवां दिया। उन्हें मोहम्मद नबी ने आउट किया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आये कप्तान बवूमा ने रायन के साथ पारी को संभाला।

भारत-पाक महामुकाबला

# हम भारत से कमजोर हैं: अफरीदी

● मैच से पहले बोले शाहिद अफरीदी, कहा: हमारे पास खिलाड़ी कंसिस्टेंट नहीं हैं

**दुबई, वार्ता।** भारत और पाकिस्तान के बीच 23 फरवरी को महामुकाबला खेला जाना है। इस मैच को लेकर फैंस बेहद उत्साहित हैं। मुकाबले से पहले ऑफिशियल ब्रॉडकास्टर ने एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें शाहिद अफरीदी, युवराज सिंह, इंजमाम उल हक और नवजोत सिंह सिद्धू जैसे दिग्गज शामिल हुए। इस दौरान अफरीदी ने भारत की तुलना में अपनी टीम को कमजोर बताया है। उन्होंने कहा है कि उनके खिलाड़ी कंसिस्टेंट नहीं हैं। अफरीदी ने कहा हां अगर हम मैच-विजेताओं के बारे में बात करते हैं, तो मैं कहूंगा कि भारत के पास पाकिस्तान की तुलना में अधिक मैच-विजेता हैं। एक मैच-विजेता वह है जो अकेले दम पर खेल जीतना जानता हो। अभी हमारे पास पाकिस्तान में ऐसे खिलाड़ी नहीं हैं। भारत की ताकत उसके मध्य और निचले क्रम के खिलाड़ी हैं, जो उन्हें मैच जिता रहे हैं। लंबे समय से हम खिलाड़ियों को मौके दे रहे हैं, लेकिन कोई भी लगातार आगे नहीं बढ़ पाया है। कुछ ने कुछ मैचों में अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन हमारे पास ऐसे खिलाड़ी नहीं हैं जो लगातार ऐसा कर सकें। उन्होंने अपने प्रदर्शन को एक या दो साल या 50-60 मैचों तक कायम रखा। यहीं पर हम भारत की तुलना में थोड़े कमजोर हैं, जो इस क्षेत्र में बहुत मजबूत है। लेकिन भारत के खिलाफ जीत की कुंजी सामूहिक प्रदर्शन है। चाहे वह बल्लेबाज हों, गेंदबाज हों या स्पिनर हों, हर किसी का योगदान महत्वपूर्ण है। अफरीदी ने कहा कि एक कप्तान के रूप में रिजवान को दूसरों के लिए एक उदाहरण स्थापित करना होगा। यह बहुत महत्वपूर्ण है। उन्हें हर मैच में प्रदर्शन करना होगा और उनका रवैया, शारीरिक भाषा और नेतृत्व बहुत मायने रखता है। एक कप्तान होने के नाते प्रशंसा और आलोचना समान मात्र में मिलती है। उनका प्रदर्शन महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि वह टीम को एक साथ रखने वाले गोंद है। वह सभी के साथ समान व्यवहार करते हैं, वह एक जुझारू खिलाड़ी हैं और मैदान पर उनकी ऊर्जा शानदार है।

# गिल ने बनाया करियर का सबसे धीमा शतक

**दुबई, वार्ता।** भारतीय टीम के सलामी बल्लेबाज शुभमन गिल ने गुरुवार को बांग्लादेश के खिलाफ परिस्थितियों के अनुसार अपने एकदिवसीय करियर का सबसे धीमा नाबाद शतक बनाया।

■ 2019 विश्व कप बाद यह किसी भी भारतीय बल्लेबाज के द्वारा वनडे में सबसे धीमा शतक है

शुभमन गिल का यह शतक ऐसे समय में आया जब भारत विराट कोहली, श्रेयस अय्यर और अक्षर पटेल का विकेट गंवा कर मुश्किल में था। ऐसे कठिन समय में गिल समझदारी से बल्लेबाजी करते हुए भारत को जीत दिलाई। यह उनका आठवां एकदिवसीय शतक है। 2019 विश्व कप के बाद यह किसी भी भारतीय बल्लेबाज के द्वारा एकदिवसीय में सबसे धीमा शतक है। गिल ने उनकी विजयी शतकीय पारी के लिए 'प्लेयर ऑफ द मैच' से नवाजा गया। मैच के बाद गिल ने कहा कि यह निश्चित रूप से मेरे सबसे अच्छे शतकों में से एक था।आईसीसी टूर्नामेंट में यह मेरा पहला शतक है। मैं बेहद खुश हूं। पिच आसान नहीं था। शुरुआत में ऑफ स्टंप के बाहर की गेंद बल्ले पर ठीक से नहीं आ रही थी।

इसलिए मैंने तेज गेंदबाजों के खिलाफ क्रीज का इस्तेमाल कर गेंद को सर्कल के ऊपर से खेलने का प्रयास किया। फिर जब स्पिनर्स आए, तो मैंने और कोहली ने इस बारे में बात की कि फ्रंट फुट पर सिंगल लेना आसान नहीं हो रहा था, इसलिए मैंने बैक फुट पर खेलने पर ध्यान केंद्रित किया।

## BSF ने बॉर्डरमेन 'मैराथन 2025' के चौथे संस्करण का किया आयोजन

**अमृतसर, वार्ता।** सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) आगामी 23 फरवरी को अमृतसर में 'बॉर्डरमेन मैराथन 2025' के चौथे संस्करण का आयोजन करने जा रही है। 'हैंड इन हैंड विद वॉर्डर पॉपुलेशन' थीम के आधार पर यह मैराथन न केवल एक खेल आयोजन है, बल्कि सीमावर्ती युवाओं को सशक्त बनाने और स्वस्थ भारत के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। बीएसएफ ने शुक्रवार को यहां जारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि इस भव्य आयोजन की गरिमा को बढ़ाने के लिए भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) बीएसएफ के महा. निदेशक दलजीत सिंह चौधरी मुख्य अतिथि होंगे। वर्ष 2022 से आरंभ हुई यह वार्षिक मैराथन, जो एथलेटिक्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वावधान में आयोजित की जाती है।


कार्यालय अधिशासी अभियन्ता
विद्युत परीक्षण खण्ड, उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लि0
जिला पंचायत परिसर, धारानौला, अल्मोड़ा

उत्तराखण्ड पावर कारपोरेशन लि०

पत्रांक– 898 /वि0प0ख0(अ0)/ए–11 दिनांक 21/02/2025

ई– निविदा सूचना

अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु ई–निविदा आमंत्रित की जाती है।

| क0 सं0 | ई–निविदा संख्या | कार्य का विवरण | ई–निविदा प्रपत्र कय राशि (जी0एस0टी0 सहित) | धरोहर धनराशि | ई–निविदा कय/जमा करने की ऑनलाइन/ऑफलाइन अन्तिम तिथि एवं समय | ई–निविदा खुलने की ऑनलाइन/ऑफलाइन तिथि एवं समय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 21/2024–25 वि0प0ख(अ) | Complete plate electrode ground earthing works at 33/11 KV substation GIS Syalidhar | 590.00 | 17600.00 | 13–03–2025 15:00 बजे तक | 14–03–2025 12:00 बजे तक |
| 2 | 22/2024–25 वि0प0ख(अ) | Complete plate electrode ground earthing works at 33/11 KV substation Kosi | 1180.00 | 30700.00 | 13–03–2025 15:00 बजे तक | 14–03–2025 12:00 बजे तक |
| 3 | 23/2024–25 वि0प0ख(अ) | Complete plate electrode ground earthing works at 33/11 KV substation Someshwar | 1180.00 | 30700.00 | 13–03–2025 15:00 बजे तक | 14–03–2025 12:00 बजे तक |

उक्त ई–निविदा की अन्य नियम व शर्तें वैबसाईट www.uktenders.gov.in पर देखी जा सकती है।
ई–निविदा की ऑफलाईन बिड(भाग–1) कार्यालय में जमा करने की अन्तिम तिथि 13–03–2025 (15:00 बजे) है।
"विद्युत बिलों के 24x7 ऑनलाईन भुगतान हेतु www.upcl.org पर जाएँ"
" राष्ट्र हित में बिजली बचायें"

अधिशासी अभियन्ता


# केरल-विदर्भ रणजी के फाइनल में

**अहमदाबाद, वार्ता।** आदित्य सरवटे और जलज सक्सेना (चार-चार विकेट) की शानदार गेंदबाजी की बदौलत केरल और गुजरात के बीच खेला गया पहला सेमीफाइनल मुकाबला शुक्रवार को ड्रा रहा और केरल ने पहली पारी में मिली दो रनों की मामूली बढ़त के आधार पर रणजी ट्रॉफी के फाइनल में जगह पक्की कर ली है।

गुजरात ने कल के सात विकेट पर 429 के स्कोर से आगे खेलना शुरु किया। आज सुबह के सत्र में सरवटे ने जयमीत पटेल (78) को मोहम्मद अजहरूद्दीन के हाथों स्टंप करवाकर केरल को 436 के स्कोर पर आठवीं सफलता दिलाई।

इसके बाद सरवटे ने सिद्धार्थ देसाई (30) को पगबाधा आउट कर पवेलियन भेज दिया। अरजान नागवासवाला (10) भी सरवटे का शिकार बने। केरल के गेंदबाजों ने गुजरात की पूरी टीम 174-4 ओवर में 455 के स्कोर पर समेट कर दो रनों की बढ़त ले ली। केरल की ओर से आदित्य सरवटे और जलज सक्सेना (चार-चार विकेट) लिए। एम डी निधीष और एनपी बासिल ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इसके बाद दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी केरल ने अपने दो विकेट 32 के स्कोर पर गवां दिए। अक्षय चंद्रन (नौ), वरुण नयनार (एक) रन बनाकर आउट हुए। सिद्धार्थ देसाई ने रोहन कुन्नुमल (32) को आउटकर केरल को तीसरा झटका दिया। केरल का चौथा विकेट सचिन बेबी (10) रन के रूप में गिरा। मैच को ड्रा घोषित किये जाने के समय केरल का दूसरी पारी में स्कोर चार विकेट पर 114 रन था।


कार्यालय नगर निगम रूड़की, जनपद हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

पत्रांकः– 2267/सूचना/नाम परि0/कर–अनु0/न0नि0रूड़की/2024–25 दिनांकः– 21/02/2025

सार्वजनिक सूचना

नगर निगम अधिनियम 1959 की धारा 213(1)ख के अन्तर्गत नगर निगम रूड़की के भवन कर अभिलेखो में नाम परिवर्तन हेतु निम्न आवेदन प्राप्त हुए है। जिस किसी व्यक्ति को इन नामान्तरण/नामान्तरणो पर आपत्ति हो तो वह मय साक्ष्यों के प्रकाशन की तिथि से 30 दिवस के भीतर आपत्ति प्रस्तुत कर सकता है। समय उपरान्त प्राप्त आपत्ति पर विचार नही किया जायेगा। औरनामान्तरण पर अन्तिम निर्णय उपलब्ध अभिलेखो के अनुसार कर दिया जायेगा।

| क्र0सं0 | भवन सं0 व मौहल्ले का नाम | आवेदक/ क्रेता का नाम | भवन कर अभिलेखो मे दर्ज नाम जो निरस्त होना है। | स्वामित्व/अधिकार प्राप्ति का अधिकार |
|---|---|---|---|---|
| 01 | 76(35) सिविल लाईन | एल0टी0डी0ए0 केयर ऑफ अध्यासी श्री जुबैर अली पुत्र श्री नवाब अली | एल0टी0डी0ए0 केयर ऑफ अध्यासी श्री सफदर खान पुत्र मौ0 अली | शपथ–पत्र, कब्जा–नामा |
| 02 | 116 आवास विकास | श्रीमती शोभा तिवारी पत्नि श्री राजकिशोर | श्रीमती मीना जोशी पत्नि श्री महेश चन्द्र जोशी | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 03 | 397, नेहरूनगर | डा0 नवीन अग्रोही पुत्र स्व0 श्री मोतीराम | श्री मोतीराम पुत्र श्री स्व0 तुगल सिंह | मृत्य प्रमाण–पत्र, वसीयत |
| 04 | 98, मौ0 आदर्शनगर | श्री आशुतोष पुत्र स्व0 बिजेन्द्र कुमार उर्फ विजेन्द्र कुमार शर्मा | श्रीमती हरमेश शर्म पत्नि श्री विजेन्द्र कुमार शर्मा | शपथ–पत्र, मृत्य प्रमाण–पत्र पारिवारिक सत्यापन प्रमा0पत्र |
| 05 | 1399, रामनगर | मौ0 इकबाल पुत्र स्व0 कादम | श्री अब्दुल बारिक पुत्र स्व0 कादम | मृत्यु प्रमाण–पत्र, वसीयत |
| 06 | 471, गणेशपुर | श्रीमती बबीता पत्नि श्री योगेन्द्र सिंह | श्री ईश्वर सिह पुत्र स्व0 श्री रूड़ा सिंह | शपथ–पत्र, दान–पत्र |
| 07 | 231, बी0टी0 गंज | श्री ललित कालरा पुत्र नवनीत लला कालरा | श्री नवनीत कालरा पुत्र स्व0 श्री रेमल दास कालरा | शपथ–पत्र, दान–पत्र |
| 08 | 401, मौ0 सोत | मौ0 शाहिद व श्री आबिद अंसारी पुत्रगण श्री सलामत अली | श्री बाल किशन गिरी पुत्र श्री शम्भू भारती, श्री सत्य प्रकाश उर्फ सोनू पुत्र श्री बाल किशन गिरी, श्रीमती नीलम भारती पत्निस्व0 श्री ललित भारती उर्फ मोनू, श्रीमती ललीता भारती पत्नि श्री अजय गिरी पुत्री श्री बाल किशन गिरी व अल्का भारती पत्नि स्व0 सतेन्द्र भारती व श्री पंकज भारती पुत्र श्री लाल किशन भारती | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 09 | 333 आवास विकास | श्रीमती अंजीला नेगी पत्नि श्री अरूण नेगी | श्रीमती तुलिका आर्य पत्नि श्री संदीप आर्य | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 10 | 213, आदर्शनगर | श्रीमती पुष्पा देवी पत्नि श्री सुनील कुमार | श्रीमती संगीता पत्नि श्री विरेन्द्र | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 11 | 1017, पुरानी तहसील | श्रीमती गौरव रानी जिन्दल पत्नि श्री अनुज कुमार जिन्दल व रिषभ जिन्दल पुत्र श्री अनुज कुमार जिन्दल | श्रीमती स्नेहलता सिंघल पत्नि श्री राकेश व श्रीमती उर्वशी पत्नि श्री राजीव सिंघल | मृत्य प्रमाण–पत्र, परिवारिक सत्यापन प्रमाण–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 12 | 300, मकतूलपुरी | श्रीमती सुशीला पत्नि श्री पप्पू | श्री आलोक, श्री अशोक कुमार पुत्रगण श्री हरिचन्द धीमान | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 13 | 1508(5), अ0 ता0 पश्चिमी | श्री हेमन्त मेहन्दीरत्ता पुत्र श्री सत्यानन्द | सरदार जसवन्त सिंह पुत्र स्व0 सरदार पूरण सिंह | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 14 | 140, मौ0 नेहरूनगर | श्री जग मोहन शर्मा पुत्र श्री दयाल शरण शर्मा | श्री गौरव सिंघल पुत्र स्व0 श्री सुभाष चन्द सिंघल व श्री विनीत सिंघल पुत्र स्व0 श्री सुभाष चन्द सिंघल | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 15 | 625/बी, आदर्शनगर | श्री अरविन्द कुमार पुत्र श्री गिरवर सिंह | श्री शिवम सैनी पुत्र श्री पिरथी सिंह | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 16 | 316, मौ0 सोत | श्री शरण अग्रवाल पुत्र त्रिलोक चन्द अग्रवाल | श्री सुबोध कुमार पुत्र श्री ओम प्रकाश | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 17 | 773, मौ0 पुरानी तहसील | श्रीमती सुनीता वशिष्ट पत्नि सतीश वशिष्ट, श्री सतीश वशिष्ट पुत्र श्री रूपचन्द | श्री संजय कुमार अग्रवाल पुत्र स्व0 श्री अमरनाथ व श्री राजकुमार अग्रवाल पुत्र स्व0 श्री अमरनाथ | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 18 | 326, पूर्वावल्ली | श्रीमती शशी पत्नि स्व0 श्री भंवर सिंह | श्री राजपाल सिंह पुत्र स्व0 श्री केवल व श्री भंवर सिंह पुत्र स्व0 श्री राजपाल सिंह | मृत्यु प्रमाण–पत्र, पारिवारिक सत्यापन प्रमाण–पत्र |
| 19 | 1438/1, गणेशपुर | श्रीमती पूनम भारद्वाज पत्नि संजय भारद्वाज | श्री सत्य प्रकाश वर्दीया पुत्र श्री ओम प्रकाश वर्दीया | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 20 | 97, शेखपुरी | मौ0 अमजद पुत्र मौ0 यासीन | श्रीमती नाजो पत्नि मौ0 इकबाल, श्रीमती गजाला पत्नि श्री अहसान व श्रीमती रूखसाना पत्नि श्री अफजाल | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 21 | 1231 सिविल लाईन | श्री जसविन्द्र सिंह पुत्र श्री घमिन्द्र सिंह | श्री ओमपाल सिंह नरेशपाल सिंह पुत्र श्री मन्नू सिंह | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 22 | 943, आदर्शनगर | श्री निशांत अरोड़ा व श्री साहिल अरोड़ा पुत्रगण श्री रामकुमार अरोड़ा | मौ0 अजमल पुत्र मौ0 अफजाल | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 23 | 636 पुरानी तहसील | श्री खुशनसीब पुत्र श्री यूसुफ | श्री मुस्तकीम अहमद पुत्र श्री मुन्फैत अली | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 24 | 1379 सिविल लाईन | रितू जैन पुत्री स्व0 सुशील कुमार अग्रवाल | श्रीमती अनीता अग्रवाल पत्नि स्व0 श्री सुशील कुमार अग्रवाल | शपथ–पत्र, मृत्यु प्रमाण–पत्र पारिवारिक सत्य0 प्रमाण–पत्र |
| 25 | 815/1, चावमण्डी | श्रीमती प्राची अग्रवाल पत्नि मनोज कुमार | श्री गौरव वडेहरा पुत्र श्री अशोक कुमार वडेहरा | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 26 | 140, अ0 ता0 पूर्वी | श्री नवीन कुमार पुत्र श्री भूषण लाल | श्री ईश्वरी लाल शास्त्री पुत्र श्री गिरधारी लाल | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 27 | 1524, चावमण्डी | श्री संदीप सैनी पुत्र श्री जगपाल सिंह | श्री राजेन्द्र प्रसाद पुत्र श्री विष्णु दत्त | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 28 | 241, मौ0 सत्ती का जुज भाग | श्री जमाल अख्तर पुत्र श्री अय्यूब अली | श्री अय्यूब अली पुत्र श्री रहीमुददीन | शपथ–पत्र, मृत्यु प्रमाण–पत्र, व्सीयत, पारिवारिक सह स्वामी अन्तरण विलेख–पत्र |
| 29 | 410(1–9), 411(1–7), का जुज भाग पुरानी तहसील | श्री सलीम अहमद पुत्र स्व0 श्री अकिल अहमद | श्री अकिल अहमद स्व0 शौकत अली | शपथ–पत्र, मृत्यु प्रमाण–पत्र पारिवारिक सत्य0 प्रमाण–पत्र |
| 30 | 1423 सिविल लाईन | श्री कुंवर जावेद इकबाल पुत्र अब्दुल हमीद | श्रीमती अजरा जावेद पत्नि श्री कुंवर जावेद इकबाल, | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 31 | 70ए, मौ0 चावमण्डी | श्रीमती पुष्पा देवी पत्नि श्री इन्द्र गिरी | (अध्यासी) चाँद पत्नि श्री नन्द लाल | मृत्यु प्रमाण–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 32 | 723, अ0 ता0 पूर्वी | श्रीमती नूर फात्मा पत्नि स्व0 महबूब हसन | श्रीमती नूर फात्मा पत्नि स्व0 श्री महबूब हसन | शपथ–पत्र, मृत्यु प्रमाण–पत्र पारिवारिक सत्य0 प्रमाण–पत्र |
| 33 | 324, 324(1), मौ0 नेहरूनगर | मौ0 इकबाल पुत्र स्व0 श्री कादम | श्री अब्दुल बारिक पुत्र स्व0 श्री कादम | शपथ–पत्र, मृत्यु प्रमाण–पत्र, वसीयत |
| 34 | 315, मौ0 माहीग्रान | श्रीमती इफ्फत पत्नि मौ0 अन्जार व श्रीमती लायबा नूर पत्नि श्री अब्दुल्ला सईद | (अध्यासी) श्रीमत हबीब फात्मा पत्नि नूर मौहम्मद | शपथ–पत्र, मुख्यारनामा, विक्रय–पत्र |
| 35 | 463/1, सिविल लाईन | श्री राकेश अग्रवाल, श्री रोमेश कुमार अग्रवाल श्री नरेश अग्रवाल पुत्रगण स्व0 महेन्द्र अग्रवाल | श्रीमती विनोद अग्रवाल पत्नि श्री महेन्द्र अग्रवाल | शपथ–पत्र, मृत्यु प्रमाण–पत्र पारिवारिक सत्य0 प्रमाण–पत्र |
| 36 | 432 का जुज भाग, मौ0 चावमण्डी | श्री ओम प्रकाश व श्रीरमा कान्त पुत्रगण श्री जय भगवान | श्री कान्त गोयल व श्री प्रवीन कुमार पुत्रगण श्री जय भगवान गोयल | शपथ–पत्र, दान–पत्र, विभाजन विलेख–पत्र |
| 37 | 1502, अम्बर तालाब पश्चिमी | श्री देवेन्द्र पाल सिंह पुत्र स्व0 श्री आलम चन्द | श्री आलम चन्द पुत्र श्री इन्दुरथ सिंह | शपथ–पत्र, मृत्यु प्रमाण–पत्र पारिवा0 सत्यापन प्रमाण–पत्र |
| 38 | 827, रामनगर | श्री सौरभ सिंह पुत्र अशोक कुमार | श्रीमती किरण गोयल पत्नि श्री भूमेश गोयल | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 39 | 503/7, गणेशपुर | श्री गजपाल सिंह रावत पुत्र स्व0 श्री पंचम सिंह | श्रीमती आभा आर्य पत्नि श्री कपिल सैनी | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 40 | 141(1), राजपूताना पश्चिमी | श्री राकेश अरोड़ा पुत्र श्री कृष्ण लाल अरोड़ा श्रीमती मोनिका अरोड़ा पत्नि राकेश अरोड़ा | श्रीमती आशा अरोड़ा पत्नि श्री राकेश अरोड़ा | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 41 | 447, अम्बर तालाब पूर्वी | श्री रितेश कुमार, श्री आशीष कश्यप व श्री हिमांशु पुत्रगण स्व0 विक्रम सिंह व श्रीमती संगीता पुत्री स्व0 विक्रम सिंह | श्रीमती कुसुम लता पत्नि श्री विक्रम सिंह | शपथ–पत्र, मृत्यु प्रमाण–पत्र पारिवा0 सत्यापन प्रमाण–पत्र |
| 42 | 779 का जुज भाग अम्बर तालाब पश्चिमी | श्रीमती संध्या पत्नि श्री रवि | श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता पत्नि स्व0 श्री कैलाश चन्द गुप्ता | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 43 | 287, सिविल लाईन | श्री विपुल सचदेवा पुत्र श्री सुनील सचदेवा | श्रीमती कृष्णा रानी पत्नि श्री कृष्ण पाल | दान–पत्र, विक्रय–पत्र, |
| 44 | 1335, सिविल लाईन | श्रीमती किरन हान्डा पत्नि सुभाष चन्द्र हान्ड | श्रीमती प्रमिला पत्नि श्री विजेन्द्र | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 45 | 264, मलकपुर | श्रीमती शाहनवाज फातिफा नजामुददीन पत्नि श्री नजामुददीन | श्री नजामुददीन पुत्र श्री हमीदूदीन | शपथ–पत्र, मृत्यु प्रमाण–पत्र, पारिवा0 सत्यापन प्रमाण–पत्र |
| 46 | 485, चावमण्डी का जुज भाग | श्रीमती बेबी पत्नि श्री पवन | श्री अश्वनी कुमार पुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 47 | 698/9, मौ0 सत्ती | श्रीमती रूबीना आसिम पत्नि मौह0 आसिम | श्री जमशेद इकबाल पुत्र स्व0 श्री हामिद मियॉं | शपथ–पत्र, दान–पत्र |
| 48 | 487, आवा विकास | श्री प्रमोद कुमार पुत्र श्री अतर सिंह | श्री रणवीर सिंह पुत्र श्री अतर सिंह | शपथ–पत्र, दान–पत्र |
| 49 | 297, मौ0 नेहरूनगर | श्री हेमन्त गुप्ता पुत्र श्री राजकुमार गुप्ता व श्री अंकुर जिन्दल पुत्र श्री रमेश चन्द जिन्दल | कर्नल जीतपाल सिंह रावत, श्री हुकम सिंह रावत, श्री राजेन्द्र पाल सिंह रावत व श्री तेजपाल सिंह रावत पुत्रगण स्व0 श्री मेजर चन्द्र सिंह रावत | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 50 | 818(2), रामनगर | श्री मनीष मदान पुत्र श्री मदन लाल | सं0 मंजीत सिंह पुत्र स0 मस्तान सिंह व श्रीमती पूनम अरोड़ा पत्नि श्री हरीश कुमार | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 51 | 1041, सिविल लाईन | श्री संजीव भटेजा पुत्र श्री प्रदीप भटेजा | श्री प्रदीप कुमार पुत्र श्री नर सिंह | शपथ–पत्र, विक्रय–पत्र |
| 52 | 1439/1, गणेशपुर | श्री अनुज कमार मौर्य पुत्र स्व0 नरेश कुमार | श्री नरेश कुमार पुत्र श्री चन्दरूप सिंह | शपथ–पत्र, मृत्यु प्रमाण–पत्र,, परिवा0 सत्यापन प्रमाण–पत्र |

कर–लिपिक
नगर निगम रूड़की

कर–अधीक्षक
नगर निगम रूड़की

## लक्सर विधायक ने विधानसभा सत्र में मजबूती से उठाया विकास व आपदा से नुकसान का मुद्दा

# आपदा से नुकसान की भरपाई नहीं कर पाई सरकार: शहजाद

### सूबे के पीडब्ल्यूडी व सिंचाई मंत्री ने दिया लादपुर कला पुल के जल्द निर्माण का आश्वासन

**शाह टाइम्स संवाददाता**

**लक्सर।** लक्सर विधायक हाजी मौ शहजाद ने विधानसभा सत्र में लक्सर विधानसभा क्षेत्र की समस्याओं के अलावा विकास के मुद्दों को जोर-शोर से उठाया वहीं आपदा के दौरान हुए नुकसान की भरपाई के मुद्दे को भी मजबूत तरीके से सदन में रखा जिस पर सरकार ने अब जल्द कार्रवाई का आश्वासन दिया है ।

विधानसभा सत्र के दौरान लक्सर विधायक हाजी शहजाद ने सदन में क्षेत्र के समस्याओं व विकास के मुद्दे को पुरजोर तरीके से उठाते हुए 2023 में बरसात से आई आपदा में हुए नुकसान की बाबत भी मुद्दे को उठाते हुए सरकार का ध्यान दिलाया कि सरकार आज तक अपना वादा पूरा नहीं कर पाई है शाहजहां विधायक ने सदन मैं पुरजोर तरीके से अपनी बात रखते हुए कहा कि बरसात से आपदा में क्षेत्र के लादपुर कला गांव में पुल का एक हिस्सा पानी से बह गया था जिससे करीबदो दर्जन गांवों के लोगों को भारी परेशानी हो रही है दूर से चक्कर काट कर आना पड़ रहा है ।उन्होंने कहा कि इस मुद्दों को कई बार उठा चुके हैं यहां पीडब्ल्यूडी मंत्री व गनना मंत्री व सीएम ने भी आपदा ग्रस्त क्षेत्र का दौरा करकिसानों को मुआवजा व अन्य भरपाई करने का आश्वासन दिया था लेकिनना तो कम ना सिंचाई मंत्री और गन्ना मंत्री आज तक कोई अपना वादा पूरा कर पाए हैं।

शहजाद विधायक ने विधानसभा सत्र के दौरान आपदा क्षेत्र में हुए नुकसान की अप और ध्यान दिलाते हुए कहा किवह क्षेत्र की समस्याओं को लगातार उठाते रहे हैं उठाते रहेंगे लेकिन सरकार अपने वादे पर खड़ा नहीं उतर रही है उन्होंने कहा कि बरसात से आई आपदा के दौरान लक्सर के पिछले क्षेत्र में भारी नुकसान हुआ । आमजन के अलावा किसानों को भी बड़ा नुकसान उठाना पड़ा उस दौरान राज्य के मुख्यमंत्री खुद निरीक्षण करने आए थे और लोगों को जल्द उनके नुकसान की भरपाई का वादा किया था लेकिन वह



आज तक मात्र आश्वासन रहा सजाया विधायक ने कहा कि पीडब्ल्यूडी व सिंचाई मंत्री सतपाल महाराज भी निरीक्षण को आए थे आपदा से हुए नुकसान का उन्होंने जायज लिया वह भी साथ थे

> ❖आपदा के दौरान मुख्यमंत्री-सिंचाई मंत्री व गन्ना मंत्री ने जनता से किया वादा आज तक नहीं निभाया

लेकिन उन्होंने आज तक कोई काम नहीं कराया उन्होंने कहा कि गन्ना मंत्रीभावना भी उसे समयक्षेत्र में आए थे नुकसान का आकलन किया था लेकिन आज तक किसानों को या गरीब लोगों को कोई मदद नहीं मिली।

शहजाद विधायक ने कहा कि सरकार केवल आश्वासन दे रही है धरातल पर कोई काम नहीं कर रही है । लक्सर विधानसभा क्षेत्र एक पिछड़ा हुआ विधानसभा क्षेत्र है आपदा में क्षेत्र के आमजन और किसानों को भारी नुकसान हुआ है घरों में पानी ने तबाही मचाई थी किसानो की फैसले बर्बाद हो गई थी जिस बाबत राज्य के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से लेकर अन्य मंत्रियों ने मौके पर जाकर आकलन किया लोगों को नुकसान की भरपाई का आश्वासन दिया केंद्र के एक सचिव भी मौके पर पहुंचे थे सभी ने आश्वासन दिया था लेकिन आज तक भी सरकार ने लक्सर क्षेत्र में आपदा से हुए नुकसान की बाबत कोई ठोस कदम नहीं उठाया है केवल आश्वासन दिए हैंआपदा के दौरान एक तरह से मुख्यमंत्री व अन्य मंत्रियों ने पिकनिक स्पॉट समझकर दौरे किए लेकिन जनता को उसका कोई लाभ नहीं मिला है।

लकसर विधायक हाजी शहजाद ने विधानसभा सत्र के दौरान लक्सर विधानसभा क्षेत्र के किसानों के गन्ना बकाया के अलावा गाने के मूल्य व अन्य नुकसान की भरपाई हेतु जोर-शोर से उठाया तो क्षेत्र के विकास की बाबत भी सरकार में से मांग रखी ।इस बार फिर सदन में पीडब्ल्यूडी व सिंचाई मंत्री सतपाल महाराज ने लादपुर कला के पुल के जल्द निर्माण का आश्वासन दिया है उन्होंने कहा है कि सिंचाई विभाग व पीडब्ल्यूडी मिलकर लातपुर कल वाले पुल का जल निर्माण कार्य शुरू करवायेगी । शहजाद विधायक ने कहा कि वह अपने विधानसभा क्षेत्र के बुनियादी विकास व समस्याओं को लेकर लगातार सदन में उठाते रहे हैं और सरकार से मांग करते रहे हैंऔर वह आगे भी पूरी ईमानदारी जिम्मेदारी के साथ अपने क्षेत्र के बुनियादी विकासआम गरीब किसान लोगों की समस्याओं को हर स्तर पर उठाते रहेंगे और उन्हें हल करने का ईमानदारी से प्रयास करते रहेंगे ।

## स्मार्ट मीटर से आमजन पर बढ़ेगा बिजली का बोझ : तबरेज आलम

**लंढौरा।** बुक्कनपुर के पूर्व प्रधान व समाजसेवी तबरेज आलम ने कहा कि राज्य सरकार पहले से ही महंगाई की मार झेल रही जनता पर स्मार्ट मीटर के नाम पर बिजली का बोझ लादने की तैयारी कर रही है। ऐसी क्या स्थिति बनीं कि दो साल के अंदर फिर से इलेक्ट्रानिक मीटर हटाने पड़ रहे हैं। समाजसेवी व बुक्कनपुर के पूर्व ग्राम प्रधान तबरेज आलम ने प्रेस की जारी विज्ञप्ति में कहा कि सरकार जनता की सुविधा के लिए चुनी जाती है। न कि किसी व्यापारी को लाभ पहुंचाने के लिए। ऐसी क्या स्थिति बनीं कि दो साल के अंदर फिर से इलेक्ट्रानिक मीटर हटाने पड़ रहे हैं। सरकार फिलहाल लोगों का भरोसा जीतने की कोशिश में सरकारी भवनों में स्मार्ट मीटर लगाने की बात कर रही है। जाहिर है उनका बिल सरकार के खजाने से भरा जाएगा। वह बिल कम आए या ज्यादा, उससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। सरकारी अफसरों के घरों का बिल हो या मंत्री या संतरी के घर का बिजली का बिल हो, उसका भुगतान तो सरकार करेगी। लोगों को भरोसा एक ही स्थिति में हो सकता है जब दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी का हर कार्यकर्ता बोले कि पहले हमारे घर पर स्मार्ट प्रीपेड बिजली मीटर लगाया जाए ऐसा नहीं होता तो उत्तराखंड सरकार ने पूर्व विधायकों की पेंशन 40 हजार रुपए से बढ़ा कर 60 हजार रुपए नहीं करती।

### लंढौरा में 426 लोगों पर है जल संस्थान का डेढ़ करोड़ रुपये बकाया

# 31 मार्च तक बकाया बिल जमा न करने पर कटेंगे कनेक्शन

**शाह टाइम्स संवाददाता**

**लंढौरा।** कस्बे में जल संस्थान के 426 उपभोक्ताओं पर विभाग का करीब डेढ़ करोड़ रुपए बकाया है। जल संस्थान द्वारा ऐसे बड़े बकायादारों को अंतिम अवसर देते हुए 31 मार्च तक बकाया राशि पर लगे ब्याज में छूट दी जा रही है। साथ ही विभागीय अधिकारी बिल जमा न करने वाले उपभोक्ताओं के कनेक्शन काटने के साथ साथ उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की बात भी कह रहे हैं।

लंढौरा में जल संस्थान द्वारा साल 1984 में लंढौरा नगर पंचायत कार्यालय परिसर में पानी की टंकी का निर्माण कराया था। कस्बे के लोगों को पीने का पानी उपलब्ध कराने के लिए तीन नलकूपों भी निर्माण किया गया है। जिनसे कस्बे के 1150 पेयजल उपभोक्ताओं को कनेक्शन



दिया हुआ है। जल संस्थान के अवर अभियंता दीपक भट्ट ने बताया कि लंढौरा कस्बे के 426 उपभोक्ताओं के ऊपर लगभग 14405739 (एक करोड़ चालीस लाख पांच हजार सात सौ उंतालीस रुपए) बिल बकाया है। उन्होंने बताया कि लगातार बकाया बिल जमा करने के लिए उपभोक्ताओं को कहा जाता है। लेकिन उसके बाद भी उपभोक्ताओं द्वारा बिल जमा नहीं कराए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि अभी पिछले दिनों शासनादेश जारी हुआ है कि जिन उपभोक्ताओं का बिल रुका हुआ है। उस उपभोक्ता से सरकार द्वारा जुर्माना नहीं वसूला जाएगा। दीपक भट्ट ने बताया कि उपभोक्ताओं को चाहिए कि वह जल्द से जल्द मार्च के महीने में अपना बकाया बिल जमा कर दे, अगर उपभोक्ताओं द्वारा सरकार द्वारा दी गई छूट के दौरान भी बिल जमा नहीं किया जाता है तो उसके बाद उपभोक्ताओं को नोटिस जारी कर उनके पानी के कनेक्शन काटे जाएंगे। साथ ही बिल वसूली के लिए आरसी जारी कर कानूनी कार्रवाई भी की जाएगी।

### सपा नेता ने बोला यूपी भाजपा के नेताओं पर हमला

# संवैधानिक पदों पर बैठे लोग कर रहे बांटने की राजनीति: समीर

**शाह टाइम्स संवाददाता**

**रुड़की।** समाजवादी पार्टी के नेता समीर आलम ने बोला योगी अदित्यनाथ और खुश्बों पांडे पर हमला उन्होंने कहा कि कुछ लोग भारत की गंगा जमुना तहजीब को खघ्त्म करना चाहते हैं ऐसे लोगो को हौसला उन लागों से मिलता है जो आज संवैधानिक पदों पर बैठे हैं जैसे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विधानसभा के अंदर मुसलमानों के लिए हाँ बेहद अफसोस जनक शब्दों का प्रयोग किया उन्होंने विधानसभा के अंदर मुसलमानों कठमुल्ला बोला आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि क्या तुम मदरसे खोलकर वहाँ से बच्चों को मौलवी बनाना चाहते हो मैं योगी को को कहना चाहता हूँ कि देश के अंदर बहुत से मंदिरों में संस्कृत पढ़ाई जाने के बाद मंदिरों से बहुत विद्वान पंडित निकलते हैं या बनते हैं । आगे चलकर लोगों को धर्म के बारे में



बताते हैं मानवता के बारे में बताते हैं और धर्म की अच्छाइयों के बारे मे में बताते हैं ऐसे ही मदरसों से भी मौलवी उर्दू सीखते हैं और अपने धर्म की सही जानकारी लेकर वो अपने धर्म को मानने वाले लोगों से अच्छाई और सच्चाई के रास्ते पर चलने के लिए बताते हैं और बताते हैं कि मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है और बुरे लोगों का इस्लाम से कोई ताल्लुक नहीं यही हिंदू धर्म के गुरु कहते हैं लोकतांत्रिक देश में सबको हकघ् है कि वे अपने धर्मों को अपने रीति रिवाज के हिसाब से मानें जो समाज में द्वेष फैलता है वो योगी हो ही नहीं सकता जो समाज में नफरत फैलाता है वो मोलवी हो ही नहीं सकता और न ही हमें ऐसे योगी और मौलवी की जरूरत है जो दो धर्मो के शांति

समाजवादी पार्टी इसकी निंदा कर ती है कि समाजवादी पार्टी धर्म जाति मजहब की राजनीति नहीं करती समाजवादी पार्टी शिक्षा की बात करती है समाजवादी पार्टी सरकार में बच्चों को लैपटॉप वितरण किया गया था और इतने एडवांस टेक्नोलॉजी के लैपटॉप उनको दिए गए थे जो आज भी चल रहे हैं योगी आदित्यनाथ के वार्ड में भी बोहोत बच्चे ऐसे होंगे जिनके हाथों में समाजवादी पार्टी के द्वारा दिए गए लैपटॉप होंगे समाजवादी पार्टी ये माँग करती है योगी सरकार को तत्काल प्रभाव से बर्खास्त करें ।

# छात्रों ने दर्शक दीर्घा में बैठकर देखी विस सत्र की कार्यवाही

### सूचना उपनिदेशक मनोज ने छात्रों को विस्तार से दी कार्यवाही की जानकारी

**शाह टाइम्स संवाददाता**

**कलियर/धनौरी।** कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने शुक्रवार को देहरादून में विधानसभा की कार्यवाही देखी। इस दौरान सूचना उपनिदेशक मनोज श्रीवास्तव ने कार्रवाई की बाबत छात्रों को विस्तार से जानकारी दी। छात्रों का पक्ष विपक्ष को वाद प्रतिवाद करते देखना अलग तरह का अनुभव रहा। उच्च शिक्षा मंत्री से मिलकर छात्र छात्राएं खुश दिखाई दिए।

धनौरी क्षेत्र के कॉलेज की ओर से शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया गया। महाविद्यालय प्रबंध समिति की अध्यक्ष व उप प्राचार्य ने हरी झंडी दिखाकर छात्र-छात्राओं को देहरादून के लिए रवाना किया। संयोजक डॉ. निशा रानी के नेतृत्व में छात्र-छात्राओं और प्राध्यापकों का 20 सदस्य दल विधानसभा की कार्यवाही देखने के लिए देहरादून पहुंचा। छात्र छात्राओं ने दर्शक दीर्घा में बैठकर विधानसभा सत्र की कार्यवाही देखी। सत्र की कार्यवाही देखने के बाद भोजनावकाश में छात्र-छात्राओं ने उच्च शिक्षा



मंत्री डॉ. धन सिंह रावत से मुलाकात की। छात्र-छात्राओं ने विभागीय मंत्री को महाविद्यालय आने के लिए आमंत्रित किया। छात्र-छात्राओं ने अपने जनपद सहित कई विधायकों के अलावा उच्च शिक्षा विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ एएस उनियाल से भी मुलाकात की। सूचना विभाग के उपनिदेशक मनोज श्रीवास्तव ने छात्र-छात्राओं को विधानसभा की कार्यवाही के बारे में अवगत कराया। इस अवसर पर डॉ. निशा रानी, डॉ अंजु शर्मा, डॉ भूपेंद्र सिंह, डॉ अंजलि राठौर आदि उपस्थित रहे।

# रुड़की ब्लॉक दिव्यांग शिविर में 17 को मिले प्रमाण पत्र

**शाह टाइम्स संवाददाता**

**रुड़की।** खंड विकास कार्यालय में समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित योजनाओं के प्रचार प्रसार और दिव्यांजनो के प्रमाण पत्र बनाने के लिए एक शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 53 दिव्यांजनो के पंजीकरण हुए जिसके चलते सरकारी अस्पताल से पहुंचे चिकित्सकों की टीम ने 17 दिव्यागों के प्रमाण पत्र शिविर में ही जारी कर दिए गए। शिविर में सहायक समाज कल्याण अधिकारी संध्या शर्मा द्वारा विभागीय योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी गई उन्होंने कहा कि समाज कल्याण विभाग लगातार विभागीय योजनाओं का लाभ गांव गांव और लाभार्थियों तक पहुंचा रहा है संध्या शर्मा ने कहा कि विधवा पेंशन, वृद्ध पेंशन,दिव्यांग पेंशन और किसान पेंशन जैसी महत्वपूर्ण योजनाओं का लाभ भी आम आदमी तक पहुंच रहा है वहीं अन्य योजनाओं की जानकारी भी उनके द्वारा दी गई।इस मौके पर सहायक खंड विकास अधिकारी के के कर्णपाल द्वारा ग्राम विकास



विभाग की भी जानकारी दी गई।शिविर में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की टीम भी पहुंची थी। इस मौके पर जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र की टीम और स्वास्थ्य विभाग से डॉक्टर्स की टीम भी इस कैंप में शामिल रही।इस मौके पर जिला दिव्यांग पुनर्वास केंद्र से प्रबंधक तनवीर आलम, अंजली सैनी,आसिफ,शकील और स्वास्थ्य विभाग से आर्थो डॉ सतीश,डॉ सुब्रत अरोड़ा,डॉ धीरेन्द्र नेगी,सुनील यादव,और विजय शर्मा आदि मुख्य रूप से शामिल रहे।

## लोजमो ने रुड़की को जिला बनाने को व्यापार मंडल व सर्राफा व्यापार से मांगा समर्थन

**शाह टाइम्स संवाददाता**

**रुड़की।** लोकतांत्रिक जनमोर्चा रुड़की के रुड़की जिला बनाने की मुहिम को लेकर 23 फरवरी को होने वाले विशाल धरना प्रदर्शन में महानगर व्यापार प्रतिनिधि मंडल एवं देवभूमि सर्राफा एसोसिएशन रुड़की ने भी लोजमो संयोजक सुभाष सैनी को अपना समर्थन देकर प्रदर्शन में बढ़ चढ़कर भाग लेने का भरोसा दिलाया है।

मोर्चा संयोजक सुभाष सैनी ने बताया कि रुड़की जिला बनाने की दो दशक से शुरू की गई मुहिम को सभी वर्गों के साथ विशेष रूप से व्यापारियों का समर्थन अनवरत मिलता आ रहा है । व्यापारियों ने लोजमो रुड़की के आह्वान पर इस मांग के समर्थन में कई बार ष्रुड़की बंदष् में भी अपनी दुकानें बंद समर्थन दिया है उन्होंने कहा कि रुड़की जिला बनाने की मांग को लेकर 23 फरवरी को शहीद चंद्रशेखर चौक पर किए जाने वाले विशाल धरना प्रदर्शन में विभिन्न संगठनों का समर्थन मिल चुका है। इसी कड़ी में आज प्रांतीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल रुड़की ने भी समर्थन पत्र सौंपा है इसके साथ ही साथ देवभूमि सर्राफा एसोसिएशन रुड़की के पदाधिकारीयों ने भी मोर्चा संयोजक को समर्थन पत्र सौंपकर धरना प्रदर्शन में हिस्सा लेने का विश्वास दिलाया है। इस मौके पर प्रांतीय उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के महानगर अध्यक्ष अरविंद कश्यप, महानगर महामंत्री कमल चावला, प्रांतीय संगठन मंत्री प्रवीण मेहंदीरता ,युवा व्यापारी नेता ओम वाधवा, युवा नेता हेमंत जुल्का, विमल कुमार व शशांक वर्मा शामिल रहे जबकि देवभूमि सर्राफा एसोसिएशन रुड़की के अध्यक्ष विनोद सोनी, महामंत्री अमित वर्मा, कोषाध्यक्ष अजय वर्मा, सचिव प्रमोद वर्मा, मोहित सोनी व अमित वर्मा शामिल रहे।

## एआरटीओ के चेकिंग अभियान से वाहन स्वामियों में मची खलबली

**शाह टाइम्स संवाददाता**

**लक्सर।** एआरटीओ के द्वारा लक्सर बालावली रायसी रोड पर चेकिंग अभियान चालाया है जिससे अवैध रूप से वाहन चलाने वालों में खलबली मच गई है ।

एआरटीओ के द्वारा बताया गया कि पैदल कावड़ यात्रा चल रही है उन्होंने कहा किसी तरह की शिव भक्तों को कोई परेशानी ना हो उसके लिए चेकिंग की जा रही है उन्होंने यह भी कहा कि छह वाहनों के चालान किए गए हैं जिनमें से एक वाहन लक्सर कोतवाली में भेज दिया गया है उन्होंने कहा सड़क सुरक्षा सप्ताह के तहत भी हमने कई स्कूलों में गांव में मीटिंग कर स्कूली बच्चे छात्र-छात्राओं एवं ग्रामीणों को बताया है कि आप सभी हेलमेट लेकर गाड़ी चलाएं और अपने आप को सुरक्षित रखें उन्होंने कहा सभी को चाहिए कि अपनी गाड़ी के कागज पूर्ण कर ले जिससे कोई किसी भी किस्म की परेशानी उनको ना हो उन्होंने कहा कि हमारा फोकस नोटिफाई साइलेंसर बगैर नंबर प्लेट की गाड़ियों पर ज्यादा रहता है उन्होंने कहा कोई भी अपने नाबालिक बच्चे पर गाड़ी ना चलवाए अन्यथा नाबालिक बच्चों के परिजनों पर भी नियम अनुसार कार्यवाही की जाती है।

### रुड़की विकासखंड के भारापुर में जनता दरबार लगाकर जिलाधिकारी ने सुनी जन समस्याएं

# जन समस्याओं का गंभीरता से निस्तारण करें अधिकारी: डीएम

**शाह टाइम्स संवाददाता**

**रुड़की/भारापुर।** मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की प्राथमिकताओं में शामिल सरकार जनता के द्वार कार्यक्रम के अंतर्गत जिलाधिकारी कर्मेंद्र सिंह ने राजकीय प्राथमिक विद्यालय भारापुर,विकास खंड रुड़की में जनता दरबार लगाकर क्षेत्र की समस्याएं सुनी।

जनता दरबार में जमीन कब्जा मुक्त कराने, राशन कार्ड बनवाये जाने, सड़क मरम्मत एवं पेंशन आदि से सम्बन्धित कुल 33 शिकायतें एवं मांग प्राप्त हुई, जिसमें से अधिकांश समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण किया गया। ग्राम प्रधान कविता रानी ने जिलाधिकारी को बुके देकर स्वागत किया। ग्रामवासियों ने समस्या बताई कि बरसात होने से रतमऊ नदी से बाढ़ आ जाती है, बाढ़ रोकने हेतु तटबन्ध बनाया जाये जिस पर जिलाधिकारी ने



सिंचाई विभाग को निरीक्षण कर तटबंध बनाने हेतु निर्देश दिये तथा सिंचाई विभाग द्वारा तटबंध के लिए शासन में प्रस्ताव भेजा जाने को बताया गया । सोनू पुत्र शहीद और रशीद पुत्र मुनसाब ने विगलांग पात्रता के द्वारा बैटरी रिक्शा की मांग की जिसपर जिलाधिकारी ने पात्र व्यक्तियों को रिक्शा दिलवाने के निर्देश जिला समाज कल्याण अधिकारी को दिये। अकबर पुत्र नजीर ने अपने खेत में बिजली की तार ओर रविदास मंदिर से कला के घर तक बिजली की तार बहुत नीचे होने की शिकायत की, जिस पर जिलाधिकारी ने जांच करने के निर्देश सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों को दिये। असलम ने भारापुर गांव के पानी की निकासी के लिए नाकार निर्माण की मांग की साथ ही हाइवे से बाईपास रोड की मांग जिसपर जिलाधिकारी ने पीडब्लूडी विभाग को निर्देशित किया। उप प्रधान मोहम्मद अली शेर ने रतमऊ नदी पर पुल बनवाने को लेकर जिलाधिकारी को ज्ञापन दिया।

महबूब ने नदी से किसानों के खेत की कटान होने की शिकायत की जिसपर जिलाधिकारी ने सिंचाई विभाग को जांच करने के निर्देश दिए। ग्रामवासियों ने गांव में वाल्मीकि समाज का मंदिर बनवाने को लेकर मांग की जिसपर जिलाधिकारी ने जमीन के लिए प्रस्ताव होने की बात कही। महिलाओ द्वारा गांव में नशे के खिलाफ कारवाई करवाने को लेकर शिकायत की जिसपर पुलिस विभाग को करवाई करने के निर्देश दिए साथ ही 15 दिन के अंदर करवाई करे और रिपोर्ट दे। जिलाधिकारी ने कुछ व्यक्तियों की मांग पर सीएमओ को गांव में चिकित्सा के लिए मोबाइल वैन उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए साथ ही कैंप भी लगवाने के निर्देश दिए। शाहनूर ने राशन कार्ड से नाम कटने की शिकायत की जिसपर जिलाधिकारी ने डीएसओ को जांच करने की निर्देश दिए। जमील निवासी भरपूर ने चक रोड को कब्जा मुक्त करवाने को लेकर शिकायत की जिसपर पटवारी को जांच करने के निर्देष दिए। जिलाधिकारी ने वीडीओ, वीपीडीओ तथा लेखपाल की क्षेत्र में उपस्थिति के बारे में भी जानकारी ली।बैठक में ज्वॉइंट मजिस्ट्रेट आशीष मिश्रा,परियोजना निदेशक केएन तिवारी, विकास अधिकारी वेद प्रकाश, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ.आरके सिंह, उप जिलाधिकारी प्रेमलाल, मुख्य वेयक्तिक अधिकारी सुदेश कुमार, जिला समाज कल्याण अधिकारी टीआर मलेठा, जिला क्रीडाधिकारी शबाली गुरूंग, डीएसओ तेजबल, ड़ीपीआरओ अतुल प्रताप सिंह आदि उपस्थित थे।

## लक्सर पालिका चेयरमैन ने मुख्य तिराहे शिव चौक का किया निरीक्षण

**शाह टाइम्स संवाददाता**

**लक्सर।** नगर पालिका परिषद अध्यक्ष संजीव कुमार ने अधिशासी अधिकारी मोहम्मद कामिल के साथ शिव चौक तिराहे का निरीक्षण किया है नगर पालिका परिषद लक्सर अध्यक्ष संजीव कुमार ने कहा कि शिव चौक पर स्थित शिव मूर्ति पर पानी के फुहार पानी के फव्वारा बंद पड़ा हुआ है जिसको तत्काल चालू करने तथा लाइट व्यवस्था सफाई व्यवस्था एवं सौंदर्य करण का कार्य कराया जाने के लिए अधिशासी अधिकारी मोहम्मद कामिल को आदेश दिए गए हैं उन्होंने यह भी कहा कि नगर पालिका परिषद लक्सर में जो भी जनहित विकास के मुद्दे होंगे उनको प्राथमिकता के आधार पर किया जाएगा किसी को भी विकास के बारे में निराश नहीं किया जाएगा वही अधिशासी अधिकारी मोहम्मद कामिल के द्वारा बताया गया कि नगर पालिका परिषद लक्सर अध्यक्ष द्वारा जो भी कार्य करने के आदेश दिए गए हैं उनको बहुत जल्द कर दिया जाएगा उन्होंने यह भी कहा कि जो विकास के मुद्दे अटके हुए हैं उनको भी अध्यक्ष की अनुमति से बहुत जल्द करने की कोशिश की जाएगी वहां पर जो मुख्य रूप से शामिल रहे उनमें नगर पालिका अध्यक्ष संजीव कुमार अधिशासी अधिकारी मोहम्मद कामिल मोहम्मद गुलशनव्वर आदेश पवार अश्वनी कुमार अजय नारायण खाती रविंद्र सफाई नायक लोकेश कुमार माजिद अली सुरेंद्र कुमार लक्ष्मण सिंह मोनू चौहान आदि मौजूद रहे।

# सम्पादकीय

शनिवार, 22 फरवरी 2025

## रेखा की लक्ष्मण रेखाएं

सियासी परम्परों पर चलते हुए दिल्ली में मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के एक दिन बाद सीएम रेखा गुप्ता ने पूर्व सीएम आतिशी और उनके मंत्रियों के पर्सनल स्टाफ को हटा दिया है। इतना ही नहीं आतिशी सरकार ने जिन अधिकारियों- कर्मचारियों को दूसरी जगह नियुक्त किया था, उन्हें फौरन अपने मूल विभाग में रिपोर्ट करने का आदेश दिया गया है। राजनीति में सब कुछ जायाज वाली कहावत पर गौर करते हुए इस पर ज्यादा टीकर-टिप्पणी ठीक नहीं, यह भी ठीक है कि दिल्ली को संपन्न, विकसित, आत्मनिर्भर बनाकर राज्य की जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने का संकल्प जताया। वे सुषमा स्वराज, शीला दीक्षित व आतिशी के बाद चौथी महिला मुख्यमंत्री बनी हैं। निस्संदेह, हाल के वर्षों में महिला वोटरों ने राजनीतिक परिदृश्य बदलने में निर्णायक भूमिका निभाई है। फलत: राजनीतिक दलों ने महिला मतदाताओं को लुभाने के लिये लुभावनी योजनाएं घोषित की हैं। ऐसी योजनाओं का असर मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र व झारखंड के हालिया चुनावों में देखने को भी मिला है। ऐसे में रेखा गुप्ता को मुख्यमंत्री बनाकर भाजपा ने महिला मतदाताओं को यह संदेश देने का प्रयास भी किया है कि महिलाएं उसकी राजनीतिक प्राथमिकताओं में शामिल हैं। विधानसभा चुनाव में भी भाजपा ने महिलाओं को हर माह पच्चीस सौ रुपये देने का वायदा इसी मकसद से किया था। वैसे ऐसी ही घोषणाएं कांग्रेस व आप ने भी की थी। उल्लेखनीय तथ्य है कि भाजपा शासित राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों में रेखा गुप्ता पहली महिला मुख्यमंत्री हैं। वहीं दूसरी ओर एक बार उनके चयन से भाजपा ने फिर साबित किया कि संघ व उसके आनुषंगिक संगठनों से आए नेताओं को ही शीर्ष पदों के चयन में वरीयता दी जाती है। वहीं रेखा गुप्ता इस मायने में भाग्यशाली हैं कि वे पहली बार विधायक बनने के बावजूद मुख्यमंत्री का ताज हासिल करने में सफल रही हैं। हालांकि, वह भाजपा के विभिन्न संगठनों में पिछले तीन दशकों से सक्रिय रही हैं और तीन बार दिल्ली नगर निगम पार्षद भी रही हैं। हालांकि, इससे पहले दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा के पुत्र प्रवेश वर्मा को मुख्यमंत्री बनाए जाने को लेकर खूब चर्चा रही। इसकी वजह उनकी राजनीतिक विरासत के अलावा, उनका आप सुप्रीमो अरविंद केजरीवाल को हराना भी था। जनता ने भी उन्हें पूर्व मुख्यमंत्री की टक्कर का मानकर जिताया। कयास लगाये जा रहे थे कि कई कारणों से नाराज जाट समुदाय को मनाने की कोशिश में उन्हें यह पद मिल सकता है। लेकिन जैसा कि भाजपा की रणनीति रही है, वह राजनीति में परिवारवाद के तमगे से बचने का प्रयास करती रही है। राष्ट्रीय स्तर पर परिवारवाद का विरोध भाजपा का मुख्य एजेंडा भी रहा है। कुछ विवाद भी प्रवेश वर्मा की बयानबाजी को लेकर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर राजनीतिक मर्यादा को लांघने वाले रेखा गुप्ता के पुराने ट्वीट भी सोशल मीडिया पर खासे वायरल हो रहे हैं। वैसे तो भाजपा कह सकती है कि डबल इंजन की सरकार दिल्ली के विकास को नई दिशा देगी, लेकिन नई मुख्यमंत्री को आप सरकार के शैक्षिक सुधारों, मुफ्त बिजली-पानी, मोहल्ला क्लीनिक व अन्य लोककल्याण के कार्यक्रमों के बड़े विकल्प देने होंगे। दिल्ली की जनता लगातार प्रदूषण, जल भराव, विकास, कूड़े के ढेरों तथा ट्रैफिक जाम की समस्या से जूझ रही है। पूर्व मुख्य मंत्रियों व एलजी से टकराव के चलते दिल्ली के विकास की गति थम सी गई थी। एक महिला मुख्यमंत्री होने के नाते उन्हें बेटियों की सुरक्षा की अतिरिक्त जिम्मेदारी निभानी होगी, ताकि फिर दिल्ली में निर्भया कांड जैसे हादसे न हों। वहीं चुनाव के दौरान भाजपा के प्रमुख एजेंडे में शामिल रही यमुना की सफाई को भी उन्हें अपनी प्राथमिकता बनानी होगी। वहीं उन्हें ध्यान रखना होगा कि भले की आम आदमी पार्टी सत्ता से बाहर हुई हो,लेकिन अच्छे-खासे विधायकों के साथ वह एक मजबूत प्रतिरोधी विपक्ष के रूप में विधानसभा में मौजूद है। दिल्ली के सियासी तापमान के दृष्टिगत सीएम रेखा गुप्ता को भी अपनी सीमाएं/लक्ष्मण रेखाएं तय करनी होंगी। विपक्ष उनके अनुभव हीन होने का फायदा उठाने की फिराक में लगा रहेगा।

## कांग्रेस की बदौलत दिल्ली में भाजपा सत्ता में आई

कांग्रेस के वरिष्ठ सांसद और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गाधी को बसपा पर उंगुली उठाने से पहले अपने गिरेबान में झांक कर देख लेना चाहिए था, दिल्ली विधानसभा चुनाव में कांग्रेस भाजपा की बी टीम बन कर चुनाव मैदान पर उतरी, जिसके कारण भाजपा को दिल्ली की सत्ता में आने का मौका मिला, यह आम चर्चा है, जिसके कारण यहां बीजेपी सत्ता में आ गई है, वरना इस चुनाव में कांग्रेस का इतना बुरा हाल नहीं होता, यह पार्टी अपने ज्यादातर उम्मीदवारों की जमानत भी न बचा पाए, राहुल गांधी को किसी भी मामले में दूसरों पर व खासकर बीएसपी की प्रमुख पर उंगली उठाने से पहले अपने गिरेबान में भी जरूर झांक कर देखना चाहिए, यह बेहतर होगा।

**मायावती**
**अध्यक्ष, बसपा**

# सर्वसमावेशी संस्कृति का प्रतीक महाकुंभ

यदि आप भारत के गांव-कस्बों से गुजरें तो ऐसे असंख्य लोग मिल जाएंगे, जो प्रात: स्नान करते समय 'गंगे च यमुने चौव गोदावरी सरस्वती। नर्मदे सिंधु कावेरी जले स्मिन संनिधि कुरु।। का मंत्रोच्चार कर रहे होंगे। इस मंत्र का अर्थ है-हे यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु, और कावेरी हमारे जल में उपस्थित होकर इसे पवित्र करो। स्नान के नित्यकर्म में राष्ट्र की सभी पवित्र नदियों का आह्वान यह बताता है कि भारतभूमि के लोगों की नदियों के प्रति कितनी गहरी श्रद्धा है।

विश्व की लगभग सभी सभ्यताओं का जन्म नदी तटों पर हुआ है, लेकिन भारत तो नदी संस्कृति का ही देश है। उत्तर में सिंधु से लेकर दक्षिण में कृष्णा-कावेरी तक और पूर्व में ब्रहमपुत्र से लेकर पश्चिम में नर्मदा तक भारत की ये पुण्य सलिलाएं अनंतकाल से कोटि-कोटि भारतवासियों के जीवन का उद्धार करती रही हैं। ये नदियां मां की तरह ही हमारा भरण-पोषण करती हैं। हम जब भी समस्याओं में उलझे होते हैं तो इन नदी रूपी माताओं के निकट आकर शांति की तलाश करते हैं और अपनी इहलौकिक यात्रा को समाप्त कर पारलौकिक यात्रा के लिए भी इन्हीं नदियों की गोद में पहुंचते हैं। इन नदियों का न केवल हमारे धार्मिक-आध्यात्मिक जीवन में विलक्षण महत्व है, अपितु ये सामाजिक, आर्थिक, वैज्ञानिक तथा अन्य कई रूप से भी सहायक मानी जाती हैं।

यही कारण है कि हमारे धार्मिक ग्रंथों में नदियों को माता का दर्जा दिया गया है। ऋग्वेद के नदी सूक्त से लेकर आधुनिक साहित्य तक, नदियों की महिमा को व्यापक रूप से दर्शाया गया है। महाभारत, मत्स्य पुराण, ब्रह्म पुराण और कालिदास के ग्रंथों में भी नदियों की पवित्रता को रेखांकित किया गया है। कुंभ महापर्व, नदियों के महात्म्य का ही महापर्व है, जो विविधतता में एकता प्रदर्शित करने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। कुंभ मेला भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक परंपराओं का सबसे बड़ा पर्व है। यह महापर्व खगोल विज्ञान, आध्यात्मिकता, कर्मकांड की परंपराओं और सामाजिक तथा सांस्कृतिक ज्ञान-विज्ञान की बहुवर्णीयता से सभी को आकर्षित करता है।

अथर्ववेद में उल्लेख मिलता है कि भगवान ब्रह्मा ने हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक चार कुंभ स्थापित किए, जिससे यह आयोजन पवित्र माना जाता है। स्कंद पुराण में कुंभ योग बताते हुए कहा गया है 'मेषराशिगंते जीवे मकरे चन्द्र भास्करी। अमावास्या तदा योग: कुम्भाख्यस्तीर्थनायके।। 'अर्थात' जिस समय बृहस्पति मेष राशि पर स्थित हो तथा चंद्रमा और सूर्य मकर राशि पर हों तो उस समय तीर्थराज प्रयाग में कुंभ-योग होता है।

**विश्व की लगभग सभी सभ्यताओं का जन्म नदी तटों पर हुआ है, लेकिन भारत तो नदी संस्कृति का ही देश है, उत्तर में सिंधु से लेकर दक्षिण में कृष्णा-कावेरी तक और पूर्व में ब्रहमपुत्र से लेकर पश्चिम में नर्मदा तक भारत की ये पुण्य सलिलाएं अनंतकाल से कोटि-कोटि भारतवासियों के जीवन का उद्धार करती रही हैं ये नदियां मां की तरह ही हमारा भरण-पोषण करती हैं**

कुंभ का आयोजन समाज, धर्म और संस्कृति के समन्वय का प्रतीक है। इसमें प्रमुख अखाड़ों के संत, महात्मा और नागा संन्यासी संसार के संपूर्ण कष्टों के निवारण हेतु तथा समाज, राष्ट्र, और धर्म आदि के कल्याण के लिए अमूल्य दिव्य उपदेश प्रदान करते हैं। प्रयाग में कुंभ के तीन प्रमुख स्नान होते हैं। मकर संक्रांति, मौनी अमावस्या और वसंत पंचमी पर। इन तीनों स्नानों में सर्वप्रथम स्नान निर्वाणी अखाड़े का, द्वितीय स्नान निरंजनी अखाडे का और तृतीय स्नान जूना अखाड़े का होता है। इसके पश्चात् समस्त संप्रदाय के लोगों का होता है। कुंभ-पर्व की प्राचीनता के संबंध में तो किसी संदेह कीआवश्यकता ही नहीं, किंतु यह बात अवश्य महत्त्वपूर्ण है कि कुंभ मेले का धार्मिक रूप में श्रीगणेश किसने किया ? विद्वानों ने यह सिद्ध किया है कि कुंभ मेले के प्रवर्तक आदि शंकराचार्य हैं। उन्होंने कुंभ-पर्व के प्रचार की व्यवस्था धार्मिक संस्कृति को सुदृढ़ रखने के लिए तथा जगत कल्याण की दृष्टि से की थी। उन्हीं के आदर्शानुसार आज भी कुंभपर्व के

गजेंद्र सिंह शेखावत

चारों सुप्रसिद्ध तीर्थों में सभी संप्रदाय के साधु-महात्मागण देश-काल-परिस्थिति अनुरूप लोककल्याण की दृष्टि से धर्म-रक्षार्थ धर्म का प्रचार करते हैं, जिससे सर्वजन कल्याण होता है।

कुंभ का इतिहास कान्यकुब्ज के शासक सम्राट हर्षवर्धन के साथ भी जुड़ा है। हर्षवर्धन कुंभ के अवसर पर प्रयाग में ही रहकर सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन करते और सभी मतावलंबियों के विचार सुनते थे। धार्मिक सहिष्णुता के साथ-साथ महाराज हर्षवर्धन इस अवसर पर अपनी दानशीलता का भी परिचय देते थे। चीनी यात्री वेनसांग के यात्रा विवरण के अनुसार कुंभ में वह अपना सर्वस्व मुक्तहस्त से दान कर देते थे। सम्राट हर्षवर्धन ने अपना समूचा कोष प्रयाग कुंभ के अवसर पर दान कर दिया। जब दान के लिए कुछ और शेष नहीं रहा, तब उन्होंने अपने वस्त्राभूषण तथा मुकुट तक उतार कर दे दिए। जब शरीर पर वस्त्र भी नहीं बचे तो उनकी बहन राज्यश्री ने उन्हें पहनने के लिए वस्त्र दिए। महाराज हर्षवर्धन के त्याग और दान की यह प्रेरक परंपरा कुंभ में अब तक अक्षुण्ण चली आ रही है।

कुंभ केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि इसका वैज्ञानिक और ज्योतिषीय पक्ष भी महत्त्वपूर्ण है। जब सूर्य मकर राशि में और गुरु कुंभ राशि में होते हैं, तब स्नान करने से व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। संगम के जल में प्राकृतिक खनिज और औषधीय गुण होते हैं, जिससे यह स्नान शरीर की शुद्धि का माध्यम बनता है।

करोड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं के आने के बावजूद यहां आधुनिक तकनीक के प्रयोग और कुशल प्रबंधन ने कुंभ मेले को विश्व का सबसे बड़ा और व्यवस्थित आयोजन बना दिया है। स्वच्छता, सुरक्षा और सुविधा का ऐसा संगम शायद ही कहीं और देखने को मिले। सरकार और प्रशासन ने इसे पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए विशेष प्रयास किए हैं, जिससे यह आयोजन न केवल धार्मिक, बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय संदेश भी देता है।

# हाई बीपी की समस्या को कंट्रोल करने के लिए करें ये वर्कआउट

आज के समय में ज्यादातर लोगों को हाई बीपी की समस्या रहती है। इसलिए ऐसे लोगों को अपनी दवा के साथ खानपान और फिजिकल फिटनेस पर भी उतना ही ध्यान देते हैं। ऐसे में आप बीपी को कंट्रोल करने के लिए डेली रूटीन में कुछ छोटे-छोटे बदलाव करते हैं। साथ ही एक्सरसाइज को रूटीन का हिस्सा बनाने से आपको बीपी कंट्रोल करने में काफी फायदा मिलता है। एक्सरसाइज से आपका दिल मजबूत होता है और ब्लड सर्कुलेशन भी इंप्रूव होता है। साथ ही एक्सरसाइज करने से तनाव कम करने में सहायता मिलती है। आप डेली रूटीन में सिंपल वॉक से लेकर लाइट स्ट्रेच तक कुछ भी कर सकते हैं।

हालांकि इस बात में कोई दोराय नहीं है कि हाई बीपी की समस्या से जूझ रहे लोगों के लिए वर्कआउट बेहद फायदेमंद है। इसलिए आपको कुछ बातों का खास ख्याल रखना चाहिए। हाई बीपी के मरीजों को वर्कआउट रूटीन में कुछ बदलाव करने की जरूरत हो सकती है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों को वर्कआउट करते समय किन बातों का खास ख्याल रखना चाहिए।

### कोर्डियो वर्कआउट...

अगर किसी व्यक्ति को हाई बीपी की समस्या है, तो आपको कार्डियो वर्कआउट करना चाहिए। इस दौरान इंटेसिटी को मॉडरेट ही रखें। आप स्विमिंग से लेकर ब्रिक्स वॉकिंग और साइकिलिंग आदि कर सकते हैं। वहीं अगर आप कार्डियो एक्सरसाइज करते हैं, तो इससे आपका ब्लड सर्कुलेशन इंप्रूव होता है और एक्स्ट्रा कैलोरी बर्न होती है। इससे आपको हेल्दी वजन बनाए रखने में सहायता मिलती है। इससे आपका ब्लड प्रेशर भी कंट्रोल में रहता है।

### लाइटवेट करें स्ट्रेंथ ट्रेनिंग

बता दें कि हाई ब्लड प्रेशर के मरीजों को स्ट्रेंथ ट्रेनिंग कभी मिस नहीं करना चाहिए। इसलिए सप्ताह में 2-3 बार आप लाइटवेट के साथ स्ट्रेंथ ट्रेनिंग करनी चाहिए। आप चाहें तो इसके लिए रेसिस्टेंस बैंड का इस्तेमाल कर सकते हैं। क्योंकि जब आप स्ट्रेंथ ट्रेनिंग करते हैं, तो इससे मसल्स बिल्डअप में सहायता मिलती है। साथ ही इससे मेटाबॉलिज्म बूस्ट होता है और ब्लड सर्कुलेशन में सुधार होता है। वहीं ब्लड प्रेशर को भी कंट्रोल करना आसान हो जाता है।

### हाइड्रेशन का रखें ख्याल

वैसे तो हर किसी को वर्कआउट करते हुए अपने शरीर के हाइड्रेशन लेवल का ख्याल रखना चाहिए। लेकिन अगर आपको हाई बीपी की समस्या है, तो यह अधिक जरूरी हो जाता है। दरअसल, डिहाइड्रेशन से आपके दिल पर एक्स्ट्रा दबाव पड़ता है। इससे ब्लड प्रेशर बढ़ सकता है।

# खरपतवारनाशी ग्लायफोसेट से शिशुओं के स्वास्थ्य को खतरा

स्रोत फीचर्स

हार्ट हेल्थ

एक हालिया अध्ययन में खरपतवारनाशी ग्लायफोसेट के बढ़ते उपयोग का सम्बंध नवजात शिशुओं के जन्म के समय कम वजन और गर्भावस्था के छोटा होने से देखा गया है। इस रसायन का खेती में खूब उपयोग होता है, खासकर अमेरिका में। यह अध्ययन ओरेगन विश्वविद्यालय के एडवर्ड रुबिन और एमेट रेनियर द्वारा प्रोसीडिंग्स ऑफ दी नेशनल एकेडमी ऑफ साइन्सेज में प्रकाशित किया गया है।

शोधकर्ताओं ने 1990 से 2013 के बीच जन्मे एक करोड़ से अधिक नवजात शिशुओं के डैटा का विश्लेषण किया और अलग-अलग जिलों में ग्लायफोसेट के इस्तेमाल की मात्रा का सम्बंध गर्भावस्था अवधि और जन्म के समय वजन से किया। पाया गया कि जिन जिलों में सोयाबीन, मक्का और कपास की जेनेटिकली मॉडिफाइड (जीएम) फसलें उगाई जाती हैं और भारी मात्रा में ग्लायफोसेट छिड़का जाता है, वहां 2005 तक नवजात शिशुओं का औसत वजन 30 ग्राम कम और गर्भावस्था की अवधि 1.5 दिन कम हो गई थी। ये प्रभाव 1996 से पहले नहीं दिखाई दिए थे क्योंकि तब जीएम फसलों का खूब उपयोग शुरू नहीं हुआ था। ग्लायफोसेट-सह फसलें आने के बाद ग्लायफोसेट का अत्यधिक उपयोग शुरू हुआ था। महज अमेरिका में हर साल यह 127000 टन से अधिक छिड़का जाता है। अमेरिकी पर्यावरण सुरक्षा एजेंसी के अनुसार ग्लायफोसेट का सावधानियों के साथ उपयोग सुरक्षित है, लेकिन कुछ शोध में इसका सम्बंध प्रजनन हार्मोन असंतुलन और अल्प गर्भावधि से देखा गया है।

शोधकर्ताओं के मुताबिक इसके आर्थिक प्रभाव भी गंभीर हैं। जन्म के समय कम वजन और छोटी गर्भावधि का सम्बंध दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याओं से है, जैसे संज्ञानात्मक विकास में देरी, कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली, मधुमेह व हृदय रोग। और शोधकर्ताओं का अनुमान है गर्भावधि में मामूली कमी से नवजात की देखभाल, विशेष शिक्षा, कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण बीमारी पर खर्च, और प्रभावित व्यक्तियों की कमाई में कमी जैसी समस्याओं से हर साल 1.1 अरब डॉलर से अधिक की हानि होती है।

# साहित्यकार जब चाहता है तो सत्ताएं बदल जाती हैं

पवन सिंह

ये हेडलाइन भी लिफाफा पकड़ कवियों की जो भरी कविता जैसे लगी... चीन की चड्डी खैंच देंगे पाकिस्तान की पों निकाल देंगे। अमे. रिका भरेगा पानी अगर हम नदी नहा लेंगे। हमारे देश में कभी एक मौसम हुआ करता था जब साहित्यकार और कवि सत्ताओं के सामने अडिग और निडर होकर कलम के जरिए बात किया करते थे। अब कलम में 'राग तेलाही' की स्याही भरते हैं और सत्ता के कपाल पर कंपकंपी करते हैं। आज के साहित्यकारों और कवियों ने कलम, शब्द और आवाजों को बत्ती बनाकर उसके तैलीयपन से अपने तथाकथित ओज को जलाए रखने में महारथ हासिल कर रखी है। रही बात हेडिंग चेपने की तो इसमें कौन सी जीएसटी लगती है। दरअसल हकीकत तो ये है कि जब सत्ता चाहती है तो साहित्यकार की कलम बदल जाती है। शब्द बदल जाते हैं। शब्दावली बदल जाती है। शब्दार्थ बदल जाते हैं। भाव और अलंकार बदल जाते हैं। कलम रिरियाने लगती है। वह राग दरबारी गाने और लिखने लगती है। इसलिए सत्ताएं जब चाहती हैं तो सुर-ताल-तबला-सरंगी। सब कुछ उसके मुता. बिक ही बदल जाता है।

कौन साहित्यकार है और कौन नहीं पहले समाज तय करता था। अब साहित्यिक ठेकेदार तय करते हैं। नोएडा मीडिया के तथाकथित साहित्यिक सम्मेलन तय करते हैं। सत्ता के साथ गलबहियों का स्तर और सत्ता के साथ गांठ कितनी सालिड जुड़ी है। यह तय करता है। इसलिए मैं अपने विश्वविद्यालय के पुराने दोस्त और मौजूदा उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक के उक्त कथन से कदापि सहमति व्यक्त नहीं कर सकता कि साहित्यकार जब चाहता है तो सत्ताएं बदल जाया करती हैं। वर्तमान संदर्भ में यह कथन पूर्णतया अतिशयोक्ति अलंकार से भरा हुआ है। क्योंकि अब साहित्यकार और उसकी कलम मलाई की चाल चलती है। वह मलाई निकालने के खांचे खोदती है और फिर पद, पैसा, प्रतिष्ठान और मंचीय सम्मान से सुशोभित होती है। दरअसल यही आज का सच है। इसे स्वीकार करें न करें। कहते हैं साहित्य समाज का दर्पण होता है लेकिन यह दर्पण कभी हुआ करता था अब तो सब कुछ अर्पण करके साहित्यकार भजन गा रहा है। सब कुछ तुझको अर्पण बस इसी अर्पण और 'कलमीय समर्पण' के भव सागर के संगम में गोता लगा रहा है साहित्यकार! कितने स्वनामधन्य साहित्यकार हैं जो मौजूदा सामा. जिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामरिक विषयों पर कलम को बंदूक बनायें हुए हैं। किसी की हिम्मत नहीं है जो आज के परिवेश का दर्पण बन सके। अब तो दर्पण बने साहित्यकारों को कहीं भी किसी पन्ने पर न तो जगह मिलती है और न ही तथाकथित साहित्यिक सम्मेलनों में मंच क्योंकि आइना दिखाने वाले साहित्यकारों की श्रेणी में नहीं आते। अब साहित्यकार और साहित्यिक मंच सम्मान और पुरस्कार आदान-प्रदान का शानदार गिव एंड टेक का माधयम हैं। इस बार तू मुझको दे अगली बार मैं तुझको दूंगा। वैसे अब तो सम्मानोध पुरस्कारों का बाकायदा एक शानदार बिजनेस है। पैसा दे पुरस्कृत हो ले। दुबई से अमेरिका तक पुरस्कार ले। सब कुछ झोलझाल चल रहा है। जब चहुंओर पतन सम्मानित हो रही हो रहा हो तो आवाजों को कौन सुने। आवाजें अब नक्कार खाने की तूतियां हैं और ये तूतियां एक ही गीत गा रही है। तू तक तू तक तूतियां हई जमालो फिलहाल तूतियां शहतूत के फल का पंजाबी नाम है, जो मोरस के पेड़ पर उगता है।

# शिक्षा में स्मार्टफोन के प्रचलन से एकाग्रता व हेल्थ खतरे में

शिक्षा में तेजी से बढ़ते स्मार्टफोन के उपयोग और उसके घातक प्रभावों को लेकर दुनियाभर में हलचल है, बड़े शोध एवं अनुसंधान हो रहे हैं, जिनके निष्कर्षों एवं परिणाम को देखते हुए कड़े कदम भी उठाए जा रहे हैं। शोध एवं अध्ययनों के तथ्यों ने चौंकाया भी है एवं चिन्ता में भी डाला हैं। पाया गया कि जो छात्र अपने फोन के करीब रहकर पढ़ाई करते हैं, उन्हें ध्यान केंद्रित करने में बहुत मुश्किल होती है, भले ही वे इसका उपयोग न कर रहे हों। स्मार्टफोन के उपयोग से नींद की गुणवत्ता कम होने, तनाव बढ़ने, एकाग्रता बाधित होने, स्मृति लोप होने, अवांछित सामग्री का अधिक उपयोग करने, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ने जैसे खतरे उभरें हैं।

इन बढ़ते खतरों को देखते हुए दुनियाभर में कम से कम 79 शिक्षा प्रणालियों ने स्कूलों में स्मार्टफोन पर प्रतिबंध लगा दिया है। जिसे लेकर, कई देशों में बच्चों की शिक्षा और निजता पर इसके प्रभाव को लेकर बहस जारी है।'संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन' (यूनेस्को) की वैश्विक शिक्षा निगरानी (जीईएम) टीम के अनुसार, 60 शिक्षा प्रणालियां या वैश्विक स्तर पर पंजीकृत कुल शिक्षा प्रणालियों का 30 प्रतिशत ने विशेष कानूनों या नीतियों के माधयम से 2023 के अंत तक स्कूलों में स्मार्टफोन पर प्रतिबंध लगा दिया है। भारत में अभी इस ओर कोई कदम नहीं उठाया गया है। सर्वेक्षण के आंकड़े यह संकेत देते हैं कि डिजिटल शिक्षा और स्मार्टफोन के इस्तेमाल में बच्चों की भागीदारी तेजी से बढ़ रही है। यह बदलाव शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर पैदा कर रहा है, लेकिन साथ ही इसके साथ कई चुनौतियां भी हैं, डिजिटल शिक्षा को संतुलित और सुरक्षित बनाना आने वाले समय में एक प्रमुख चुनौती है। डिजिटल शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के साथ, यह आवश्यक हो गया है कि स्मार्टफोन और इंटरनेट का सही, संयमपूर्ण और सुरक्षित उपयोग सुनिश्चित किया जाए ताकि बच्चों का विकास सही दिशा में एवं समग्रता से हो। निस्संदेह, शिक्षा के बाजारीकरण और नए शैक्षिक प्रयोगों में मोबाइल की अपेक्षाओं को महंगे स्कूलों ने स्टेटस सिंबल बना दिया है। लेकिन हालिया वैश्विक सर्वेक्षण बता रहे हैं कि पढ़ाई में अत्यधिक मोबाइल का प्रयोग विद्यार्थियों के लिये मान. सिक व शारीरिक समस्याएं पैदा कर रहा है। सर्वविदित है कि विभिन्न ऑनलाइन शैक्षिक कार्यक्रमों के चलते छात्र-छात्राओं में मोबाइल फोन का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है।

# एक बयान और हड़कंप

## USAID कैसे काम करता है

यह संस्था देशों की सरकारों, एनजीओ, प्राइवेट सेक्टर और लोकल समुदायों के साथ काम करती है

इसे अमेरिकी संसद से पैसा मिलता है, जिसे यह अलग प्रोग्राम के लिए इस्तेमाल करती है।

यह हेल्थ, एजुकेशन, आर्थिक विकास, लोकतंत्र और गवर्नेंस और डिजास्टर मैनेजमेंट में मदद करती है।

**100** देशों में लगभग यह संस्था काम करती है, जिनमें अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका और मिडिल ईस्ट प्रमुख हैं।

इसका मकसद अमेरिकी विदेश नीति को आगे बढ़ाना और दुनियाभर के अलग-अलग संकट से जूझना है।

# बाइडेन बदलना चाहते थे मोदी की सरकार!

**नई दिल्ली।** गुरुवार को अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से एक बयान दिया गया। इस बयान के मायने साफ हैं कि कहीं ना कहीं अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन भारत की मोदी सरकार को गिराना चाहते थे। इस बयान से अमेरिका तो अमेरिका यहां भारत के राजनीतिक गलियारों में हलचल बढ़ गई है। ऐसे में अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर JIO POLITICS में बाइडन भारत को किस रूप में देखते थे क्योंकि अक्सर मीडिया में इस तरह की बातें सामने आती रही हैं कि बाइडन कहीं ना कहीं अंदरखाने पाकिस्तान का समर्थन करते थे।

### 21 मिलियन डॉलर का है मामला

भारत में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए US एड की तरफ से 21 मिलियन डॉलर लगभग 182 करोड़ रुपये खर्च होने थे। इस मामले पर ट्रम्प ने एक बार फिर से सवाल उठाया है और भारतीय चुनावों में संभावित हस्तक्षेप का संकेत दिया है। ट्रम्प ने बुधवार को बड़ा दावा करते हुए सवाल उठाया कि भारत में मतदान बढ़ाने के लिए अमेरिका को 21 मिलियन डॉलर खर्च करने की क्या जरूरत है। उन्होंने अनुमान लगाया कि पिछली बाइडन सरकार की ओर से किसी और को जिताने की कोशिश की जा रही थी। ट्रम्प ने कहा कि अमेरिकी सरकार इस मुद्दे पर मोदी सरकार से बातचीत करेगी।

### मोदी के दौर से पहले आया बयान

यह बयान तब आया हैजब एलन मस्क के नेतृत्व वाले सरकारी दक्षता विभाग DOGE ने 16 फरवरी को खुलासा किया कि USAID के तहत भारत में मतदाता टर्नआउट के नाम पर 21 मिलियन डॉलर आवंटित किए थे। साल 2024 के आम चुनावों में, मोदी सरकार पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में नहीं आ सकी। उसे सरकार बनाने के लिए अपने एनडीए सहयोगियों का सहारा लेना पड़ा। ज्यादातर एग्जिट पोल बीजेपी को लोकसभा चुनाव में जीतता हुआ दिखा रहे थे। लेकिन 4 जून को आए परिणाम में एक अलग तस्वीर देखने को मिली।

### कोई बाहरी खर्च किसलिए करता है

ट्रम्प ने FII प्रायोरिटी समिट में कहा, हमें भारत में मतदाता टर्नआउट पर +21 मिलियन खर्च करने की आवश्यकता क्यों है? मुझे लगता है कि वे किसी और को जिताने की कोशिश कर रहे थे। हमें भारतीय सरकार को बताना होगा। यह एक पूरी तरह से नया खुलासा है। हमें भारत सरकार को बताना होगा। क्योंकि जब हम सुनते हैं कि रूस ने हमारे देश में दो हजार डॉलर खर्च किया है तो यह हमारे लिए बड़ा मुद्दा बन जाता है।

### पहले भी उठ चुके हैं सवाल

डोनाल्ड ट्रंप ने इससे पहले भी 21 मिलियन डॉलर खर्च करने पर सवाल उठाया था। उन्होंने इस मुद्दे के जरिए भारत के टैरिफ पर निशाना भी साधा था।

मंगलवार को ट्रंप ने कहा, 'हम भारत को 21 मिलियन डॉलर क्यों दे रहे हैं? उनके पास बहुत ज्यादा पैसा है। वे दुनिया के सबसे ज्यादा टैरिफ लगाने वाले देशों में से एक हैं। हम वहां मुश्किल से ही घुस पाते हैं, क्योंकि उनके टैरिफ बहुत ज्यादा है।

## भारत में बयानबाजियों का दौर शुरू

भारत में इस खुलासे के बाद राजनीतिक दलों में बयानबाजी शुरू हो गई है। भाजपा ने इसे भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था में बाहरी हस्तक्षेप करार दिया और कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा कि यह विदेशी ताकतों द्वारा भारत की चुनावी प्रक्रिया को प्रभावित करने की कोशिश थी। भाजपा नेता अमित मालवीय ने कहा कि विदेशी संस्थाओं द्वारा भारतीय संस्थानों में व्यवस्थित घुसपैठ की जा रही है।

**राहुल पर क्या बोली कांग्रेस?**

इसके अलावा, कांग्रेस के नेताओं ने भाजपा पर यह आरोप लगाया कि वह इस मुद्दे को राजनीतिक हथियार बना रही है। कांग्रेस का कहना है कि अगर विदेशों से कोई मदद दी भी गई है, तो इसकी जांच होनी चाहिए, लेकिन भाजपा इसे राहुल गांधी पर निशाना साधने के लिए इस्तेमाल कर रही है। गौरतलब है कि राहुल गांधी पहले भी कई बार विदेशों में जाकर भारत के लोकतंत्र को मजबूत करने की अपील कर चुके हैं, जिस पर भाजपा ने उन्हें घेरने की कोशिश की थी।

## चुनावी प्रक्रिया में हस्तक्षेप का आरोप

इस मामले में भारत सरकार की प्रतिक्रिया आनी बाकी है। हालांकि, भाजपा इस मुद्दे को बड़े पैमाने पर उठा रही है और इसे राष्ट्रीय सुरक्षा और संप्रभुता से जोड़ रही है। अब देखना होगा कि मोदी सरकार इस मामले को लेकर अमेरिका से क्या जवाब मांगती है और क्या इसे लेकर कोई औपचारिक कार्रवाई होती है।

**यह हैं कुछ बड़े आंकड़े**

मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए भारत को 2.1 करोड़ डॉलर प्रदान करने के उद्देश्य पर सवाल उठाया था। ट्रम्प ने दर्शकों को कुछ उदाहरण दिए कि राष्ट्रपति बनने से पहले उनका पैसा कहां जा रहा था। सूची में भारत में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए 2.1 करोड़ डॉलर शामिल थे। यूएसएड ने भारत में मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए निर्वाचन आयोग को दी थी यह राशि 16 फरवरी को ट्रंप ने जारी किया था डोजियर। भारत में चुनावी हस्तक्षेप का आरोप भी लगाया।

## अमेरिकी सरकारी दक्षता विभाग ने दी थी जानकारी

मुझे भारत और उसके पीएम का बहुत सम्मान है। DOGE, जो बाइडेन प्रशासन के दौरान अमेरिकी मानवीय फंडिंग में अनियमितताओं की जांच के लिए जिम्मेदार है। उनसे घोषणा की कि उसने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं के लिए आवंटित फंड को रद्द कर दिया है। पीएम नरेंद्र मोदी के सलाहकार संजीव सान्याल ने पहले USAID के खुलासे पर प्रतिक्रिया दी थी और इसे मानव इतिहास का सबसे बड़ा घोटाला बताया था।

**बीजेपी ने उठाए थे सवाल**

बीजेपी आईटी सेलप्रमुख अमित मालवीय ने इस मामले में सोशल मीडिया पर लिखा था, यह तेजी से साफ होता जा रहा है कि कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए ने देश के हितों के विरोधी ताकतों को भारत के संस्थानों में घुसपैठ करने में व्यवस्थित रूप से सक्षम बनाया है, जो हर मौके पर भारत को कमजोर करने की कोशिश करते हैं।

**इस विभाग ने किया खुलासा**

दरअसल, ट्रंप की यह टिप्पणी उस समय आई जब अमेरिकी सरकारी दक्षता विभागने हाल ही में खुलासा किया कि यूनाइटेड स्टेट्स एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट ने भारत में वोटिंग टर्नआउट बढ़ाने के लिए 21 मिलियन डॉलर का अनुदान दिया था।

**बांग्लादेश को भी जारी की थी ऐड**

इसी रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि बांग्लादेश में राजनीतिक हालात मजबूत करने के लिए 29 मिलियन डॉलर खर्च किए गए। बांग्लादेश में हाल ही में पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना को सत्ता से हटाने की साजिश के आरोप लग चुके हैं, जिससे इस रिपोर्ट की गंभीरता और बढ़ जाती है।

## यूक्रेन को भी जारी की गई थी भारी-भरकम राशि

बुधवार को यूक्रेन में चल रहे युद्ध की ओर मुड़ते हुए, ट्रम्प ने यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोडिमिर जेलेंस्की की आलोचना की और उन पर संयुक्त राज्य अमेरिका को एक ऐसे युद्ध में अरबों डॉलर निवेश करने के लिए राजी करने का आरोप लगाया, जिसे वे जीत नहीं सकते। उन्होंने दावा किया कि अमेरिका ने यूरोप की तुलना में काफी अधिक खर्च किया है, लेकिन कोई वित्तीय लाभ नहीं हुआ है।

**ट्रंप ने जारी किया पूरा बयान**

हमें भारत सरकार को बताना होगा, क्योंकि जब हम सुनते हैं कि रूस ने हमारे देश में लगभग दो हजार डॉलर खर्च किए हैं, तो यह एक बड़ी बात है। उन्होंने दो हजार डॉलर के लिए कुछ इंटरनेट विज्ञापन लिए। यह पूरी तरह से एक बड़ी सफलता है।